अंक 8 वर्ष 2022

ऋतुरंग

भारत सरकार
भारत मौसम विज्ञान विभाग
पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय, प्रादेशिक मौसम केंद्र,
हवाईअड्डा, नागपुर 440005
www.imdnagpur.gov.in

स्वतंत्रता दिवस - २०२१

ऋतुरंग

(प्रादेशिक मौसम केन्द्र,नागपुर की गृहपत्रिका)

प्रमुख संरक्षक

एम. एल. साहू

उपमहानिदेशक तथा वैज्ञानिक – एफ

प्रादेशिक मौसम केन्द्र, नागपुर

संरक्षक

जी. एस. नगराले

वैज्ञानिक - ई, प्रा.मौ.कें.नागपुर

संपादक

श्रीमती शांता उन्नीकृष्णन, वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी

सहयोगी सदस्य

1. श्री पी. एस. चिंचोले, मौ.वि.-ए
2. श्रीमती रीना वी. सुरपाम, मौ.वि.-ए
3. श्री.एम.आर.कान्होलकर, वै. स.
4. सुश्री रिंकू हाडके, वै. स.
5. श्रीमती सोनम, वै. स.
6. सुश्री ज्योति मीणा, वै. स.

छायाचित्र आभार: श्री.एस.ए.पवार, सहायक; श्री चैनसिंह वर्मा,वै. स.

पत्र व्यवहार का पता

संपादक- ऋतुरंग, प्रादेशिक मौसम केंद्र, हवाई अड्डा, नागपुर – 440005

(इस अंक में प्रकाशित रचनाओं से संपादक मंडल सहमत हो अनिवार्य नहीं

एवं रचनाओं की मौलिकता के लिए रचनाकार स्वयं जिम्मेदार हैं।)

अनुक्रमणिका

अ.क्र.	लेखकविता /रिपोर्ट /	पृ.क्र.
1	**राजभाषा हिंदी की देश में वर्तमान स्थिति** -श्री विशाल चौधरी, वै.स., प्रा .मौ .कें .नागपुर	9
2	**आज़ादी के पचहत्तर साल का आकलन** -सुश्री रूबी वर्मा, वै.स., प्रा .मौ .कें .नागपुर	11
3	**संतो का परिचय** -जी.एम. शहारे, मौ.वि.ए , प्रा .मौ .कें .नागपुर	13
4	**आज़ादी का अमृत महोत्सव** -जी.एम. शहारे, मौ.वि.ए , प्रा .मौ .कें .नागपुर	20
5	**महाकवि कालीदास की मेघदूत का मौसमी विवेचन** -श्री ए.एम.भट्ट , मौ.वि.ए , मौ.का.अंबिकापुर	22
6	**पचहतर साल की आज़ादी यात्रा** -सोनिका नेगी, वै.स., प्रा .मौ .कें .नागपुर	34
7	**हिंदी हमारी पहचान हमारा गर्व** -श्री निखिल वर्मा, वै.स ., मौ.का.पेंड्रा रोड	37
8	**नारी** -सोनम, वै.स., प्रा.मौ .कें . नागपुर	38
9	**दृढ़ संकल्प** -श्रेष्ठ गौतम, वै.स., प्रा .मौ .कें .नागपुर	40
10	**अग्निपथ** -श्री निखिल वर्मा, वै.स ., मौ.का.पेंड्रा रोड	42
11	**मंत्रीजी का आगमन** -श्री गुहा नियोगी, सेवानिवृत्त सहायक मौ.वि ., मौ.का.जबलपुर	43
12	**आज़ादी से अब तक का सफ़र** -श्री अमित मेहरा, वै.स., प्रा .मौ .कें .नागपुर	45
13	**आज़ादी के बाद मौसम विभाग का देश को योगदान** -सुश्री सपना मीणा, वै.स., प्रा .मौ .कें .नागपुर	49
14	**प्रयोजन मूलक हिंदी** -शांता उन्नीकृष्णन, वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी, प्रा .मौ .कें .नागपुर	51
15	**उष्ण लहर के लिए क्या करें और क्या न करें?** -सुश्री रिंकु हाडके, वै.स., प्रा .मौ .कें .नागपुर	54
16	**हिंदी की पहचान** -श्रीमती नीलिमा निनावे, मौ.वि.बी, प्रा .मौ .कें .नागपुर	58
17	**मौसम सेवाओं की उपयोगिताएं** -श्रीमती लता श्रीधर, मौ.वि.ए , प्रा .मौ .कें .नागपुर	60
18	**वर्षा ऋतु - तथ्य** - रीना सुरपाम,मौसम विज्ञानी – ए, प्रा .मौ .कें .नागपुर	68
19	**उपलब्धियां**	73
20	**प्रा. मौ. कें., नागपुर में हिंदी पखवाड़ा**	77
21	**मौसम केंद्र भोपाल में हिंदी पखवाड़ा**	85
22	**मौसम केंद्र रायपुर में हिंदी पखवाड़ा**	87
23	**मौसम कार्यालय सागर में हिंदी पखवाड़ा**	91
24	**मौसम कार्यालय जबलपुर में हिंदी पखवाड़ा**	92
25	**मौसम कार्यालय अम्बिकापुर में हिंदी पखवाड़ा**	93
26	**मौसम कार्यालय ग्वालियर में हिंदी पखवाड़ा**	94
27	**मौसम कार्यालय इंदौर में हिंदी पखवाड़ा**	97

28	विशेष ख़बर	98

महानिदेशक
भारत मौसम विज्ञान विभाग
मौसम भवन, लोदी रोड
दिल्ली- 110003

संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि प्रादेशिक मौसम केंद्र नागपुर द्वारा गृह पत्रिका ऋतुरंग के आठवें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। कार्यालय में राजभाषा हिंदी की विकास यात्रा में “ऋतुरंग पत्रिका” एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। साथ ही राजभाषा के प्रचार-प्रसार में भी अपनी सक्रिय भूमिका अदा करती रहेगी।

मैं सभी रचनाकारों को हार्दिक बधाई एवं धन्यवाद देता हूँ जिन्होंने राजभाषा हिंदी के प्रति अपने प्रेम का परिचय देते हुए अपनी रचनाओं को पत्रिका के लिए समर्पित किया। ऋतुरंग पत्रिका के आगामी अंकों को और अधिक बहुउपयोगी एवं रुचिकर बनाने में सफल हो, इसी आशा और विश्वास के साथ ....

मृत्युंजय महापात्र

(डॉ. मृत्युंजय महापात्र)

उपमहानिदेशक
प्रादेशिक मौसम केंद्र
नागपुर-440005

उपमहानिदेशक महोदय की कलम से

गृह पत्रिका के आठवें संस्करण को आप सबके समक्ष रखते हुए बेहद आनंद हो रहा है। मैं नागपुर कार्यालय के इस सफल प्रयासरूपी "ऋतुरंग पत्रिका" में अपना योगदान देने वाले सभी लेखकों और कार्यालयों के सभी सदस्यों को उनके सहयोग के लिए साधुवाद देता हूँ। उसी तरह, पत्रिका के संपादक मंडल में सक्रिय सदस्यों की प्रतिभाओं को उनकी संपादन कुशलता और अथक परिश्रम के लिए भी धन्यवाद देता हूँ। "ऋतुरंग पत्रिका" सभी पाठकों के अध्ययन निष्ठा का प्रतिबिंब है।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए हार्दिक शुभकामनाएं!

(एम.एल.साहू)

वैज्ञानिक-ई
प्रादेशिक मौसम केंद्र
नागपुर-440005

संदेश

कार्यालय की गृह पत्रिका वितरण के आठवें अंक के प्रकाशन पर मुझे अपार प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ यह पत्रिका कार्यालय के रचनात्मक प्रतिभा के विकास का एक सशक्त माध्यम है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि भविष्य में भी गृह पत्रिका “ऋतुरंग”, राजभाषा के प्रचार-प्रसार में अपनी सक्रिय भूमिका अदा करती रहेगी।

पत्रिका के उत्तरोत्तर विकास की कामना के साथ हार्दिक शुभकामनाएं!

(जी.एस.नगराले)

उपनिदेशक (राजभाषा)
भारत मौसम विज्ञान विभाग
मौसम भवन, लोदी रोड
दिल्ली- 110003

संदेश

यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है की प्रादेशिक मौसम केंद्र, नागपुर हिंदी गृह पत्रिका “ऋतुरंग” का आठवां अंक प्रकाशित कर रहा है।

हमारी विभागीय हिंदी गृह पत्रिकाएं राजभाषा हिंदी के विभिन्न आयामों को कारगर ढंग से कार्यान्वित कराने की प्रक्रिया में हिंदी के प्रचार प्रसार में अधिकारियों और कर्मचारियों का मार्ग प्रशस्त करती रही हैं।

मुझे विश्वास है की “ऋतुरंग” का यह अंक भी अपनी परिपाटी को आगे बढ़ाने में सार्थक सिद्ध होगा। मैं सम्पादक मंडल और सभी रचनाकारों को हिंदी के प्रति उनकी प्रतिबद्धता के लिए साधुवाद देती हूँ और पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ देती हूँ।

(सरिता जोशी)

मौसम विज्ञानी - ए (प्र.)
एवं राजभाषा संपर्क अधिकारी
प्रादेशिक मौसम केंद्र
नागपुर- 440005

संदेश

पत्रिका के इस आठवें संस्करण के प्रकाशन पर मुझे अत्यंत गौरव की अनुभूति हो रही है। यह बड़े गर्व की बात है कि कार्यालय के सभी कार्मिक राजभाषा हिंदी के अनुपालन में सक्रिय है। उसी तरह प्रादेशिक मौसम केंद्र नागपुर और उप कार्यालयों द्वारा प्रस्तुत रचनाओं से सुसज्जित इस गुलदस्ते की भाषा सुरभि संपूर्ण मौसम परिवार को हिंदी के प्रति उत्साहित करेगी। मैं इस अंक को संवारने वाले रचनाकारों एवं विभिन्न तरह से इसे सजाने वाले संपादक मंडल को बधाई एवं शुभकामनाओं के साथ आभार व्यक्त करता हूँ। इसी प्रकार आपके सहयोग की अपेक्षाओं के साथ आपके सुझावों का भी स्वागत करता हूँ।

शुभकामनाओं के साथ आगामी अंक की प्रतीक्षा में ...

(पी.एस.चिंचोले)

भाषा को संस्कृति का प्रवेश द्वार माना जाता है, इसका मुख्य कारण यह है कि किसी भी समाज की संस्कृति को उसकी भाषा के माध्यम से ही जाना जाता है। सहजता और सरलता भाषा का एक गुण है, जो उसे प्रवाहमान बनाता है। जहाँ प्रवाह है, वहीं ताजगी है। इसलिए कबीरदास जी ने कहा है "भाषा बहता नीर" तो उसका तात्पर्य यही है कि भाषा में सहज, सरल और जन सामान्य द्वारा प्रयोग और समझ में आने वाले शब्दों के प्रयोग करने से भाषा का निरंतर विकास होता है।

भाषा अभिव्यक्ति का माध्यम है। इसलिए भाषा और समाज का एक दूसरे से अटूट संबंध है। विकास की दौड़ में जो भाषा अपने बोलने वालों को बेहतर जीवन सुलभ नहीं करा सकती, उस भाषा को उसका बोलता समाज छोड़ देता है। भाषाएँ हमारी आकांक्षा और प्रगति को कदम-दर-कदम साकार करने में सक्षम रहीं हैं। जानाकांक्षाओं के उभार के दौर में शासन के कार्यकलाप से लोग वाकिफ हों, इसके लिए जरूरी है कि प्रशासन और आमजन की भाषा एक हो। भारत में यह कार्य सरल हिन्दी के माध्यम से ही हो सकता है।

संक्षेप में हम यह कह सकते है कि राजभाषा हिन्दी के सफल कार्यान्वयन के लिए यह अनिवार्य है कि शब्दकोषीय शब्दावली की परिधि से बाहर निकलकर सरकारी कामकाज के सामान्य व्यवहार में प्रयुक्त होने वाले शब्दों के अधिक प्रयोग को बढ़ावा दिया जाए। हिन्दी हमारे अस्तित्व व अस्मिता की पहचान है। यह हमारे जनमानस की हृदभाषा है। राजभाषा अनुभाग का कार्य दिये से दिया जलाना और मार्गदर्शन करना है।

आशा है कि आपको गृह-पत्रिका ऋतुरंग का यह अंक पसंद आएगा। ऋतुरंग के आगामी अंकों को और बेहतर बनाने के लिए कृत संकल्प है।

आपके सुझावों और मनोभावों का हार्दिक स्वागत है।

शांता

(शांता उन्नीकृष्णन)

राजभाषा हिंदी की देश में वर्तमान स्थिति

श्री विशाल चौधरी, वै.स., प्रा. मौ. कें. नागपुर

प्रस्तावना:

हिंदी भाषा को देश की राष्ट्रभाषा बनाने के प्रयास देश की आज़ादी से पूर्व से ही किए गए हैं, किन्तु हमारी देश की संस्कृति में विविधता के कारण इसमें कई बाधाएं आती हैं। इसके इतर आज़ादी के बाद हिंदी भाषा को भारत की राजभाषा बनाने में भारत के कानून निर्माताओं (सांसदों) ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। भारतीय राजभाषा कानून 1963 को पारित कर हिंदी भाषा को पूरे देश में स्वेच्छा से राज्यों द्वारा प्रयोग करने का यह कानून सराहनीय था।

हिंदी की वर्तमान स्थिति :

हिंदी भाषा हमारे देश के विभिन्न भागों में अनेक बोलियों के रूप में बोली जाती है जिनमे से कई बोलियों को भाषा का दर्जा दिलाने के लिए क्षेत्रीय नेता प्रयास करते रहते हैं। मैथिली भाषा इसका नवीन उदाहरण है जिसे भारत सरकार ने हाल ही में भाषा का दर्जा प्रदान किया है। इसी प्रकार राजस्थानी बोली को भी भाषा का दर्जा दिए जाने की मांग की जा रही है। यदि ऐसे ही हिंदी भाषा की विभिन्न बोलियों को भाषा का दर्जा दिया जाएगा तो हिंदी भाषा का महत्व समाप्त हो जाएगा। वर्तमान में शिक्षा का स्तर ही अंग्रेजी के ज्ञान से मापे जाने के कारण भारतीय लोगों में हिंदी भाषा के प्रति अरुचि बढ़ी है जिससे हिंदी भाषा तथा इसकी सांस्कृतिक विरासत के लिए खतरा उत्पन्न हो गया है। अधिकतर पठन- पाठन की सामग्री एवं पुस्तकें अंग्रेजी भाषा में उच्च कोटि की प्राप्त होती हैं तथा समान विषय में हिंदी भाषा में पुस्तकों की संख्या नगण्य है। इस बात की पुष्टि किसी भी तकनीकी एवं गैर-तकनीकी पुस्तकालय में जाकर भी की जा सकती है। न तो हिंदी भाषा में लेखक को पाठक मिलते हैं और न ही पाठक को लेखक। इस समस्या को भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, वाराणसी ने समय रहते पहचान लिया है तथा यह संस्थान प्रौद्योगिकी एवं अभियंत्रण की उच्च शिक्षा हिंदी माध्यम से भी प्रदान करने जा रहा है, यह कदम सराहनीय है। इसी क्रम में हिंदी भाषी व्यक्तियों को देश के गैर-हिंदी भाषी क्षेत्रों में कठिनाई का सामना करना पड़ता था, जिसे समय-समय पर सरकारों ने पहचाना है एवं उसका निवारण करने की कोशिश की है। जैसे गैर-हिंदी भाषी राज्यों में सरकारी कार्यालयों में

राजभाषा अधिकारी की नियुक्ति, सरकारी गजट एवं आदेशों का हिंदी भाषा में आवश्यक अनुवाद आदि। उपर्युक्त क्रम में हमारे वर्तमान प्रधानमंत्री द्वारा 'एक देश-एक भाषा' का विचार हिंदी भाषा के विकास में एक मील का पत्थर साबित होगा। हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार एवं इसके सांस्कृतिक महत्व को जन-जन तक पहुंचाने की जरुरत है, यह भाषा हमारे अस्तित्व का इतिहास संजोए हुए है। हमें इसे क्षय से बचाने के हर संभव प्रयास करने चाहिए। इसके लिए गैर-सरकारी संस्थाएं (एनजीओ) को भी सामने आना होगा तथा हिंदी के विकास में योगदान देना होगा। हम सभी को ज्ञात है कि भारत एक स्वतंत्र लोकतांत्रिक गणराज्य है जिसमें नागरिकों के हितों को सुरक्षित रखने हेतु कुछ मूल अधिकार प्रदान किए गए हैं। इनका प्रयोग हमें सदैव देश एवं स्वयं को अग्रसर करने के लिए करना चाहिए उसे (देश को) पीछे धकेलने के लिए नहीं। हमें अपनी संस्कृति पर गर्व करना चाहिए शर्म नहीं।

निष्कर्ष :

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, वाराणसी एवं 'एक देश-एक भाषा' जैसे कई और योजनाएं एवं विचार हिंदी भाषा के विकास के लिए आवश्यक हैं। ऐसी संभावनाओं की तलाश सरकार एवं नागरिकों को करनी चाहिए किन्तु नागरिकों के अधिकारों का हनन नहीं किया जाना चाहिए। अपितु हम सभी को स्वयं की चेतना का प्रयोग करके अपनी राजभाषा के विकास में हर संभव प्रयास करना चाहिए।

**

आज़ादी के पचहत्तर साल का आकलन

सुश्री रूबी वर्मा, वै.स., प्रा. मौ. कें. नागपुर

200 वर्षों के संघर्ष के बाद ब्रिटिश उपनिवेशवाद के चंगुल से आजाद होकर सन् 1947 में भारत में एक नए युग की शुरुआत की। अब भारत की बागडोर भारत के नेताओं के हाथ में दे दी गई थी। आज़ादी भारत के लिए वरदान से कम नहीं थी, परंतु देश को इस आज़ादी की कीमत भी चुकानी पड़ी थी। आज़ादी के संघर्ष का अनुभव बहुत ही कड़वा था साथ में विभाजन का दृश्य उससे भी ज्यादा भयावह था।

आज़ादी के पश्चात 560 रियासतों ने भारत संघ के अधीन आना स्वीकार कर लिया। इस प्रक्रिया का संचालन सरदार पटेल ने किया। आश्चर्यजनक बात यह है कि यह प्रक्रिया पूर्ण रूप से शांतिपूर्वक संपन्न हुई। 1950 में भारत विश्व पटल पर सबसे बड़े लोकतांत्रिक गणराज्य के रूप में उभरा, जिसने अपने प्रत्येक वयस्क नागरिक को समान मतदान करने का अधिकार दिया। आज़ादी के समय देश की कुल जनसंख्या मात्र 30 करोड़ थी परंतु उत्पादन की भारी कमी की वजह से इतने लोगों के पेट भरने के लिए भी पर्याप्त अनाज नहीं था।

देश को प्रगति के पथ पर आगे बढ़ाने हेतु सन 1951 में प्रथम पंचवर्षीय योजना का आरंभ किया गया। जिसके परिणामस्वरुप भारत में हरित क्रांति का आरंभ हुआ जिससे देश का उत्पादन आज चार गुना बढ़ चुका है। आज देश अन्न उत्पादन में आत्मनिर्भर बन चुका है। विश्व में दाल के उत्पादन में भारत प्रथम स्थान पर, चीनी उत्पादन में दूसरे स्थान पर तथा कपास उत्पादन में तृतीय स्थान पर है।

1950 में तकनीक एवं प्रौद्योगिकी क्षेत्र में शून्य आत्मनिर्भरता के बावजूद भारत की सैन्य शक्ति आज विश्व में चौथे स्थान पर है। भारत ने 1962 एवं 1971 के दो युद्ध अपने खुद के दम-खम पर लड़े। 1969 में भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) का गठन किया गया। भारत का प्रथम उपग्रह 'आर्यभट्ट' 1975 में तैयार किया गया। "मंगलयान" का प्रक्षेपण करके भारत विश्व में मंगल पर उपग्रह भेजने वाला चौथा राष्ट्र बन चुका है। 2017 में 104 उपग्रह को एक साथ एक प्रक्षेपित करके भारत ने इतिहास रच दिया।

पिछले सात दशकों में देश के बाहर के साथ-साथ देश के मानचित्र में भी कई बदलाव आए हैं। देश की प्रति व्यक्ति सालाना आय सन् 1947 में रु. 247/- थी, 2020 में यह बढ़कर रु.1.35 लाख हो गई है। परंतु देश की कुल संपत्ति का 73% भाग देश की कुल जनसंख्या के 1% लोगों के पास है। ऐसी आर्थिक विषमता के चलते 60% लोगों के लिए दो वक्त का खाना एक सपने जैसा है। विश्व बैंक के अनुसार प्रति व्यक्ति प्रतिदिन आय 1 डॉलर के नीचे व्यक्ति को निर्धन

की श्रेणी में माना जाता है, इस परिभाषा के अनुसार भारत की 65% जनसंख्या गरीबी रेखा के नीचे है। 1947 में औसत आयु 37 वर्ष थी, पिछले 70 वर्षों में इसमें अच्छा सुधार हुआ है, अब यह 69 वर्ष है। जन्म दर की बातें करें तो, 1947 एक महिला लगभग छ: बच्चों (5.7) को जन्म देती थी, कालांतर में यह आंकड़ा घटकर आज दो बच्चे (2.2) रह गया है जो एक संतोषजनक बात है।

1947 में प्रति वर्ग किलोमीटर में 114 लोग रहते थे जो आज की तारीख में 410 पर पहुंच गया है। धरती पर बढ़ने वाले इस बोझ की सजा पर्यावरण को चुकानी पड़ रही है। वज्रपात, भूस्खलन, बाढ़ सूखा एवं बादल फटने की घटनाएं तेजी से बढ़ रही हैं।

सरकार के निरंतर प्रयास से गाँवो में बिजली पहुंचाने का लक्ष्य तेजी से पूरा हो रहा है। 1947 में 3000 गांव में बिजली थी, जो आज बढ़कर 5,94,500 गाँवों तक पहुंच गई है। शहरी जनसंख्या का योगदान कुल जनसंख्या में 1947 मे 17% था, जो आज बढ़कर 37% हो गया है। इससे साफ पता चलता है लोगों का शहरों की तरफ पलायन हो रहा है। सरकार के अथक प्रयासों के बाद भी यह पलायन नहीं रुक रहा है। किसान आज भी आत्महत्या क्यों कर रहे हैं? यह जवाब किसी सरकार के पास नहीं है।

लोगों ने पढ़ाई लिखाई के महत्व को समझा है, 1947 मे 18% लोग साक्षर थे, जो आंकड़ा आज 69% पर पहुँच गया है। देश के लोग विदेशों में भी अच्छे पदों पर कार्य कर रहे हैं। 15 देशों में 200 से ज्यादा लोग एवं 60 बहुराष्ट्रीय कंपनियों का नेतृत्व आज भारतीय कर रहे हैं। भारत में लगभग हर क्षेत्र में संतोषजनक प्रगति की है, परंतु बेरोजगारी की समस्या पिछले कुछ वर्षों में बढ़ी है। 2016-17 से जहाँ रोजगार के अवसर घट रहे हैं वही बेरोजगारी की समस्या तेजी से बढ़ रही है।

यदि हम भारत की छवि को गौर से देखें तो एक तरफ तो यह छवि उजली है, चमकदार दिखती है, परंतु कहीं कहीं यह छवि धुंधली भी दिखाई देती है। जहां लोकतंत्र एवं लोकतांत्रिक संस्थाएँ एक ओर मजबूत हुई हैं, वहीं सत्ताधारी और रसूखदार विषमता, गरीबी, भ्रष्टाचार आदि विषयों को उठाने के लिए आए दिन आंदोलन कर रहे हैं। कुछ मीडिया भी धन के प्रभाव पर कार्य कर रही है। इस समय युवा एवं मध्यम वर्ष में एक कुंठा की भावना भी भर रही है। सरकार को अभी सभी की समस्याओं को महत्व देकर नयी कल्याणकारी योजनाएँ बनानी चाहिए जिससे देश के हर वर्ग का संपूर्ण विकास हो सके। सर्वांगीण विकास का सपना तभी सार्थक होगा।

संतो का परिचय

जी.एम.शहारे, मौसम विज्ञानी-ए,
प्रा. मौ. कें. नागपुर

बचपन से आप सुनते आए होंगे कि जब-जब धरती पर अत्याचार बढ़ा, तब-तब भगवान ने किसी ना किसी रूप में जन्म लिया और बुराइयों का अंत किया। ठीक इसी तरह कई संत-महात्माओं ने भी समय-समय पर जन्म लिया और अपने चमत्कार से समाज को सही मार्ग दिखाया है। फिर चाहे वह संत एकनाथ हों, या फिर संत तुकाराम। परंतु आज के इस आधुनिक तथा विज्ञान के युग मे लोग उन साधु- संतो को भूलने लगे हैं। समाज का उत्थान, सच्चाई का मार्ग तथा आपस मे प्यार एवं भाईचारा बनाकर संगठित रहने की सीख देने वाले संत-महात्माओं के परिचय से आज के युवा बिल्कुल परे हैं। आज का युवा अभिनेता और नेताओं को भली-भांति याद रखता है इसलिए आज आवश्यकता इस बात की है कि उन महान साधु-संतों के परिचय को युवा पीढ़ी के सामने रखें जिन्होने हमारे भारत देश मे जन्म लिया।

तो आइए चर्चा करते हैं कुछ ऐसे ही संतों की, जिन्होंने अपने चमत्कारों और उससे ज्यादा अपने ज्ञान और परमार्थ से लोगों का कल्याण किया:

1. संत नामदेव (1267 में जन्म): संत नामदेवजी का जन्म कबीर से 130 वर्ष पूर्व महाराष्ट्र के जिला सातारा के नरसी बामनी गांव में हुआ था। गुरुग्रंथ और कबीर के भजनों में इनके नाम का उल्लेख मिलता है। ये महाराष्ट्र के पहुंचे हुए संत हैं। उनके गुरु विसोबा खेचर थे। गुरु विसोबा ने ब्रह्मविद्या को लोक सुलभ बनाकर उसका महाराष्ट्र में प्रचार किया तो संत नामदेवजी ने महाराष्ट्र से लेकर पंजाब तक उत्तर भारत में 'हरिनाम' की वर्षा की। उन्होंने मराठी के साथ हिन्दी में भी अनेक रचनाएं की।

2. संत एकनाथ (1533 ई.-1599 ई.): महाराष्ट्र के संतों में नामदेव के पश्चात दूसरा नाम एकनाथ का ही आता है। इनका जन्म पैठण में हुआ था। ये वर्ण से ब्राह्मण जाति के थे। इन्होंने जाति प्रथा के विरुद्ध आवाज उठाई तथा अपने अनुपम साहस के कारण कष्ट भी सहे। इनकी प्रसिद्धि भागवत पुराण के मराठी कविता में अनुवाद के कारण हुई। दार्शनिक दृष्टि से ये अद्वैतवादी थे। संत एकनाथ महाराष्ट्र के प्रसिद्ध संतो में से एक माने जाते हैं। महाराष्ट्र में इनके

भक्तों की संख्या बहुत अधिक है। समाज के लिए उनकी सक्रियता ने उन्हें उस वक्त के सन्यासियों का आदर्श बना दिया था। दूर-दूर से लोग उनसे मिलने आया करते थे।

3. संत तुकाराम (1577 ई.-1650 ई.): महाराष्ट्र के संतों और भक्ति आंदोलन के कवियों में प्रमुख संत तुकाराम का जन्म महाराष्ट्र राज्य के पुणे जिले के अंतर्गत 'देहू' नामक ग्राम में 1577 में हुआ था। इनके पिता का नाम 'बोल्होबा' और माता का नाम 'कनकाई' था। संत तुकाराम का जीवन

संत नामदेव

संत एकनाथ

संत तुकाराम

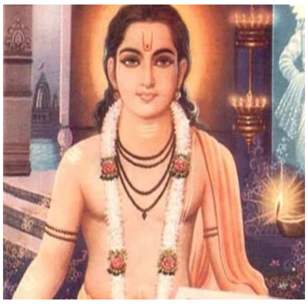
संत ज्ञानेश्वर

कठिनाइयों से भरा रहा। माना जाता है कि उच्च वर्ग के लोगों ने हमेशा उन्हें नीचा दिखाने की कोशिश की। एक बार एक ब्राह्मण ने उनको उनकी सभी पोथियों को नदी में बहाने के लिए कहा तो उन्होंने बिना सोचे सारी पोथियां नदी में डाल दी थीं। बाद में उन्हें अपनी इस करनी पर पश्चाताप हुआ तो वे विट्ठल मंदिर के पास जाकर रोने लगे। वे लगातार तेरह दिन बिना कुछ खाये पिए वहीं पड़े रहे। उनके इस तप को देखकर चौदहवें दिन भगवान को स्वयं प्रकट होना पड़ा। भगवान ने उन्हें आशीर्वाद देते हुए उनकी पोथियां उन्हें सौपीं। आगे चलकर यही तुकाराम संत तुकाराम के नाम से प्रसिद्ध हुए और समाज के कल्याण में लग गए।

4. संत ज्ञानेश्वर (1275 ई.-1296ई.) : संत ज्ञानेश्वर का जन्म महाराष्ट्र के अहमदनगर जिले में पैठण के पास आपेगांव में भाद्रपद के कृष्ण पक्ष की अष्टमी को हुआ था। ज्ञानेश्वर ने भगवद् गीता पर मराठी भाषा में एक 'ज्ञानेश्वरी' नामक 10,000 पद्यों का ग्रंथ लिखा है। महाराष्ट्र की भूमि पर नाथ संप्रदाय, दत्त संप्रदाय, महानुभव संप्रदाय, समर्थ संप्रदाय आदि कई पंथ-संप्रदायों का उदय एवं विस्तार हुआ किन्तु भागवत भक्ति संप्रदाय यानी संत ज्ञानेश्वर जी प्रणीत "वारकरी भक्ति संप्रदाय" इस भूमि पर उदित हुआ सबसे विशाल संप्रदाय रहा है। संत ज्ञानेश्वर की गिनती महाराष्ट्र के उन धार्मिक संतो में होती है, जिन्होंने समस्त मानव जाति को ईर्ष्या, द्वेष और

प्रतिरोध से दूर रहने की शिक्षा दी। संत ज्ञानेश्वर ने 15 वर्ष की छोटी सी आयु में ही गीता की मराठी में ज्ञानेश्वरी नामक भाष्य की रचना की। इन्होंने पूरे महाराष्ट्र में घूम-घूम कर लोगों को भक्ति का ज्ञान दिया।

5. समर्थ रामदास स्वामी (1608 ई.-1681ई.): समर्थ रामदास का जन्म महाराष्ट्र के औरंगाबाद जिले के जांब नामक स्थान पर 1608 में हुआ। इनका नाम नारायण सूर्याजीपंत कुलकर्णी था। उनके पिता का नाम सूर्याजी पंत और माता का नाम राणुबाई था। वे राम और हनुमान के भक्त और वीर शिवाजी के गुरु थे। उन्होंने 1681 में 73 वर्ष की अवस्था में महाराष्ट्र में सज्जनगढ़ नामक स्थान पर समाधि ली। अल्पायु में ही उनके पिता गुजर गए थे और तब से उनके दिमाग में वैराग्य घूमने लगा था। हालांकि, मां की जिद के कारण उन्हें शादी के लिए तैयार होना पड़ा पर मौके पर वे मंडप तक नहीं पहुंचे और वैराग्य ले लिया।

6. संत जलाराम: बापा के नाम से प्रसिद्ध जलाराम गुजरात के प्रसिद्ध संतो में से एक थे। उनका जन्म गुजरात के राजकोट जिले के वीरपुर गांव में हुआ था। जलाराम की मां एक धार्मिक महिला थीं, जो भगवान की भक्ति के साथ- साथ साधु संतो का बड़ा आदर करती थीं। उनके इस कार्य से प्रसन्न संत रघुदास जी ने उन्हें आशीर्वाद दिया कि उनका दूसरा पुत्र ईश्वर भक्ति और सेवा के लिए ही जाना जाएगा। आगे चलकर जलाराम बापा गुजरात के बहुत प्रसिद्ध संत हुए।

7. रामकृष्ण परमहंस: रामकृष्ण परम हंस भारत के महान संत थे। उन्होने हमेशा सभी धर्मों की एकता पर जोर दिया। बचपन से ही उन्हे भगवान के प्रति बड़ी श्रद्धा थी। उन्हे विश्वास था कि भगवान उन्हे एक दिन जरूर दर्शन देंगे। ईश्वर को प्राप्त करने के लिए उन्होंने कठिन साधना और भक्ति का जीवन बिताया जिसके फलस्वररूप माता काली ने उन्हें साक्षात् दर्शन दिए थे। कहा जाता है कि उनकी ईश्वर भक्ति से उनके विरोधी हमेशा जलते थे। उन्हें हमेशा नीचा दिखाने की सोचते थे। एक बार कुछ विरोधियों ने 10-15 वैश्याओं के साथ रामकृष्ण को एक कमरे में बंद कर दिया। रामकृष्ण उन सभी को माँ आनंदमयी की जय कहकर समाधि लगाकर बैठ गए। चमत्कार ऐसे हुआ कि सभी वैश्याएं भक्ति भाव से प्रेरित होकर अपने इस कार्य से बहुत शर्मशार हो गईं और रामकृष्ण से माफी मांगी। इसके अतिरिक्त, रामकृष्ण परमहंस की कृपा से माँ काली और स्वामी विवेकानंद का साक्षात्कार होना समूचे विश्व को पता ही है।

8. गुरु नानक देव: गुरु नानक देव सिखों के आदि गुरु थे। उनके अनुयायी उन्हें गुरुनानक, बाबा

समर्थ रामदास स्वामी

संत जलाराम

रामकृष्ण परमहंस

गुरु नानक देव

नानक और नानक शाह के नामों से बुलाते हैं। कहा जाता है कि बचपन से ही वे विचित्र थे। नेत्र बंद करके आत्म चिंतन में मग्न हो जाते थे। उनके इस हाव भाव को देखकर उनके पिता बड़े चिंतित रहते थे। आगे चलकर गुरु नानक देव बहुत प्रसिद्ध संत हुए। एक बार गुरु नानक देव जी मक्का गए थे। काफी थक जाने के बाद वे मक्का में मुस्लिमों के प्रसिद्ध पूज्य स्थान काबा में रुक गए। रात को सोते समय उनका पैर काबा के तरफ था। यह देख वहाँ का एक मौलवी गुरु नानक के ऊपर गुस्सा हो गया। उसने उनके पैर को घसीट कर दूसरी तरफ कर दिया। इसके बाद जो हुआ वह हैरान कर देने वाला था। हुआ यह कि अब जिस तरफ गुरु नानक के पैर होते, काबा उसी तरफ नजर आने लगता। इसे चमत्कार माना गया और लोग गुरु नानक जी के चरणों पर गिर पड़े।

9. रामदेव : रामदेव का जन्म पश्चिमी राजस्थान के पोकरण नाम के प्रसिद्ध नगर के पास रुणिचा नामक स्थान में हुआ था। उन्होंने समाज में फैले अत्याचार भेदभाव और छुआ-छूत का विरोध किया। बाबा रामदेव को हिन्दू-मुस्लिम एकता का भी प्रतीक माना जाता है। आज राजस्थान में इन्हें लोग भगवान से कम नहीं मानते हैं।

10. भक्त पुंडलिक: छठी सदी में संत पुंडलिक हुए जो माता-पिता के परम भक्त थे। उनके इष्टदेव श्रीकृष्ण थे। उनकी इस भक्ति से प्रसन्न होकर एक दिन श्रीकृष्ण रुक्मणी के साथ प्रकट हुए। प्रभु ने उन्हें स्नेह से पुकार कर कहा-"पुंडलिक, हम तुम्हारा आतिथ्य ग्रहण करने आए हैं।" पुंडलिक ने उस तरफ देखा और कहा कि मेरे पिताजी शयन कर रहे हैं, इसलिए आप इस ईंट पर खड़े होकर प्रतीक्षा कीजिए और वे पुन: पैर दबाने में लीन हो गए। भगवान ने अपने भक्त की आज्ञा का पालन किया और कमर पर दोनों हाथ धरकर और पैरों को जोड़कर ईंट पर खड़े हो गए। ईंट पर

खड़े होने के कारण श्री विट्ठल के विग्रह रूप में भगवान की लोकप्रियता हो चली। यही स्थान पुंडलिकपुर या अपभ्रंश रूप में पंढरपुर कहलाया, जो महाराष्ट्र का सबसे प्रसिद्ध तीर्थ है। पुंडलिक को वारकरी संप्रदाय का ऐतिहासिक संस्थापक भी माना जाता है, जो भगवान विट्ठल की पूजा करते हैं।

11. संत गोरोबा (1267ई.-1317ई.): संत गोरा कुम्हार को संत गोरोबा भी कहा जाता है। महाराष्ट्र के उस्मानाबाद जिले के अंतर्गत धाराशिव नामक गांव है। इस गांव का मूल नाम त्रयीदशा है परंतु वर्तमान में इसका नाम तेरेढोकी है। यहीं पर संत गोरा कुम्हार का जन्म हुआ। वे निष्ठावान वारकरी संत थे। उनकी गुरु परंपरा श्री ज्ञानदेव और नामदेव की तरह ही नाथपंथीय थी।

12. संत जनाबाई: जनाबाई का जन्म महाराष्ट्र के मराठवाडा प्रदेश में परभणी मंडल के गांव गंगाखेड में दमा और उनकी पत्नी करुंड नाम के विठ्ठलभक्त के घर में हुआ। उनके पिता ने पत्नी के निधन के उपरांत जनाबाई को पंढरपुर के विठ्ठलभक्त दामाशेटी के हाथों में सौंप दिया और स्वयं भी संसार से विदा ली। इस प्रकार 6-7 वर्ष की आयु में ही जनाबाई अनाथ होकर दामाशेटी के घर में रहने लगीं। उनके घर में आने के उपरांत दामाशेटी को पुत्ररत्न प्राप्त हुआ, वही प्रसिद्ध संत नामदेव महाराज थे। आजीवन जनाबाई ने उन्हीं की सेवा की। संत नामदेव महाराज के सत्संग से ही जनाबाई को भी विठ्ठल भक्ति की आस लगी। श्री संत ज्ञानदेव-विसोबा खेचर-संत नामदेव-संत जनाबाई यह उनकी गुरुपरंपरा है। जनाबाई के नाम पर लगभग 350 'अभंग' सकल संत गाथा में मुद्रित है। इसके अलावा भी उनके कई ग्रंथ हैं।

रामदेव

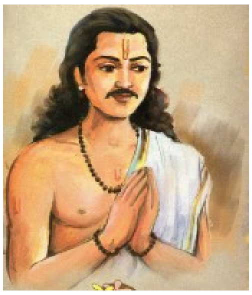
भक्त पुंडलिक

संत गोरोबा

संत जनाबाई

13. संत सेन महाराज: संत शिरोमणि सेन महाराज का जन्म मध्यप्रदेश के बांधवगढ़ में विक्रम संवत 1557 में वैशाख कृष्ण (द्वादशी), दिन रविवार को वृत योग, तुला लग्न, पूर्व भाद्रपक्ष को चन्दन्यायी के घर में हुआ। बचपन में इनका नाम नंदा रखा गया। वे महाराष्ट्र की संत परंपरा से आते हैं। वे पंढरपुर के एक महान वारकरी संत थे।

14.संत चोखामेला (1300 ई.-1400 ई.): महाराष्ट्र के संत शिरोमणि चोखामेला ने कई अभंग लिखे हैं। संत नामदेव को उनका गुरु कहा जाता है। चोखामेला का जन्म महाराष्ट्र के गरीब परिवार में हुआ। उनका जन्म मेहुनाराजा नामक गांव में हुआ, जो महाराष्ट्र के बुलढ़ाना जिले की

संत सेन महाराज संत चोखामेला संत भानुदास महाराज संत बहिणाबाई

दियोलगांव राजा तहसील में आता है। चोखामेला बचपन से ही विठोबा के भक्त थे।

15. संत भानुदास महाराज: भानुदास भी विठोबा के भक्त और वारकरी संप्रदाय के संत थे। वे भगवान की भक्ति ही करते रहते थे जिसके चलते घर में आर्थिक संकट था। उनको सबने पैसे इकट्ठा करके कपड़े का धंधा करने को कहा। वे कपड़ा बेचते थे तो कहते थे कि इतने में खरीदा और इतने में बेचूंगा। बाकी लोग बेइमानी से कपड़ा बेचते थे। कई दिनों तक भानुदास का धंधा नहीं चला लेकिन भानुदास के सत्य बोलने को लोगों ने समझा और उनकी जीत हुई। ऐसे में दूसरे व्यापारी भानुदास से जलने लगे। एक दिन एक हाट के दौरान वे धर्मशाला में ठहरे थे। वहाँ उनके साथ अन्य व्यापारी भी ठहरे थे। रात को भानुदास को कीर्तन की आवाज सुनाई दी, तो उन्होंने अन्य व्यापारियों से कहा आप भी कीर्तन सुनने चलें। सभी ने मना कर दिया। भानुदास के जाने के बाद व्यापारियों ने उनकी कपड़े की गठरी फेंक दी और बाहर खड़े उनके घोड़े को खोलकर चाबुक चलाकर दूर भगा दिया। उधर वे कीर्तन में मग्न थे। इधर धर्मशाला में रात को डकैती पड़ गई। डकैत व्यापारियों को लूटने के बाद घोड़े भी ले गए। भानुदास रात को दो बजे कीर्तन से वापस आए तो पता चला कि व्यापारियों के पैसे तो गए साथ ही उनकी पिटाई भी हुई। तब भानुदास ने

अपना घोड़ा ढूंढा तो एक युवक ने बताया कि वहाँ है आपका घोड़ा। युवक ने यह भी बताया कि आपकी कपड़े की गठरी व्यापारियों ने यहाँ फेंकी थी वे भी ले लें। भानुदास ने पूछा तुम कौन हो। युवक ने कहा जो जैसा मानता है वैसा रहता हूँ। भानु ने फिर पूछा तुम कहाँ रहते हो, तो उन्होंने कहा सर्वत्र रहता हूँ। तुम्हारा नाम क्या है तो युवक ने कहा कोई भी रख दें। मा-बाप कौन तो कहा कि कोई भी बन जाओ। तुम क्या करते हो, भक्तों की सेवा करता हूँ। तब भानुदास ने कहा तुम्हारी बात समझ में नहीं आती तो उसने कहा मैं सारी समझ के पार हूँ। ऐसा कहते हुए युवक गायब हो गया। बस इस घटना के बाद भानुदास का जीवन बदल गया।

16. संत बहिणाबाई: संत तुकाराम की समकालीन संत बहिणाबाई का स्थान भी मुक्ताबाई, कान्होपात्रा, जनाबाई, वेणाबाई, आक्काबाई, मीराबाई के समान है। बहिणाबाई का जन्म वैजपुर तालुका के देवगांव में सन् 1551 में हुआ। पति का नाम था रत्नाकर। बहिणाबाई जयराम के सत्संग सुन सुन कर भक्त बन गईं। वे अपने बछड़े को कथा में ले जाती थीं, जिसके चलते उनकी निंदा होने लगती थी। बहिणाबाई के पति को लोगों ने भड़काया तब पति ने उनकी कुटाई कर दी। वे कुटाई से बेहोश हो गईं और तीन दिन तक बेहोश रहीं। तब तक बछड़े ने भी अन्न जल ग्रहण नहीं किया। जब बहिणाबाई उठीं तो उन्होने बछड़े को गोद में लिया और बछड़े ने गोद में ही प्राण त्याग दिए। तुकाराम को यह पता चला तो उन्होंने बहिणाबाई को दर्शन दिया और उन्हें अपना शिष्य बनाया। संत बहिणाबाई वारकरी संप्रदाय के भक्तों में सबसे लोकप्रिय थीं।

सूचना: कुछ कहानियाँ संतो की महानता बताने हेतु लिखी जाती हैं, कृपया उन्हे अंधश्रद्धा या अन्यथा ना लें।

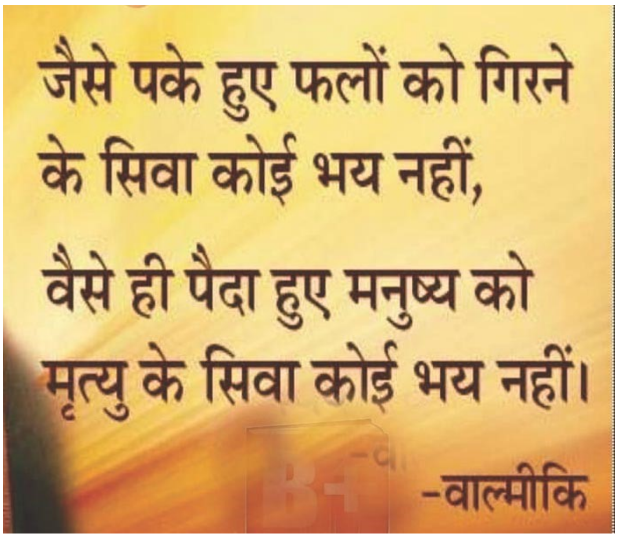

आज़ादी का अमृत महोत्सव

श्री.जी.एम.शहारे, मौ.वि.ए,
प्रा. मौ. कें. नागपुर

चलो हम सब मिलकर, आज़ादी के अमृत महोत्सव का जश्न मनाते,
अमर शहीद जवानों को पहले नमन करते
जगत- जननी भारत माँ को शीश झुकाकर वंदन करते
शान से लहराते तिरंगे को सलाम करते
चलो, आज़ादी के अमृत महोत्सव का हम जश्न मनाते......

गांधी, अम्बेडकर-नेहरुजी को हम याद करते
राजगुरू, भगतसिंह-सुभाष-बाबू को नमन करते
आओ, चलो लाल किले पर आज़ादी का ध्वज फहराते
चलो, आज़ादी के अमृत महोत्सव का हम जश्न मनाते....

बरसों पहले देश हमारा, अंग्रेजों का गुलाम था
हर हिंदुस्तानी गुलाम बनकर, मर-मर कर जीता था
रास न आयी यह गुलामी, चले जवान कदम बढ़ाते
चलो, आज़ादी के अमृत महोत्सव का हम जश्न मनाते....

आजाद हुआ है देश हमारा 1947 में
प्रजासत्तात्मक देश हमारा, बना है सारे विश्व में
किसान देश का झूमने लगा फसलों के लहराते-लहराते
चलो, आज़ादी के अमृत महोत्सव का हम जश्न मनाते...

प्रगत देश की औद्योगिक क्रांति, बनाई हमने मेहनत से
शिक्षा और विज्ञान प्रगत बना, हर हिंदुस्तानी की बरकत से
विकसित हुई हरित-क्रांति, नीली क्रांतिदेश को चलाते-चलाते....
चलो, आज़ादी के अमृत महोत्सव का हम जश्न मनाते.....

जयहिंद-जयहिंद देश का नारा, जय जवान-जय किसान ब्रिदवाक्य हमारा
सबसे सुंदर-सबसे प्यारा, भारत देश हमारा,
आओ, खुशिया मनाते, हम सब मिलकर, देश-भक्ति गीत गाते-गाते....
चलो, आज़ादी के अमृत महोत्सव का हम जश्न मनाते....

देशभक्ति होनी चाहिए, देश के हर नागरिक में
भारत माँ की गोद मे पले हम, लगे देश की रक्षा में
देश की आज़ादी को बचाते रहेंगे, अपना खून बहाते-बहाते..
चलो हम सब मिलकर, आज़ादी के अमृत महोत्सव का जश्न मनाते....

**

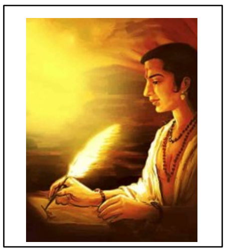

महाकवि कालीदास की मेघदूत का मौसमी विवेचन !!!

श्री ए. एम. भट्ट ,मौ.वि.ए, मौ.का.अंबिकापुर

सरगुजा जिले के दक्षिण में स्थित रामगढ़ में प्रत्येक वर्ष आषाढ़ मास के प्रथम दिवस को विभिन्न साहित्यिक कार्यक्रम आयोजित होते हैं। वहाँ स्थित सीता बेंगरा की गुफा विश्व की प्राचीनतम नाट्यशालाओं में से एक मानी जाती है और प्रमाणिक भित्तिचित्र, शिलालेख की विद्यमानता, विभिन्न दंतकथाएं इस स्थल को महाकवि कालीदास जी की अमर काव्यकृति 'मेघदूत' की रचनास्थली होने का संकेत देते हैं। आइये जानने का प्रयास करें कि कौन थे कालीदास।

अवन्ति नगरी के राजा विक्रमादित्य के विषय में अनेकों दंतकथाएं, राजकीय चातुर्य और विधि सम्मत राज क्रियान्वयन का इतिहास समय समय पर वर्णित होता रहा है। परंतु कम ही लोग जान पाते हैं कि कालीदास का कालीदास हो जाने की घटना क्या थी।

विद्वान पण्डित वररुचि को राजा विक्रमादित्य की पुत्री प्रियंगुमंजरी को पढ़ाने का भार सौंपा गया। विद्वान शिक्षक के सानिध्य में रह कर प्रियंगुमंजरी ने बड़ी शीघ्रता से सभी शास्त्रों में पारंगत ज्ञान को प्राप्त कर लिया। समय बीता और वह यौवनावस्था को प्राप्त हुई। बड़े लाड़-प्यार से पली बड़ी प्रियंगुमंजरी का स्वभाव कुछ चुहलबाजी से प्रेरित दिखता था। अपनी इस चुहलबाजी शैली का परिणाम यह हुआ कि उसे अपने ही गुरुदेव का श्राप भोगना पड़ा। बसन्त ऋतु में एक दिन प्रियंगुमंजरी ने अपनी भवन के एक खिड़की के छज्जे की छाया में विश्राम करते हुए अपने एक उपाध्याय पण्डित को तपती दुपहरी में पथ पर विचरण करते हुए देखा। प्रियंगुमंजरी के भीतर का चुहल जागा और उसे प्रतीत होने लगा कि यह लोभी ब्राह्मण जरूर कुछ पाने की इच्छा से ही वहाँ आया है। यौवन की दहलीज पर पहुंच चुकी प्रियंगुमंजरी ने पके आम का फल दिखा कर अपने उपाध्याय का कामातुर शब्दों से उपहास करना प्रारम्भ कर दिया। अपने शिष्या की इस कृत्य से वे बेहद आहत हुए और क्रोधित होते हुए कठोर शब्दों में कहने लगे -'अरी घमण्ड औए वासना में उन्मत्त राजकुमारी! तू अपने गुरु का उपहास करती है, तुझे मेरा यह श्राप है कि जिस तरह तूने मुझे जानवर के तुल्य फेंक कर आम फल दिया है तो भविष्य में तेरा पति भी जानवरों के पीछे घूमने वाले कोई चरवाहा ही होगा।'

श्राप सुन कर भी राजकुमारी का घमंड नहीं टूटा और तत्क्षण उसने भी प्रतिज्ञा की -'हे ब्राह्मण ! जो तुम्हारी विद्वता से भी अधिक विद्वान होगा मैं उसी का वरण करूँगी।'

इधर अपनी पुत्री के विवाह का समय आया देख विक्रमादित्य ने योग्य वर ढूढने की जिम्मेदारी पण्डित वररुचि को प्रदान की। वररुचि योग्य वर की तलाश में निकल पड़े। एक दिन जब वे किसी जंगल से गुजर रहे थे तब उन्हें जोरों की प्यास लगी। जल की तलाश में व्याकुल वररुचि का सामना एक भैंस चरवाहे से हुआ। उन्होंने चरवाहे से थोड़ा जल देने को कहा। चरवाहा बोला- इस समय मेरे पास पानी तो नहीं है, चाहो तो भैंस का दूध पी कर प्यास बुझा लो।

वररुचि ने कहा-ठीक है, दूध ही पिला दो।

चरवाहे ने कहा - हे ब्राह्मण 'करचण्डी' बना लो, मैं तुम्हें दूध देता हूँ।

'करचंडी'यह क्या होता है? वररुचि ने किसी कोष में यह शब्द पहले नहीं पढ़ा और न कभी सुना। इस अश्रुत शब्द ने वररुचि को अचंभित कर दिया था। अंत में उन्होंने चरवाहे से पूछ ही लिया- यह करचण्डी क्या है भाई?

चरवाहे ने ब्राह्मण के माथे पर हाथ रख कर उन्हें भैंस के थन के पास बैठा दिया। फिर उनकी दोनों अंजुली को जोड़ कर उनके मुंह से लगाते हुए कहा- महात्मन यही है करचण्डी। चरवाहा ब्राह्मण की अंजुली में भैंस के थन से दूध दुह कर गिराता गया और ब्राह्मण आकंठ दूध पीता चला गया।

वररुचि ने चरवाहे द्वारा उनके माथे पर हाथ रखने और उससे करचण्डी जैसा नवीन शब्द का ज्ञान प्राप्त होने से उसे अपना गुरु मान लिया। वररुचि ने चरवाहे के भीतर एक विद्वान को देख लिया था। उन्होंने चरवाहे को अपने साथ छः महीने तक रख कर उसे सुसंस्कृत बनाया और एक दिन राजकुमारी के योग्य हो चुके जान कर उसे अलंकृत वस्त्र पहना कर राज दरबार में ले गए।

राजदरबार का वैभव देख कर और राजा को सामने देख कर चरवाहे का धैर्य छूट गया जिससे 'ॐ नमः शिवाय' कहने की जगह उसके मुंह से एक उटपटांग शब्द निकल गया। चरवाहे के मुँह से निकला वह शब्द था 'उशरट'।

यह शब्द सुनते ही राजा और राज कर्मचारी विस्मित रह गए। मामले को बिगड़ते देख वररुचि ने हस्तक्षेप करते हुए कहा- राजन! यह शब्द तो इनका एक सांकेतिक शब्द है, इसका पूरा विश्लेषण मैं बताता हूँ।

वररुचि ने 'उशरट' शब्द की व्याख्या करते हुए कहा-

उभया सहितो रुद्रः शंकरः शूलपाणिभृत।

रक्षतु त्वां महिपाल टंकारबलगर्वित: ।।

वररुचि की व्याख्या सुन राजा अति प्रसन्न हुए और चरवाहे को प्रकांड विद्वान जान कर उससे अपनी पुत्री प्रियंगुमंजरी का विवाह कर दिया। अब चरवाहा राजकुमारी का वर था और वररुचि की सलाह पर अधिकतर मौन ही रहता था। एक दिन राजकुमारी ने चरवाहे की परीक्षा के लिए अपनी लिखी एक नई रचना का संशोधन करने को दिया। चरवाहे ने नहरनी से खुरच कर रचना को बिंदु विसर्ग विहीन कर दिया। यह देख राजकुमारी को निश्चित हो गया कि उसका पति महा मूर्ख है। उसने उसके साहित्य संशोधन की इस कारगुजारी को 'जमात्रिशुद्धि' का नाम दिया।

कुछ दिनों बाद वह चरवाहा एक दिन राजभवन के दीवार पर भैंसों के चित्र देख अपने पुराने दिनों में खोता चला गया और अपनी प्रतिष्ठा भूल कर विकृत शब्दों का उच्चारण करता हुआ भैंसों को बुलाने लगा। यह देख राजकुमारी को विश्वास हो गया कि यह महामूर्ख होने के साथ चरवाहा भी है। तो क्या उपाध्याय का वह श्राप फलित हो चुका था? राजकुमारी ने अब अपने पति की उपेक्षा प्रारम्भ कर दी थी। अपनी उपेक्षा देख चरवाहा का हृदय व्यथित हो गया, उसे अपनी भार्या के द्वारा की जाने वाली उपेक्षा जब असह्य हो गयी तब वह विद्वान होने के लिए माता काली की शरण में चला गया। उसने एकांतवास कर माता की आराधना प्रारम्भ कर दी। इधर राजा को भय हुआ कि कहीं वह भाग गया तो उनकी पुत्री को जीवन पर्यंत एक वैधव्य का कष्ट भोगना पड़ेगा। एक दिन राजा ने अपनी एक दासी को समाचार जानने चुपके से काली मंदिर में भेजा। काली मंदिर में दासी ने देखा कि चरवाहा माता के चरणों से लिपटा अतिशय विलाप कर रहा था। उसके नेत्र भीगे हुए थे और वह माता से बारम्बार प्रसन्न होने की प्रार्थना कर रहा था। दासी वह दृश्य देख अचंभित हुई और उसे उठाने का प्रयास करती हुई कहने लगी - उठो, उठो वत्स मैं प्रसन्न हूँ!!!

कहते हैं कि इसी समय दासी द्वारा किये जाने वाले झूठे प्रयास से भविष्य में सत चित्त से अपने इस उपासक के मनःस्थिति के साथ किसी अनहोनी की आशंका से स्वयं माता काली ने ही साक्षात चरवाहे को उठाया था और अपने आशीषों से अनुगृहीत किया था। यह समाचार सुन राजकुमारी भी अति प्रसन्न हुई और चरवाहे के पास जा पहुंची। चरवाहे ने राजकुमारी को सम्मुख देख कहा- 'अस्ति काष्चिदवाग्विशेष'

इस घटना के बाद ही वह चरवाहा कालीदास के नाम से प्रसिद्ध हो गया और उसने रघुवंश, कुमारसम्भव जैसी महाकाव्य और छह अन्य महा प्रबन्धों की कालजयी रचना की।

दक्षिण सरगुजा में स्थित रामगढ़ और यहाँ की भौगोलिक तथा मानवीय संस्कृतियां तथा रामगढ़ की गुफाओं में आज भी विद्यमान शिलालेख महाकवि कालीदास की अमरकृति 'मेघदूत' की रचनास्थली होने का प्रमाण संजोए हुए है।

उपमा रूपक - कालीदास

जब भी हम कालीदास जी की चर्चा करते हैं तो एक बात हमेशा पीछा करती है कि कालीदास मूर्ख ही नहीं महा मूर्ख थे और इसकी पुष्टि में तथ्य सामने आती है कि जो व्यक्ति किसी डाल पर बैठा हो और उसे ही इस तरह काट रहा हो कि जब डाल गिरेगा तो वह भी गिर जाएगा। मतलब जिसे इतना भी ज्ञान न हो कि प्रत्यक्ष मृत्यु हो और वह अज्ञानी उसी का वरण कर रहा हो। घटनाओं के आलोक में तो आप हनुमान जी को भी मूर्ख परिभाषित कर सकते हैं जिन्होंने सूर्य की ज्वाला का ज्ञान न कर उसे उसे खाने के चक्कर में अपना ही मुंह जला लिया था। हाँ, यह तो सभी मानते हैं कि कालीदास अपने प्रारम्भ के किशोरावस्था से 21-22 की आयु तक मूढ़ ही थे। परंतु मूढ़ता के सबसे निचले पायदान से इस वय में ज्ञान प्राप्त करना और अनेक महाकाव्य की रचना को प्रेरित होना आसान नहीं होता। किंवदंतियाँ इसे माता काली का आशीर्वाद निरूपित करती हैं। जो भी हो पर इतना तो मानना ही पड़ेगा कि आशीर्वाद भी पात्र के अनुरूप ही प्राप्त होते हैं। तो क्या उस गँवार चरवाहे ने बुद्धिहीनता के निचले पायदान से या शून्य से शिखर तक पहुंचने का कोई प्रयास नहीं किया होगा? सिर्फ भगवती आशीर्वाद से यह सम्भव हो पाया होगा? कम से कम मैं तो ऐसा नहीं मानता। कहा जाता है कि ज्ञान प्राप्त करने की न कोई सीमा है न आयु बन्धन। मनुष्य तो अपनी अंतिम श्वास तक सीखता है। कालीदास ने भी स्वयं को शून्य से उपर उठाने का प्रयास किया होगा और यह प्रेरणा उन्हें उनके ऊपर किए गए जन उपहासों से ही मिली होगी। कई बार उपहास भेद प्रेरक बन जाते हैं। कालीदास ने ठाना होगा कि मैं विद्वता को प्राप्त करके रहूँगा, मैं सरस्वती की सेवा और माता काली की आराधना ज्ञान प्राप्ति के लिए करूँगा और कालांतर में उन्होंने इसे सिद्ध कर दिखाया।

मेघदूत का सारांश

मेघदूत महाकवि कालीदास जी की वियोग श्रृंगार और विप्रलम्भ श्रृंगार में कल्पना के साथ भूगोल को भी समाहित करती हुई एक अनुपम काव्य रचना है। इसे पाठक अपनी-अपनी दृष्टिकोण से आत्मसात करते हैं। किसी पाठक की दृष्टिकोण में कवि की यह काव्य कल्पना कवि के देशाटन की वृत्ति को विशेषित करती है तो किसी को प्रेम की पराकाष्ठा की प्रतीति कराती है। कोई इसे प्रकृति वैशिष्ट्य में विलोड़ित कवि की अनुपम कृति मानता है तो मुझ जैसा अकिंचन

इसमें मौसम विज्ञान में वर्णित मानसून के मेघों का गमन पथ भी देख पाता है। मूर्धन्य हिंदी साहित्यकार मेघदूत को आषाढ़ के प्रथम दिवस पर नीलाभ शून्य आकाश पर घुमड़ते बादलों के द्वारा अपनी प्रियतमा तक प्रेम सन्देश सम्प्रेषण का आलौकिक चित्रण मानते हैं जिसमें कवि की वियोग श्रृंगार की कल्पना का रसमय पुट झलकता है।

सम्पूर्ण मेघदूत दो खण्डों में बंटा हुआ है। प्रथम खण्ड पूर्व मेघ और द्वितीय उत्तर मेघ। इसकी सम्पूर्ण कहानी का सारांश देखा जाए तो वह होगा कि स्वर्गपुरी के धनाध्यक्ष यक्षराज कुबेर के मानस सरोवर के रक्षार्थ एक यक्ष की नियुक्ति की जाती है। वह यक्ष अपनी प्रेयसी से हार्दिक प्रेम करता था। एक रात वह कामातुर हो कर अपनी प्रेयसी से मिलाप की इच्छा में सरोवर को अनारक्षित छोड़ कर चला गया। उसी रात की दूसरे पहर में मदमस्त ऐरावत हाथी विचरण करता हुआ वहाँ आया और मद के आधीन वह मानस सरोवर में जा घुसा। उसने सरोवर के सारे स्वर्ण कमलों को रौंद कर नष्ट कर दिया। इस गज विध्वंस का समाचार पाकर यक्षराज कुबेर अत्यंत कुपित हुए तथा उन्होने पहरे में नियुक्त यक्ष को क्रोधावेश में श्राप दे दिया। कुबेर ने यक्ष से उसका देवत्व छीन लिया और एक वर्ष के लिए अलकापुरी ही नहीं बल्कि समस्त पृथ्वी को छोड़ कर रामगिरी नामक घनघोर वनों से युक्त पहाड़ी, चोटियों से आच्छादित निर्जन स्थल में अकेले निवास करने भेज दिया। श्राप और निर्वासन से अभिशप्त यक्ष अपनी वेदना और वियोग की घड़ियां बिताने के लिए निर्जन सघन रामगिरी के वन क्षेत्र में जाने को विवश हो गया। यक्ष के एक वर्ष के निर्वसन काल की हृदयद्रावक और मार्मिक वियोगी जीवन का महाकवि ने अत्यंत भाव सुकुमारता और व्यंजक रीति से वर्णन करते हुए ही मेघदूत की रचना की है।

मेघदूत का अलकापुरी और रामगिरी

इसके पहले कि मेघों के सन्देश वाहक बनने और उसके गमन पथ को जानें, अलकापुरी और रामगिरी को जान लेना आवश्यक होगा। अलका अर्थात कैलाश। अलकापुरी से तात्पर्य उत्तर भारत में स्थित हिमालय क्षेत्र का कैलाश पर्वत है। इसी कैलाश पर्वत पर मानस सरोवर की कल्पना तथा उसके रक्षार्थ यक्ष की नियुक्ति की गई थी और यहीं यक्ष की प्रेयसी रहती थी। अलकापुरी के हिमालय क्षेत्र में होने की पुष्टि सभी साहित्यकार और विद्वान करते हैं परंतु रामगिरी की अवस्थिति पर साहित्यकारों में एकमत नहीं मिलता। वे मेघदूत में वर्णित स्थल उद्धरण के आधार पर देश के अलग अलग क्षेत्रों में रामगिरी को परिभाषित करते हैं।

मल्लिनाथ और वल्लभदेव चित्रकूट पर्वत को रामगिरी मानते हैं जबकि कवि विलसन नागपुर महाराष्ट्र में स्थित रामटेक की पर्वत श्रृंखला में इसका होना बताते हैं।

प्रसिद्ध व्याख्याकार हरिदास भी बुन्देलखण्ड के चित्रकूट पर्वत को ही रामगिरी मानते हैं।

डॉ वासुदेव शरण अग्रवाल नागपुर के रामटेकरी का रामगिरी होना बताते हैं और उनका यह भी मत है कि अलकापुरी और कैलाश भी दो भिन्न जगह हैं।

वहीं आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी रामगिरी को प्राचीन सरगुजा रियासत की एक पहाड़ी को मानते हुए कहते हैं कि एक समतल भूमि पर यह पहाड़ी उठी हुई है जो अधिक ऊंची नहीं है परंतु इसके उत्तर और उत्तर-पूर्व की ओर अनेक ऊंची पर्वत ऋंखलाएँ हैं।

आधुनिक पुरातत्व अनुसंधान में रामगिरी का तात्पर्य मध्यप्रांत में स्थित वर्तमान सरगुजा के रामगढ़ से ही है। इसकी पुष्टि में कहा गया है कि मेघदूत में अमरकंटक (आम्रकूट) और नर्मदा का वर्णन मिलता है जो छत्तीसगढ़ के सरगुजा जिले के रामगढ़ के निकट है। परन्तु आज भी रामगिरी के वास्तविक स्थल को स्पष्टता और जन स्वीकार्य प्रमाणों के आलोक में सुपरिभाषित करना शेष है।

सीता बेंगरा गुफा - रामगढ़ स्थित प्राचीन नाट्यशाला

चित्र – सरगुजा के रामगढ़ में स्थित प्राचीन नाट्यशाला – सीता बेंगरा

यह गुफा पूर्णरूप से प्रकृति निर्मित है। यह 45 फीट लम्बी और 15 फीट चौड़ी है जिसकी दीवारें सीधी हैं। भीतरी भाग की ऊंचाई लगभग 04 फीट है। गुफा के सामने अर्धचन्द्राकार शिला प्रांगण है, जिस पर 50-60 लोग आराम से बैठ सकते हैं। माना जाता है कि प्राचीन काल में इसका उपयोग नाट्यशाला के रूप में होता था। गुफा में कुछ भित्ति लेख पाए गए हैं जो पाली भाषा और अशोक कालीन ब्राह्मी लिपि के माने जाते हैं। माना जाता है कि कवि कालीदास ने मेघदूत के कुछ अंश इसी गुफा में रह कर लिखे थे। स्थानीय प्रशासन के निर्देशन में प्रति वर्ष आषाढ़ मास की पहली तिथि को यहाँ कालीदास जी के सम्मान में साहित्यिक कार्यक्रम आयोजित होते हैं।

भित्तिलेख में दो पंक्तियां हैं जिनके अधिकांश अक्षर अब या तो नष्ट कर दिए गए हैं या अस्पष्ट हैं, फिर भी विद्वानों ने इन पंक्तियों के निम्नानुसार समझने का प्रयास किया है –

आदिपयन्ति हृदयं सभावगरू कवियों ये रातयं।

दुलेबसतिया, हासावनुभूते कुवस्पीतं एवं अलगेती।।

इन पंक्तियों का भावार्थ कुछ इस तरह निकाला गया गया है – **"हृदय को दीप्तिमान कर सकने वाले कविगण रात्रि में वासन्ती हास्य और संगीत से प्रेरित चमेली के फूलों की मोटी माला का आलिंगन करते हैं।"**

मेघदूत में स्थल वर्णन – यथा पूर्व मेघ

जब प्रेयसी वियोग में विह्वल वेदना का अवलम्ब करते हुए यक्ष से एक-एक कर सभी ऋतुएँ विदा होती गयीं और जेठ का मटमैला आकाश पूर्व मानसून की वर्षा से धुलकर नीलाभ हुआ तो सुंदर आकाश में घुमड़ते बादलों में बनती-बिगड़ती छवियों में उसे अपनी प्रियतमा की छवि दिखने लगी और उसका रहा सहा धैर्य भी टूटने लगा। रामगिरी की चोटियों से टकराते मेघ उसे विह्वल कर देते थे। कामातुर यक्ष चेतन-अचेतन के भंवर में डूबता उतरता मेघों से विनम्र निवेदन करने लगा। उसने वर्षा ऋतु के आरंभ का संदेश देने वाले कुटज(कुरैया) पुष्पों का अर्घ्य, मेघों को निवेदित किया। मेघों का स्वागत करते हुए, अपनी विरह वेदना उसे सुनाते हुए ऐसा प्रतीत होता है मानो वह बंगाल की खाड़ी से आने वाले और उत्तर भारत की ओर जाने वाले मानसून की तरंगों से कह रहा हो-"हे मेघ, मुझ प्रेम विरही की विरह वेदना को छुपा कर, मेरी प्रेयसी से कहना कि मैं तुम्हारे प्रेम आलिंगन की स्मृतियों में डूबा इस श्राप की घड़ी के बीत जाने का इंतजार कर रहा हूँ। विरह की वेदना का सुख जो हमें प्राप्त हुआ है, सभी को प्राप्त नहीं होता। मेरे पास कोई साधन न होने के कारण इतने दिनों तुम्हें कोई सन्देश न दे सका। आज तुम इन मेघों से मेरा प्रेम सन्देश प्राप्त करो और फिर अपना प्रेम सन्देश भेजो।"

यक्ष ने मेघ को अपनी मनभावन का निवास और वहाँ तक पहुंचने का पूरा मार्ग विस्तार से समझाया। आषाढ़ मास की पहली तिथि को यक्ष के निर्देशानुसार दूत मेघ उसका सन्देश ले कर रामगिरी से अलकापुरी के लिए चल पड़े।

भले ही मौसम विज्ञान एक जून से मानसून को परिभाषित करता है परंतु लोक सामान्य में मध्य व उत्तर भारत में वर्षा ऋतु आषाढ़ मास से ही मानी जाती है। मानसून केरल से प्रवेश कर बंगाल की खाड़ी और वहाँ से मुड़ कर पुनः भारत के पूर्वी राज्यों में प्रवेश करके छत्तीसगढ़ होती हुई आगे मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, उत्तराखंड से हिमालय की ओर बढ़ती है।

रामगिरी से यात्रा प्रारंभ करने के बाद यक्ष ने मेघ को आगे का मार्ग बताया था। उसने कहा-रामगिरी से आगे बढ़ने पर तुम्हें घने वन और पहाड़ मिलेंगे। वहाँ की वनिताएं यौवना अपने खुले बालों को आंखों से हटा हटा कर बड़ी उत्कंठा से तुम्हें निहारेंगी। इन पर्वतों और वन ग्रामों में तुम कुछ देर विश्राम कर अपना जल बरसा कर इन वनिताओं की प्यास बुझा देना। वहाँ के सुंदर

झरनों से तुम जल पी कर उत्तर की ओर बेतों के जंगल के ऊपर से आकाश में ऊंची उड़ान भरना। आगे तुम्हें रतनपुर की पहाड़ियों के समीप मालडा नामक ऊंची भूमि वाला क्षेत्र मिलेगा। उस क्षेत्र में अल्हड़ अनुराग वाली ग्वालिनें तुम्हें निहारेंगी। तुम वहाँ की तुरंत जोती गई खेतों के मिट्टी की सोंधी खुशबू ले कर कुछ पश्चिम की ओर मुड़ कर फिर उत्तर की ओर चल देना।

यहाँ यह जानना आवश्यक है की गर्मी के बाद जैसे मानसून का आगमन होता है तब मध्य और उत्तर भारत के लोक अंचल में इसका स्वागत अभी भी पूरानी प्रचलित विधाओं से किया जाता है। बालाएं मेघों को रिझाने के लिए अर्थात उनके क्षेत्र में वह प्रभावी बना रहे और जल बरसाता रहे, वे इस हेतु नृत्य गान करती हैं, वे मेघों को अपना प्रियतम मान कर उनसे सांकेतिक विवाह कर लेने जैसी मनोहारी क्रीडा करती हैं। जब लम्बे समय तक मेघ नहीं बरसते हैं तब यही बालाएं मेघों को ताड़ना देती हैं। उलाहना की, अपनी दशा की अभिव्यक्ति हेतु वे मेढ़क-मेढ़की का विवाह तक कर देती हैं।

इस प्रकार कवि कालीदास के मेघ यक्ष का संदेश ले कर रामगिरी से अलकापुरी के लिए चल पड़ते हैं। छत्तीसगढ़ के रतनपुर को पार कर मेघ वहाँ से चौदह कोस उत्तर की ओर चल कर आम्रकूट पहुंचते हैं। आम्रकूट ही वर्तमान का अमरकंटक है। वहाँ ये मेघ जंगलों में धधकते दावानल पर घनघोर वर्षा कर शांत कर देते हैं। बरसात की बूंदों का स्पंदन पा कर अमराई के आम पीले होने लगते हैं। मेघ आम्रकूट के सृंग पर थोड़ा विश्राम कर विंध्याचल के चरणाद्रि की ओर बढ़ते हैं। वहाँ वे पथरीली भूमि पर नायक चरण पतिता रेवा नदी को जलपूरित करते हैं। मेघ देखते हैं कि रेवा नदी की तीर पर अनेक जामुन के पेड़ हैं और इन पेड़ों के नीचे से रेवा की धारा बलखाती मचलती अनवरत बहती जा रही है। अपना भार कम होता देख मेघों को भय होता है कि उन्मत्त हवा कहीं उन्हें उड़ा न ले जाएं और वे पथ विचलित हो जाएं, इसलिए वे रेवा का जल पान कर अपना भार बढा कर वहाँ से आगे बढ़ती हैं।

यहाँ देखिए आज जब मानसुन के बादल आगे बढ़ते हैं तो वे कई बार एक ही जगह पर तब तक रुके रहते हैं जब तक उन्हें किसी स्रोत से नमी की आपूर्ति से आगे बढ़ने की अनुकूल परिस्थितियां नही मिलती। रेवा का जल पी कर मेघदूत वहाँ से तीव्र वेग से चलना प्रारंभ करता है। आगे वह दर्शाण देश पहुंचता है। दर्शाण देश वेत्रवती अर्थात वेतवा नदी के पूर्व का तटीय क्षेत्र है। वहाँ मेघ केतकी के पुष्पों का सुगंध प्राप्त कर दशाणों की राजधानी भील्सा अर्थात आज का विदिशा में प्रवेश करते हैं। वेतवा का जल पीने की इच्छा से मेघ विदिशा के नीचै नामक पर्वत पर विश्राम करते हैं। नीचै पर्वत पर स्वयं उगी हुई जूही की कलियों को सींच कर और वहाँ के

नयन मनोहारी दृश्यों का रसास्वादन कर मेघ वहाँ से उत्तर की ओर अवंती नरेश वत्सराज के महा सम्पन्न नगर उज्जयिनी में प्रवेश करता है। उज्जयिनी के आकाश में अपनी विधुत रेखाओं की चमक के साथ नाद करता हुआ सिंधु नदी में उफान पैदा कर वह शिव का अभिषेक करता हुआ शिप्रा नदी की ओर बढ़ता है। मार्ग में वह देवगिरि पर्वत के ऊपर से उड़ता हुआ चम्बल नदी को पार कर राजा रतिदेव की राजधानी दशपुर के मार्ग से कुरुक्षेत्र को आर्द्र कर जाता है। आगे कनखल के मार्ग से वह हिमालय की चढ़ाई प्रारंभ करता हुआ क्रोंच पर्वत से होता हुआ अलकापुरी की यात्रा पूर्ण करता है।

कालीदास और मौसम की अवधारणा

मेघदूत के प्रथम प्रकृति चित्र का स्मरण कीजिए। आषाढ़ का प्रारम्भ है, काले बादल के टुकड़े आसमान में उड़ते चले जा रहे हैं। उनमें से एक बादल का पिंड पहाड़ की चोटी से जा लगा। इस बादल पिंड में कवि की प्रतीति देखिए- मानो मिट्टी की ढेर से क्रीड़ा करता कोई हाथी अपनी मद में मस्त हो रहा हो। अब याद कीजिए जून के महीने में मानसून पूर्व जब पहाड़ों और मैदानों में वर्षा के बाद तेज धूप निकलती है तो दोपहर के समय नीले स्वच्छ आकाश पर कपास के खिले फूल की तरह ऊपर की ओर बढ़ता हुआ बादल अपनी लगातार बदलती आकृति के साथ एक विशालकाय गोभी के फूल की तरह प्रारंभ में श्वेत चमकदार और फिर कुछ देर बाद कालिमा की चादर ओढ़ लेता है। ऊपर आसमान में छितर कर यह बादल अपनी आंतरिक समाहित विपरीत आवेशों के आकर्षण से चमक कर गर्जना करने लगता है। इन्हीं बादलों को विज्ञान की शब्दावली में कपाषी(Cumulus) और कपाषी वर्षी (Cumulonimbus) कहा गया है। अर्ध कपाषी से कपाषी और कपाषी से कपाषी वर्षी मेघों के बनने का यह चरण आसमान में मनोहर चित्र उपस्थित करता है। आप अपनी कल्पना की तस्वीरें इन बादलों में देख पाते हैं। कवि भी इन रसिक बादलों की मनमौजी करतब देख कर मुग्ध होता है फिर जब उसे अपनी प्रेयसी की याद आ जाती है तब वह व्याकुल भी हो जाता है।

यक्ष का संदेश लेकर जब बादल आम्रकूट अर्थात अमरकंटक के आम्रकुंज को पहुंचते हैं तब कवि की कल्पना देखिए – हे मेघ! पके हुए पीले आमों से लदे आम्रकूट के पर्वत की शिखर पर तुम चिकने केशों की वेणी की तरह फैले अपना काला शरीर ले कर विश्राम कर लेना। तुम्हारे ऐसा करने से आम्रकूट पर्वत पृथ्वी की पीन पयोधर की तरह शोभायमान हो उठेगा और उस शोभा को लोग बड़े आनन्द से निहारेंगे।

अक्सर हम देख पाते हैं कि घने पेड़ों से आच्छादित पर्वतों पर जब मेघ पहुंचते हैं तो वे उस वन क्षेत्र को चारों ओर से घेर कर वहाँ वर्षा करते हैं। यहाँ पीन पयोधर का अर्थ है चारों ओर से गोरा और नोक पर काला। जब मेघ पर्वत की चोटी पर पहुंचते हैं तो उस समय मेघ पिंड के मध्य में गरजने वाले कपाषी वर्षी मेघों की बहुलता होती है जिनमें जल बूंदों की सघनता के कारण वे काले दिखते हैं। यही मेघ जब बरस जाते हैं तो जल बूंदों की कमी के कारण हल्के और श्वेत हो कर ये परिधि की ओर फैल जाते हैं। इसी कारण से पूरा वन क्षेत्र बादलों से ढंक जाता है। बादलों की छतरी ओढ़ कर वहाँ का प्रकृति सौंदर्य अति लुभावना हो जाता है। कपाषी बादल जब चारों ओर फैल जाते हैं और पूरे आसमान को ढंक लेते हैं तब उन बादलों को हम आल्टो स्टेटस या स्टेटस क्लाउड कहते हैं।

कवि ने अपनी कल्पना में मेघों से कहा है कि पर्वतों से गुजरते समय जहां भी झरने, जलाशय मिलें तुम वहाँ का जल पी कर आगे बढ़ना। मेघ जब रेवा नदी की तट पर पहुंचते हैं तो वहाँ बलखाती रेवा की धारा से शीतल हुई हवा जामुन के पेड़ों से टकराती तेज गति से बहती चली जाती है तब उसे भय होता है कि कहीं वह भी इन हवाओं के साथ न बह निकले और अपने गंतव्य मार्ग से विमुख हो कर भटक जाए। इसलिए उसने रेवा नदी का बहुत सा पानी पी कर अपना भार बढा लिया।

अब आम धारणा से देखें कि जो मेघ जल बरसाते हैं वही जल कैसे पी सकते हैं? पर इसे मौसम विज्ञान की दृष्टि से देखें कि जब बादलों में जल की मात्रा अधिक होती है तो वे जल भार के कारण नीचे आ जाते हैं और मूसलाधार वर्षा करते हैं। परंतु वर्षा के बाद वे हल्के हो कर आसमान में ऊंचे उठ जाते हैं। इन ऊंचे उठे बादलों से कतिपय वर्षा नहीं होती। परन्तु जब कहीं से जलवाष्प या नमी आकर इन बादलों में समाने लगते हैं तब वर्षा की फिर से अनुकूल परिस्थिति बन जाती है। ये नमी की मात्रा धरती से लगातार वाष्पन, जलपिंडों के जल के वाष्पन या फिर द्रोणिका और चक्रवाती हवाओं के माध्यम से समुद्रों से आ मिलती है। कवि का इस प्रकार का चिंतन उसके मौसम ज्ञान की पुष्टि करता है।

मेघदूत में मेघों का पथ

कालीदास जी ने यक्ष के माध्यम से मेघों को रामगिरी से अलकापुरी का जो मार्ग बताया है वह सीधा नहीं है। आखिर वियोगी यक्ष ने एक टेढ़ा-मेढ़ा पथ क्यों बताया, वह चाहता तो वायु में सीधा मार्ग बता कर मेघों को तत्काल अपनी प्रेमिका के पास भेज सकता था। आठ मास की अवधि की सभी ऋतुओं को उसने एकाकी वियोग में बिताया था, तो भी उसे शीघ्रता क्यों नहीं

थी? क्यों यक्ष ने मार्ग में मेघों को विश्राम करते हुए जाने को कहा था? इस पर भी कवि के एक मौसमविद होने की दृष्टि से आइये देखने की कोशिश करते हैं। मानसून के प्रथम मेघ कभी भी सीधे मार्ग लेकर नहीं चलते। मेघ चक्रवातों और वायु के कम दवाव वाले क्षेत्रों का अनुसरण करते हुए आगे बढ़ते हैं। मेघ के इस विचरण और वितरण की विधि चिरकाल से चली आ रही है। कवि इन रहस्यों को भली-भांति जानता था और उसने प्रकृति के नियमों के आधीन रह कर ही यक्ष के माध्यम से मेघों का मार्ग प्रसस्त किया था। मेघ जब आगे बढ़ते हैं तब उन्हें पर्वत श्रृंखलाओं की मर्यादा का पूरा ध्यान रखना पड़ता है। एक पहाड़ से टकरा कर दूसरे और दूसरे से तीसरे की ओर बढ़ते हुए ही उन्हें आगे बढ़ना होता है। हवाएं उच्च वायुदाब से निम्न वायुदाब की ओर ही चलती हैं। जब मेघों के मार्ग में आगे वायुदाब अनुकूल नहीं रहता तब उन्हें वहीं रुक जाना पड़ता है। कभी दो दिन तीन दिन तो कभी हप्ते या अधिक भी। सामान्य रूप से पर्वत पर चढ़ाई के दौरान ऊपर उठते हुए बादलों में संघनन तीव्र होता है जिससे मूसलाधार वर्षा होती है जबकि दूसरी ओर मेघ तो पहुंचते हैं पर उनमें वर्षा करने का सामर्थ्य शेष नहीं रह जाता। फिर किसी अनुकूल परिस्थिति के इंतजार तक मेघ उसी क्षेत्र में रुके रह जाते हैं। इसे ही कवि ने मेघों के लिए विश्राम की संज्ञा दी है। पहाड़ो से टकराने के बाद हवा में चक्रीय गति आती है जिससे वे सैकड़ों किलोमीटर का चक्रीय घेरा बना लेते हैं और उस चक्रीय घेरे के साथ ही आगे खिसकते हैं। इससे मेघों का मार्ग सीधा न हो कर वक्रीय हो जाता है। वायुदाब की समदाब रेखाओं के केंद्र से गुजरने वाली रेखा द्रोणिका कहलाती है। जब किसी द्रोणिका का सहारा मेघों को मिलता है तब उच्च दाब से निम्न दाब क्षेत्र की ओर ये तीव्रता से निकलते हैं। उत्तरप्रदेश के मैदानी भाग से कवि के मेघदूत द्रुतगति से निकलते हैं इसका कारण वहाँ पूर्व से पश्चिमोत्तर की ओर बन जाने वाली द्रोणिका अर्थात मानसून द्रोणिका ही रही होगी जिसे कवि अच्छी तरह समझते थे।

मेघों का रौद्र रूप दिखाने की कोशिश कवि ने पूर्व मेघ खण्ड के 54 वें श्लोक में की है। वहाँ एक शब्द प्रयुक्त हुआ है-

तुमुलकारकावृष्टिपाताव कीर्णान।

तुमल अर्थात अत्याधिक, करका- ओला, वृष्टिपात- बरसाना। श्लोक का सारांश है कि यदि तुम्हारे मार्ग में वेग से उछलते कूदते शरभमृग अपने मार्ग से विलग हो तुम्हारी ओर कूदें और तुम्हारी विधुत धाराओं के सम्पर्क में आकर अपना निज अंग भंग करने पर उतारू हो जाएं और अपने व्यर्थ कृत्य से बाधा उत्पंन करने वाले तिरस्कार के पात्र इन हिरणों को तीतर-बितर करने के लिए तुम भी क्रुद्ध हो कर तड़ातड़ ओले बरसा कर उन्हें तीतर-बितर कर देना।

यथा 61 वें श्लोक में देखिये- कैलाश पर्वत पर देवांगनाएँ अपने कंगनों की पैनी नोकों से तुम्हें टक्कर मार कर तुम से जल की बौछार प्राप्त करेंगी और गर्मी से व्याकुल हो इन बौछारों से जलक्रीड़ा करेंगी। यदि उनकी इस जलक्रीड़ा से विलंब बढ़ता देखो और यदि देवांगनाएँ व्यवधान समाप्त करती न दिखें तो तुम अपने कर्ण कठोर गर्जन से उन्हें डरा देना। तुम्हारा मार्ग व्यवधानरहित हो जाएगा।

मेघों का रूप रौद्र तब हो जाता है जब उसके मार्ग में बाधाएं आती हैं। अक्सर उत्तराखंड के पहाड़ों पर बादलों के मार्ग में ऊंचे पर्वतों की बाधाएं आती हैं जहां मेघ प्रवेश तो कर पाते हैं पर आगे निकल कर बढ़ नहीं पाते। लगातार वहाँ मेघों का घनत्व बढ़ता जाता है और एक समय ऐसा आता है कि जब उनमें जलधारण करने की क्षमता नहीं रह जाती तब अचानक भारी से अति भारी वर्षा, गर्जन और ओलावृष्टि होने लगती है। इस घटना को हम बादल का फटना कहते हैं। यह मेघों का अतिशय रौद्र स्वरूप होता है। कुछ ही अवधि की अति भारी वर्षा कर जब बादल हल्के हो जाते हैं तभी वे ऊपर उठ कर पर्वत चोटी के पार जा पाते हैं। इस प्रकार की मेघों की रौद्रावस्था वहाँ के वन्यजीवों और जनमानस को सतर्क करती है कि भविष्य में जब भी इस तरह बादलों का घनत्व बढ़ता दिखे तो वे सतर्क हो जाया करें।

**

पचहत्तर साल की आज़ादी यात्रा

सोनिका नेगी, वै.स. , प्रा. मौ. कें. नागपुर

लड़े वे वीर जवानों की तरह
ठंडा खून फ़ौलाद बना
मरते- मरते भी मार गिराये
तभी यह देश आजाद हुआ

प्रस्तावना

स्वतंत्रता सभी मनुष्यों का जन्म सिद्ध अधिकार है एवं हमने इस स्वतंत्र राष्ट्र भारत में जन्म लिया यह हमारा सौभाग्य है। लगभग 200 वर्षों के कठिन संघर्ष के बाद 15 अगस्त 1947 को भारत आजाद हुआ एवं 16 अगस्त 1947 को हमारे पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरु जी ने लाल किले पर स्वतंत्र भारत का झंडा लहराया। भारत आज़ादी के बाद स्वर्णिम राष्ट्र कहलाया।

आज़ादी के बाद स्वतंत्र भारत का संवैधानिक प्रारूप

स्वतंत्रता के उपरांत आजाद भारत को स्वावलंबी बनाने एवं राष्ट्र की एकता के लिए राष्ट्रगान, राष्ट्रभाषा और संविधान की आवश्यकता थी। अपितु राष्ट्रगान श्री रविन्द्रनाथ टैगोर जी के द्वारा 1911 में लिखा गया था, परन्तु जन- गण- मन राष्ट्रगान वर्ष 1950 में बनाया गया। तत्पश्चात बाबा साहेब डॉ.भीमराव अंबेडकर द्वारा स्वतंत्र भारत को 26 जनवरी 1950 को संविधान दिया गया। इस उपलक्ष्य में प्रत्येक वर्ष 26 जनवरी को गणतंत्र दिवस के रूप में मनाने की घोषणा की गई।

भारत का संविधान पूरे विश्व के लिए एक मिसाल है। भारत के संविधान में सभी जाति, वर्ग, धर्म, लिंग को समान अधिकार दिया गया। संविधान के अनुसार हिंदी को राष्ट्रभाषा एवं 18 अन्य भाषाओं को प्रादेशिक भाषाओं का दर्जा दिया गया है।

मैं हिन्दू हूँ, तू मुस्लिम है, पर है दोनों इंसान।
ला मैं तेरी गीता पढ़ लूं, तू पढ़ ले मेरी कुरान।
आज आज़ादी के दिन पर है बस मेरा यही अरमान।
एक थाली में खाना खाए पूरा हिंदुस्तान।

भारत के संविधान की सबसे खास बात यह है कि इसके अनुसार भारत को “धर्मनिरपेक्ष” राष्ट्र घोषित किया गया। यहाँ हर धर्म को समान महत्व दिया गया है जो कि अपने आप में ही गौरव की बात है।

स्वतंत्र भारत की उपलब्धियाँ

स्वतंत्र भारत की सर्वप्रथम उपलब्धि यह रही कि स्वतंत्रता के पश्चात् लगभग छह सौ राजाओं की रियासतों को खत्म करके उन्हें एक भारत में जोड़ दिया गया। कहा भी जाता है भारत “अनेकता में एकता” का प्रतीक है।

तत्पश्चात भारत ने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा और तब से भारत ने शिक्षा, राजनैतिक, सामाजिक, सैन्य, तकनीकी एवं प्रौद्योगिक क्षेत्र में अविश्वसनीय पहचान बनाई है। कृषि से लेकर विज्ञान तक भारत विश्व भर में अपना लोहा मनवा चुका है।

आज भारत में गांव-गांव में स्कूल/कॉलेज हैं। बच्चे, बूढ़े, नौजवान सभी की शिक्षा को प्रोत्साहन दिया जाता है। बेटियों की शिक्षा को भी महत्व दिया जाता है। आज भारत की बेटियां अंतरिक्ष में पहुँच चुकी हैं। शिक्षा के साथ-साथ खेलों में भी भारत विश्व भर में प्रसिद्ध है। हाल ही में हुए टोक्यो ओलंपिक्स में भारत ने उम्दा प्रदर्शन दिखाया है।

कृषि के क्षेत्र में भी काफी प्रगति हुई है। उत्पादन से लेकर गुणवत्ता तक काफी हद तक सुधार आया है। स्वतंत्रता के बाद सरकार ने विकास की कई योजनाओं एवं नीतियों पर काम किया जो काफी स्तर तक कारगर रहे हैं।

आज चिकित्सा के क्षेत्र में भारत काफी आगे बढ़ चुका है। पोलियो, चेचक जैसी गंभीर बीमारियां भारत में खत्म हो चुकी हैं। वर्तमान में कोविड-19 के लिए सर्वप्रथम भारत में ही वैक्सीन बनायी गई। तकनीकी क्षेत्र में भी भारत अग्रणी रहा है और हमने कई उपग्रह भी अंतरिक्ष में सफलतापूर्वक भेजे हैं, जिनकी सहायता से आज हम दूर-दराज की दुर्लभ चित्रों की भी जानकारी ले सकते हैं। भारत की प्रति व्यक्ति आय में भी कई गुना बढ़ोतरी हुई है।

देह से निकलेगी न मरकर भी वतन की उल्फत
मेरी मिट्टी से भी खुशबू-ए-वफ़ा आएगी।

आज पूरा विश्व आतंकवाद की समस्या से जूझ रहा है। आतंकवाद आजाद देश पर एक कलंक है। आतंकवादी निर्दोष लोगों की जान लेते हैं इसलिए जनता का राजनैतिक नीतियों एवं

रक्षातंत्र से विश्वास उठ जाता है। अतः एक प्रगतिशील भारत के लिए आतंकवाद से एकजुट होकर लड़ना अनिवार्य है।

आज़ादी के ऊपर एक और जो बड़ी समस्या है वह है भ्रष्टाचार जो देश को खोखला कर रहा है। अतः हमें भ्रष्टाचार विरोधी कड़े कानून लाकर और जनता को जागरुक कर इसे जड़ से मिटाना है।

उपसंहार

तुलसीदास जी ने कहा है "पराधीन सपनेहु सुख नाहि" अर्थात पराधीनता सपने में भी सुख नहीं दे सकती। अतः यह हमारा सौभाग्य है कि हमें आजाद भारत की पुण्य भूमि पर जन्म मिला एवं आज़ादी का पवित्र वातावरण प्राप्त हुआ।

आज़ादी के 75 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष में भारत में "आज़ादी का अमृत महोत्सव" मनाया गया। अतः हमें यह आज़ादी चिरकाल तक बरकरार रखते हुए भारत को दोबारा सोने की चिड़िया बनाना है। इसके लिए हमें अपने अधिकारों से ज्यादा अपने कर्तव्यों का पालन करना है और यही हमारा ध्येय है। भारत को विश्व में महाशक्ति बनाने के लिए हमें निरंतर प्रयास करना है, ताकि हमारा भारत सदैव खुशहाल रहे एवं महान बना रहे।

जो भरा नहीं है भावों से
बहती जिसमें रसधार नहीं
वह हृदय नहीं वह पत्थर है,
जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं।

जय हिंद! जय भारत! मेरा भारत महान!

**

हिंदी हमारी पहचान हमारा गर्व

श्री निखिल वर्मा, वै. स.,मौ. का. पेंड्रा रोड

बिखरे स्वरों को जोड़ती, वह साज हिंदी है।
मेरी तुम्हारी आत्मा की, आवाज हिंदी है।
कवि ह्रदय की; कलम-ए-तलवार हिंदी है।
बोलियों में विश्व की, सरताज हिंदी है।

सूखे मरुस्थल को, जो जल से, सींचते बादल,
उन घटाओं से, बरसात की, एक आस हिंदी है।
खेत श्रम से जोतता जो, लेकर अपना एक हल,
उस कृषक के, बेचैन मन की, प्यास हिंदी है।

शक्ति है, पूजा है, धर्म है, संकल्प है,
आस है, विश्वास है, अरदाज हिंदी है।
संस्कृतियों का है उत्थान, आंदोलनों का ये विचार।
युद्ध की घोषित विजय की जय-जयकार हिंदी है।

कोटी सवा सौ हृदयों की मुस्कान हिंदी है।
यह हमारे भारत की, पहचान हिंदी है।
ज्ञानियों का ज्ञान है, तप का प्राण हिंदी है।
ये हमारा मान, ये अभिमान हिंदी है।

**

नारी

सोनम, वै. स., प्रा.मौ.कें. नागपुर

वो कहते हैं तुम बेटी हो
घर में सबकी चहेती हो
फिर क्यों भ्रूण में ही मारते हैं?

वो कहते हैं तुम लक्ष्मी हो
भाग्य जगा दो, वो सुलक्षणी हो
फिर क्यों दहेज़ लेकर ही अपनाते हैं?

वो कहते हैं तुम अर्धांगिनी हो
इस जीवन की अधिकारिणी हो
फिर क्यों स्वयं प्रधान कहलाते हैं?

वो कहते हैं तुम देवी हो
पूजनीया, पापविनाशिनी हो
फिर क्यों दुष्कर्म कर जाते हैं?

वो कहते हैं चुप रहती हो,
क्यों सहती हो?
फिर क्यों मेरे आत्मबल को अहंकार बतलाते हैं?

वो कहते हैं नारी शक्ति हो
स्वाबलंबी, स्वाभिमानी हो
फिर क्यों हर पड़ाव पर अस्मिता प्रहरी बिठाते हैं?

वो जो भी कहें, पर सच तो यह है
मैं एक नारी हूँ
माना सबकी प्यारी हूँ पर,
मेरे मौलिक अधिकारों को नारीवाद कहा सबने
सबल मन को अनदेखा कर निर्बल तन देखा जग ने

अब ठान लिया तो अदम्य हूँ मैं
सोच बढ़ा कर आगे को बढ़ती जाऊँगी
निर्बल तन से नहीं, सफल कर्मों से पहचानी जाऊँगी
जगत जननी यूँ ही नहीं मैं, यह सिद्ध कर दिखलाऊँगी।

**

दृढ़ संकल्प

श्रेष्ठ गौतम, वै. स., प्रा. मौ. कें. नागपुर

चलो सदा दिन- रात, निरंतर
किस्मत ढूंढे तुमको
चलते जाओ इत्मिनान से,
मत भटकाओ मन को।

जब तुमने है प्रण ही कर लिया
मंज़िल मिल जाएगी
दुष्करता का समुद्र पार कर
लक्ष्य है पाना तुमको।

असफलता से व्यथित कर लो मन
ये तो ठीक नहीं है,
क्यों लगता है तुमको भाई
रस्ता याद नहीं है।

दृढ़ संकल्प साधकर तू खुद
रंग बदल दे जल का
फिर क्यों डरता चलने से तू
नक्षत्रों का विजेता

तुझमें है सामर्थ्य निहित बस
पूरी जान लगा दे,
समय आ गया वक्त बदल दे
आने वाले कल का

बिन पाए मंज़िल अब पीछे
मुड़ना ठीक नहीं है
क्यों लगता है तुमको भाई
रस्ता याद नहीं है।

चाँद, सूर्य, पृथ्वी सा डटकर
सबको देना सहारा
आशाओं से तुम्हे देखता
हिंदुस्तान हमारा

जिस तन से है बहा पसीना
कुछ कर जाएगा ही,
अमर किसी दिन हो जाएगा
ये व्यक्तित्व तुम्हारा!

ये सब करना कठिन मगर है
नामुमकिन तो नही है,
क्यों लगता है तुमको भाई
रस्ता याद नहीं है।

**

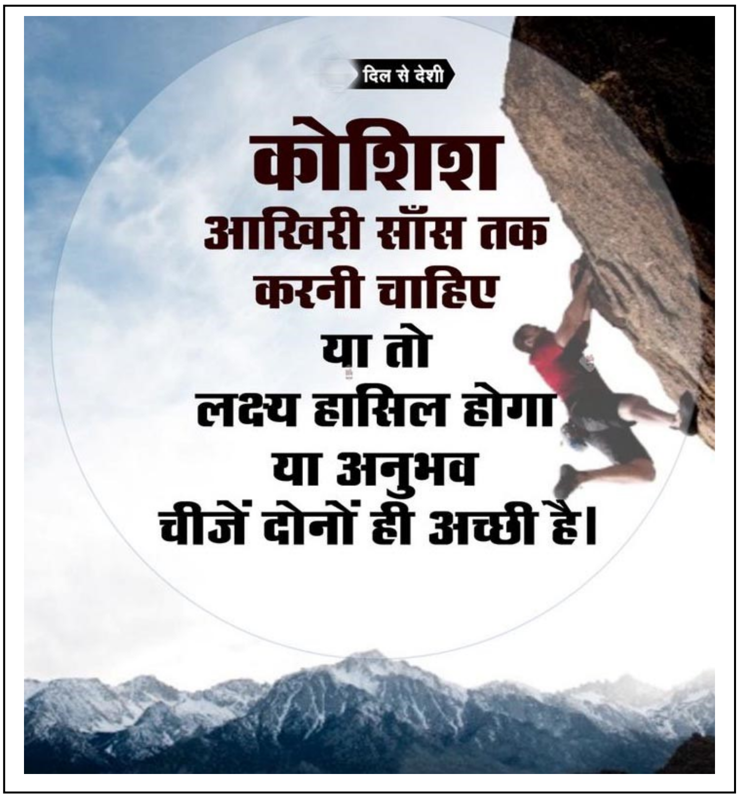

अग्निपथ

श्री निखिल वर्मा, वै. स.,मौ. का. पेंड्रा रोड

सत्य के पथ पर पथिक कौन कब तक टिक सकेगा,
इसलिए मंजिल तलक, यह पथिक पैदल चलेगा।
क्या पता कुछ मीत मेरे, साथ छोड़ेंगे हमारा।
यह अकेला था सदा, यह अकेला ही लड़ेगा।

प्राण घातक शक्तियों ने, प्राण साधे हैं हमेशा।
अग्निपथ पर पाँव धरकर, दर्द को आराम होगा।
विषभरे पात्रों के तल में, कुछ बहुत अमृत मिलेगा।
इसलिए मंजिल तलक, यह पथिक पैदल चलेगा।

मातृभूमि की पुकारें, कह रही विश्राम मत कर,
धैर्य तजकर ही तुम्हारे, धरा का कल्याण होगा।
अड़चनों का शैल भी, राह का राही बनेगा।
इसीलिए मंजिल तलक, यह पथिक पैदल चलेगा।

**

मंत्रीजी का आगमन

श्री गुहा नियोगी,सेवानिवृत्त सहायक मौ. वि.,
मौ. का. जबलपुर

मंत्रीजी के आगमन की खबर से
मेरा भाग्य खिल उठा,
नगर निगम जाग उठा,
सभी विभागों को सतर्क किया गया।

स्मार्ट सिटी के कार्यों ने जोर पकड़ लिया,
करोड़ों रुपए खर्च कर हेलीपैड बनवाया जा रहा है,
आपके भाषण देने के मंच को अधिक ऊपर उठाया जा रहा है।
आपके आवागमन पथ का विस्तारीकरण, नवीनीकरण कराया जा रहा है।

गड्ढे ना दिखे इसका विशेष ध्यान रखा जा रहा है,
अंधेरा भाग गया, नए पोल लगाए जा रहे हैं।
सभी खंभों पर हैलोजन, मरकरी लगाने का काम चल रहा है।
यातायात मार्गों पर आवश्यकतानुसार संकेत (सिग्नल) लगाए जा रहे हैं।

पूर्व में लगे संकेत सुचारू रूप से कार्य करने लगे हैं,
ठेकेदार को मौका मिला काम का, इंजीनियर को खाने का।
स्कूलों में शिक्षक समय पर आ रहे हैं, विद्यार्थियों को पढ़ा रहे हैं।
छात्र- छात्राएं ड्रिल करते या पढ़ते नजर आ रहे हैं।

पुलिस मैदान पर पुलिसवाले परेड करते दिख रहे है।
राशन की दुकान से राशन मिलने लगा है।
गवैयों को मौका मिला गाने का, बजाने वालों को वादन का।
सफाई कर्मचारी सफाई कर रहे हैं,

वरना स्वतंत्रता दिवस, गणतंत्र दिवस पर ही सफाई होती थी।
वृक्षा रोपण के कार्यक्रमों का तांता लग गया है,
सारे नगर को वंदनवार से सजाया जा रहा है।
आप इस नगर में बार-बार पधारें,
ताकि हमारी किस्मत खिल सके।

**

आज़ादी से अब तक का सफ़र

श्री अमित मेहरा, वै.स., प्रा. मौ. कें. नागपुर

प्रस्तावना

भारत को दिनांक 15 अगस्त 1947 को अंग्रेजों की लगभग 200 साल की गुलामी से आज़ादी प्राप्त हुई। तब से हम 15 अगस्त को स्वतंत्रता दिवस के रूप में मना रहे हैं तथा 26 जनवरी 1950 को बाबा साहब भीमराव अंबेडकर एवं उनके सहयोगियों द्वारा लिखित संविधान से भारत आगे बढ़ रहा है। 1947 का भारत आज की तरह सुदृढ़ स्थिति में नहीं था। तब का पिछड़ा हुआ देश (जो अनेक आक्रांताओं एवं अंग्रेजों द्वारा लूटा गया था) आज का सबसे विकासशील देश है।

"आज़ादी नहीं इतनी आसान
इसे पाने मे कितने ही महानायकों ने
कुर्बान कर दी अपनी जान"

भारत के विकास के कुछ पड़ाव

आजाद भारत में कांग्रेस, भारतीय जनतापार्टी, जनतादल आदि पार्टियों की सरकार रही है। 1951 से योजना आयोग द्वारा पंचवर्षीय योजनाओं के माध्यम से भारत का विकास किया गया तथा प्रथम पंचवर्षीय योजना ने अपने लक्ष्य (2.1%) से ज्यादा (3.6%) की विकास / वृद्धि दर प्राप्त की।

- 1964 में श्री लालबहादुर शास्त्री ने श्वेत व हरित क्रांति को प्रोत्साहित किया तथा उससे 1978/79 में 131 मिलियन टन अनाज उत्पादन रिकॉर्ड हुआ।
- 1969 में इंदिरा गांधी ने कृषि में ऋण को बढ़ावा देने हेतु 14 बैंकों का राष्ट्रीयकरण किया।
- 1991 में श्री पी.वी.नरसिम्हा राव ने उदारीकरण, निजीकरण, वैश्वीकरण पर बल दिया जिससे प्रति व्यक्ति आय, विदेशी विनिवेश व विकास दर में वृद्धि हुई।
- श्री अटल बिहारी बाजपेयी ने चतुर्भुज योजना द्वारा दिल्ली, चेन्नई, कोलकाता एवं मुंबई को एक दूसरे से जोड़ा तथा प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना द्वारा गांवों को सड़क से

जोड़कर उनके विकास को प्रगति दी। आज भारत में प्रतिदिन 37 किलोमीटर 6 से 12 लेन सड़क का निर्माण किया जा रहा है।

- प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने 2008 की आर्थिक मंदी से देश को बाहर निकाला।
- श्री नरेंद्र मोदी ने योजना आयोग की जगह नीति आयोग की स्थापना की। मेक इन इंडिया, स्किल इंडिया, उज्ज्वला योजना, जीएसटी आदि के माध्यम से देश को प्रगति प्रदान की।
- 1999 में विनिवेश मंत्रालय की स्थापना से विदेशी विनिवेश बढ़ा, जो भारत के विकास मे सहायक सिद्ध हुआ है।

आजाद भारत की कुछ उपलब्धियाँ

- शिक्षा एवं डिजिटल युग: जब भारत आजाद हुआ भारत की साक्षरता दर केवल 12% थी। अब 2011 की जनगणना के अनुसार भारत की साक्षरता दर 74% है, जिसमे पुरुष साक्षरता 82.14% एवं महिला साक्षरता 65.46% है। 2009 में शिक्षा को मौलिक अधिकार बनाया गया। भारत का मिड-डे मील स्कूल भोजन कार्यक्रम में विश्व का सबसे बड़ा कार्यक्रम है जिसमें रोजाना 120 मिलियन विद्यार्थी खाना खाते हैं। भारत में वर्तमान में 20 IIMs, 31 NITs, 23 AIIMS, 23IITs, ISRO, BARC आदि प्रसिद्ध संस्थाएं है।
- भारत की अर्थव्यवस्था: 1947 में भारत की जीडीपी मात्र 2 .7 लाख करोड थी, तो 20 21 में अनुमानित 135.13 लाख करोड़ रुपए है। अब भारत दुनिया की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है।
- प्रौद्योगिकी, तकनीकी विज्ञान एवं अंतरिक्ष : भारत आईटी सेक्टर में अग्रणी बना हुआ है तथा भारत के इंजीनियर एवं वैज्ञानिक दुनिया के हर कोने में अपना वर्चस्व बनाए हुए हैं। दुनिया को महत्वपूर्ण कंपनियों के सीईओ भारतीय हैं जैसे- गूगल के सुंदर पिचाई, माइक्रोसॉफ्ट के सत्य नडेला, पेप्सी की इंदिरा नूई, एडोब सिस्टम के शांतनु नारायण, मास्टर कार्ड के अजयपाल सिंह बांगा, आदि।
- भारत ने 1975 में अंतरिक्ष में प्रथम उपग्रह 'आर्यभट्ट' सफलतापूर्वक भेजा तथा चंद्रयान एवं मंगलयान को भी प्रथम बार में ही अंतरिक्ष में भेजने में सफल रहा। चंद्रमा पर मिट्टी में मौजूद पानी के कणों की खोज की तथा परमाणु ऊर्जा में भी भारत संपन्न है।

- उत्पादन एवं उपभोक्ता: भारत सबसे अधिक दोपहिया वाहन का उत्पादक है और इसने सबसे सस्ती कार नैनो बनाई । भारत दालों का सबसे बड़ा उपभोक्ता एवं उत्पादक है। भारत चीनी का दूसरा एवं कपास का तीसरा सबसे बड़ा उत्पादक देश है। भारत में कोरोना के समय में अनेक देशों को अनाज भेजा है। भारत सोने का सबसे अधिक आयात एवं उपभोक्ता देश है। हीरों का सबसे अधिक प्रसंस्करण भारत में ही होता है। 2020 में भारत में रिकॉर्ड 305.43 मिलियन टन अनाज उत्पादित हुआ है।
- महिला सशक्तिकरण: आज़ादी के तुरंत बाद के भारत में अनेक कुरीतियों एवं रुढिवादों के कारण महिलाओं की स्थिति सुदृढ़ नहीं थी। बाद में सरकारी नौकरी में आरक्षण, महिला आयोग की स्थापना, पढ़ाई में छात्रवृत्ति एवं अनेक अन्य कानूनी अधिकार देकर महिलाओं की स्थिति को सुधारा गया। आज की भारतीय नारी राजनीति, शिक्षा, रोजगार, तकनीकी के साथ हर क्षेत्र में पुरुष से कंधे से कंधा मिलाकर चल रहीं हैं। प्रमुख उदाहरण इंदिरा गांधी, वसुंधरा राजे, पी.टी.उषा, मीराबाई चानू, किरण बेदी आदि हैं।
- मतदान का अधिकार: भारत अपने प्रत्येक वयस्क नागरिक को समुदाय या जाति के निरपेक्ष मतदान का अधिकार देता है जो कि एक गणतंत्र एवं लोकतंत्र के लिए अत्यावश्यक है। अमेरिका कुछ मानदंडों के आधार पर मतदान का अधिकार देता है।
- भारतीय रेलवे: आज का भारतीय रेल नेटवर्क 67956 किलोमीटर के मार्ग, 7349 स्टेशनों, 13169 यात्री रेलगाड़ियों, 8479 माल गाड़ियों के साथ 23 मिलियन यात्रियों को प्रतिदिन यात्रा करवाता है तथा 3 मिलियन टन माल प्रतिदिन ढोता है। यह विश्व का सबसे बड़ा रेल नेटवर्क है जो आज़ादी के समय केवल 3300 किलोमीटर मार्ग का था एवं रेलगाड़ियां भी आज की तरह सुख-सुविधाओं से भरपूर नहीं थी। अब तो भारत जल्द ही बुलेट ट्रेन का सपना भी पूरा करने वाला है।
- सशस्त्र बल: भारत दुनिया की चौथी सबसे बड़ी सैन्य शक्ति है जो कि लगभग 14.55 लाख एक्टिव हथियारबद्ध मिलिट्री कर्मी रखता है तथा यह अत्याधुनिक उपकरणों, मिसाइलों, परमाणु बमों, पनडुब्बियों आदि से संपन्न है तथा हाल ही में भारत ने राफेल को फ्रांस से आयात किया है।
- भारत में विद्युत उत्पादन: आज़ादी के समय भारत में प्रतिव्यक्ति विद्युत 16.3 kwh थी जो कि 2020 में 1208 kwh है। अतः अब भारत विद्युत के मामले में आज़ादी के समय

से बहुत आगे है। भारत में आज़ादी के समय टोटल 1362 मेगा वाट इंस्टाल क्षमता थी, जो कि अब 383 मेगा वाट है।

- भारत में स्वास्थ्य: स्वास्थ्य के क्षेत्र में भी भारत ने आज़ादी के बाद से बहुत सुधार किया है। आज भारत के हर छोटे-बड़े गांव में अस्पताल है तथा भारत ने स्वदेशी कोरोना वैक्सीन जल्द ही बना ली थी।
- हवाईयात्रा: हवाई यात्रा को किफायती बनाने हेतु उड़ान योजना की शुरुआत की गयी तथा जून 2020 के अनुसार भारत में कुल 153 हवाई अड्डे हैं जिनमे से केवल 114 डोमेस्टिक उपयोग के हैं।

भारत में समस्याएं

उपरोक्त सभी उपलब्धियों के बावजूद भारत बेरोजगारी, भुखमरी, नक्सलवाद, पड़ोसी देशों के साथ सीमा विवाद, आतंकवाद एवं भ्रष्टाचार से जूझ रहा है।

उपसंहार

भारत की कुशल नीतियों एवं नागरिकों के समझदारी एवं सहयोग से हम आनेवाले भारत को विकासशील से विकसित बना सकते हैं एवं भारत को महाशक्ति बनाने में योगदान दे सकते हैं।

**

आज़ादी के बाद मौसम विभाग का देश को योगदान

सुश्री सपना मीणा, वै.स., प्रा. मौ. कें. नागपुर

भारत जब अंग्रेजों का गुलाम था, वह न तो अपनी मर्जी का कुछ कर सकता था न ही उसे अपने जीवन के निर्णय लेने की कोई आज़ादी थी। भारत पूरी तरह गुलामी की बेड़ियों से बंधा हुआ था। सही मायने में जीवन जीने की हमें कोई आज़ादी नहीं थी परन्तु आज स्वतंत्रता के 75 वर्ष बाद हम उस मुकाम पर पहुँच गए हैं। इन 75 वर्षों में हर एक दिन हमने प्रगति की सीढ़ी चढ़ी है। हर क्षेत्र में हम दिन-प्रतिदिन प्रगति कर रहे हैं। मौसम विभाग की उन्नति भी इन प्रगतियों में से एक सफल कदम है।

स्वतंत्रता से पहले और स्वतंत्रता के कुछ साल बाद भी हमारे देशवासी प्राकृतिक आपदाओं से जूझते थे। मौसम की मार में कईयों ने अपने घर और रिश्ते खोए, जो कि एक अपरिवर्तनीय दुःख है। परन्तु स्वतंत्रता के बाद हमने हर रोज मौसम के क्षेत्र में प्रगति की और आज भी कर रहे हैं। मौसम विभाग इस मुकाम पर पहुँच गया है कि वह भारतीयों की जान, घर-बाड़ अपनी भविष्यवाणी से बचाने में काफी समर्थ हो रहा है। मौसम विभाग रोज तापमान, हवा, वायुदाब आदि पर नजर रखता है। आज आज़ादी के बाद हम मौसम से जुड़े नए-नए उपकरणों के आविष्कार और उनके प्रयोग से शुद्ध आकलन तथा पूर्वानुमान करने के योग्य हुए हैं। इसके द्वारा अब तूफ़ान और चक्रवातों के पूर्वानुमान से हम कई जान-माल की रक्षा कर सकते है।

भारत एक कृषि प्रधान देश है और इसका एक बड़ा भाग खेती पर निर्भर करता है। खेती भारत मे लोगों की रोजी-रोटी और जीवन-यापन का साधन है। कृषि उत्पाद को तो गरीब से अमीर सभी व्यक्ति ग्रहण करते हैं। किसान इसी खेती को करने के लिए मौसम विभाग के अनुमान और आकलन पर निर्भर रहते हैं। वे अपने-अपने क्षेत्र के मौसम विभाग कार्यालय से जुड़े रहते हैं और उनसे सलाह-मश्वरा लेकर मौसम की संभावना के आधार पर खेती करते हैं, बीज बोते हैं। इस तरह सही समय पर बीज बोने के कारण उनके खेत की उपज सुरक्षित रहती है और नुकसान भी नही होता जो कि भूख, गरीबी, बेरोजगारी आदि जैसी समस्याओं से देश को बचाती है।

मौसम विभाग आम जनता के लिए भी आवश्यक सूचना प्रदान करता है। घर का कोई कार्यक्रम हो या कहीं घूमने की योजना, हम मौसम को ध्यान में रखते हुए सुविधानुसार व्यवस्था कर सकते हैं। मौसम विभाग सभी अनुमान और आंकड़ों की समयबद्ध जानकारी ऑनलाइन

उपलब्ध करा देता है जिससे आम आदमी आसानी से जानकारी लेकर उसका उचित उपयोग ले सके और नुकसान से बच सके। यह प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से देश की बढोत्तरी मे योगदान है।

देश की सफलता हर एक व्यक्ति की सफलता से जुड़ी है। इस प्रकार मौसम विभाग का देश की सफलता और विकास मे एक महत्वपूर्ण योगदान है और यह प्रगति हम तभी कर पाए हैं जब अपनी आज़ादी अपने हाथों में है। स्वतंत्रता के बाद हमें अपनी इच्छानुसार कार्य करने और सोचने का अवसर मिला जिससे इन 75 वर्षों मे हमने हमारी क्षमता प्रगति की राह मे लगाई है और उसी प्रगति का एक हिस्सा मौसम विभाग भी है।

**

प्रयोजन मूलक हिंदी

शांता उन्नीकृष्णन, वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी,
प्रा. मौ. कें. नागपुर

भारत वर्ष में 1947 से पूर्व अधिकांश कार्यों की भाषा अंग्रेजी थी। कचहरियों में हालाँकि देवनागरी को स्वीकृति प्रदान की गई थी, लेकिन वहां भी अंग्रेजी और उर्दू भाषा को ही प्रधानता दी जाती थी। भारतीय संविधान में यह प्रावधान किया गया कि भारतीय संघ की राजभाषा हिंदी तथा लिपि देवनागरी होगी। हिंदी के राजभाषा के रूप में स्वीकृति के पश्चात् भाषा के मानकीकरण एवं नियोजन की प्रक्रिया को भी बल मिला।

भाषा अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है, जिसके द्वारा समूह, व्यक्ति आदि में विचारों का आदान-प्रदान संभव होता है। संप्रेषण में शारीरिक क्रियाओं के साथ भाषा की अहम् भूमिका रहती है। इस प्रकार भाषा का विकास मानव के सामाजिक जीवन के विभिन्न प्रयोजनों के लिए ही नहीं बल्कि दैनिक जीवन के विभिन्न उद्देश्यों की परिपूर्ति करने के लिए भी होता है। सामाजिक जीवन में इन विभिन्न संदर्भों, स्थितियों और कार्यक्रमों में भाषा का प्रयोग होने से उसके कई रूप उभरने लगते है। “वस्तुतः- भाषा अपने आप में समरूपी होती है, परंतु प्रयोग में आने से वह विषम रूपी बन जाती है। इसका कारण यह है कि मनुष्य का मस्तिष्क इतना सृजनशील होता है कि विभिन्न स्थितियों, संदर्भों और उद्देश्यों के अनुरूप वह भिन्न-भिन्न भाषा शैलियों का प्रयोग करता है और ये शैलियाँ सामाजिक, सांस्कृतिक और प्रयोजनपरक संदर्भों में नियंत्रित होती है। भाषा का यह पक्ष प्रकार्यात्मक आयाम है, जिसका प्रयोग किसी प्रयोजन विशेष या कार्य विशेष के संदर्भ में होता है। यह भाषा प्रशासनिक व आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करती है। भाषा के इस पक्ष का संबंध हमारी संवैधानिक राजभाषा हिंदी से है। यह हमारी प्रशासनिक, तकनीकी, अनुवादीय, क्षेत्र विशेष की भाषा होती है।

भाषा के दो भेद किए जाते हैं: प्रयोजनमूलक भाषा और साहित्यिक भाषा, जो एक ही है। भाषा की मुख्य तीन शब्द शक्तियाँ होती है। एक अभिधा- सीधा अर्थ, जैसे यह “उल्लू” है। प्राणी विशेष। दूसरा लक्षणा- जिसमें गुण समानता के कारण लक्षित करके कहा जाता है- आप “उल्लू” हो। व्यक्ति विशेष को उल्लू के गुणों की समानता के कारण कहा जाता रहा है। तीसरा व्यंजना

शब्दशक्ति, जहाँ न तो प्रत्यक्ष में सीधा अर्थ होता है न लक्षित किया हुआ। बल्कि तीसरा ही अर्थ लिया जाता है- जिसे व्यंजनार्थ कहते हैं। जैसे कबीर का निम्न दोहा-

"माली आवत देखकर, कलियन करि पुकार।
फुलै- फुलै चुन लिए, काल हमारी बार।"

यहाँ माली का तात्पर्य "यमदूत", कलियों का तात्पर्य नवयुवक-युवतियों, फूलों का अर्थ "प्रौढ" यह व्यंजनार्थ शब्द-शक्ति है। साहित्यिक भाषा में अर्थ व्यंजनाश्रित व लाक्षणिक होता है तथा प्रयोजनमूलक भाषा में कहनेवाले का निश्चित और सही आशय समझना मुख्य उद्देश्य होता है। इसमें यही प्रयास रहता है कि स्वतः स्पष्ट और स्वतः पूर्ण हो तथा वक्ता या लेखक का मत निश्चित और सटीक हो अर्थात अभिधार्थ ही लिया जाता है, उदाहरण के लिए "पानी" शब्द का प्रयोग भाषा में तीन अर्थ में होता है। चमक, जल और इज्जत। रहीम का निम्न दोहा लीजिये-

"रहिमन "पानी" रखिये, बिन "पानी" सब सुन।
"पानी" गए न उबरे, मोती, मानस, चुन।।"

प्रयोजनमूलक भाषा में "पानी" जल या तरल पदार्थ के अर्थ में होता है। चूँकि प्रयोजनमूलक भाषा सीधी सपाट होती है, इसका सामाजिक तथा सांस्कृतिक परम्पराओं से कोई संबंध नहीं होता। जबकि साहित्यिक भाषा लक्षणापरक होती है। उसका संस्कृति से पूर्णतया संबंध होता है। हिंदी में "कमल' "जलज" और पंकज जैसे एक ही अर्थ देनेवाले शब्द अपने भीतर सामाजिक व सांस्कृतिक संदर्भ समेटे हुए होते हैं, जबकि विज्ञान की भाषा में 'कमल' शब्द वनस्पति के रूप में एक विशेष फूल के अर्थ में होता है और इसका संबंध सामाजिक और सांस्कृतिक परंपरा से नहीं होता।

प्रयोजनमूलक हिंदी के अनेक नाम कामकाजी हिंदी, व्यावसायिक हिंदी, व्यावहारिक हिंदी आदि हैं। वास्तव में 'व्यावहारिक हिंदी' नामकरण के प्रयोग से कभी-कभी भ्रम की स्थिति भी पैदा हो जाती है। व्यावहारिक हिंदी से अभिप्राय ऐसी हिंदी से लगाया जाता है, जिसमें भाषिक और सामाजिक संदर्भ की अपेक्षा भाषा के व्यावहारिक संदर्भ पर अधिक बल दिया जाता है। । व्यावहारिक हिंदी से तात्पर्य लगाया जाता है, दैनिक जीवन में कार्य संपन्न करने के लिए

उपयोग में लायी जानेवाली भाषा। इस भाषा में व्याकरणिक संरचना पर ध्यान न देकर, उसकी व्यावहारिकता पर बल दिया जाता है।

भारतीय संविधान ने हिंदी को राजभाषा घोषित किया है। प्रयोजनमूलक हिंदी के विविध क्षेत्रों में प्रयोग व अध्ययन-अध्यापन तथा रोजी-रोटी की भाषा बनाने से ही वह राजभाषा बन सकेगी और राष्ट्रीय अस्मिता का प्रतीक हिंदी अपना यथोचित स्थान प्राप्त कर पाएगी। प्रयोजनमूलक हिंदी के विकास के लिए यह आवश्यक है की प्रशासन के सारे कार्य जनता की भाषा में हो, ताकि जनता और प्रशासन के बीच कोई दीवार खडी न हो पाए।

इस तरह प्रयोजनमूलक हिंदी के समुचित प्रयोग द्वारा हिंदी को नित्य दैनिक कार्यों से जोड़कर हम अपनी हिंदी भाषा को व्यवहार के सभी क्षेत्रों से जोड़ते हुए, उसे ज्ञान-विज्ञान की भाषा बनाने में अवश्य सफल होंगे और इससे हिंदी को राष्ट्रभाषा के पद पर पूर्णतः आसीन करने में भी सफल हो पाएंगे।

**

उष्ण लहर के लिए क्या करें और क्या न करें?

सुश्री रिंकु हाडके, वै.स., प्रा. मौ. कें. नागपुर

करने योग्य:

सभी के लिए:

- रेडियो सुने, टीवी देखें, स्थानीय मौसम समाचार के लिए समाचार पत्र पढें या मौसम की जानकारी से संबंधित मोबाइल ऐप डाउनलोड करें।
- पर्याप्त पानी पिया करें-प्यास न लगने पर भी। मिर्गी या दिल के रोगी, गुर्दे या जिगर की बीमारी जो द्रव-प्रतिबंधित आहार पर हैं या कोई समस्या है, द्रव प्रतिधारण के साथ तरल बढ़ाने से पहले डॉक्टर से परामर्श लें।
- अपने आप को हाइड्रेटेड रखने के लिए ओआरएस (ओरल रिहाइड्रेशन सॉल्यूशन), घर का बना पेय जैसे लस्सी, तोरानी (चावल का पानी), नींबू पानी, छाछ, नारियल पानी आदि का उपयोग करें।
- हल्के रंग के, हल्के, ढीले, सूती कपड़े पहनें।
- अगर बाहर हैं तो सिर ढक लें; कपड़े, टोपी या छतरी का प्रयोग करें। अपनी आंखों की सुरक्षा के लिए धूप के चश्मे का प्रयोग करें और अपनी त्वचा की सुरक्षा के लिए सनस्क्रीन का प्रयोग करें।
- प्राथमिक चिकित्सा का प्रशिक्षण लें।
- बुजुर्गों, बच्चों, बीमार या अधिक वजन वालों का विशेष ध्यान रखें क्योंकि उनके अत्यधिक गर्मी के शिकार होने की संभावना अधिक होती है।

नियोक्ता और श्रमिक के लिए :

- कार्यस्थल पर ठंडा पेयजल उपलब्ध कराएं।
- सभी श्रमिकों के लिए आराम करने के लिए शेड (छाया), साफ पानी, छाछ, आइस पैक के साथ प्राथमिक चिकित्सा किट और ओआरएस (ओरल रिहाइड्रेशन सॉल्यूशन) प्रदान करें।
- कार्यकर्ताओं को सीधी धूप से बचने के लिए सावधान करें।
- दिन के ठंडे समय मे ज़ोरदार काम शेड्यूल करें।
- बाहरी गतिविधियों के लिए आराम की आवृत्ति और अवधि बढ़ाएँ।
- उच्च ताप वाले क्षेत्र में नए कामगारों को हल्का काम और कम घंटे दें।
- गर्भवती महिलाओं और चिकित्सा स्थिति वाले श्रमिकों पर अतिरिक्त ध्यान दिया जाना चाहिए।

- हीट वेव अलर्ट के बारे में कार्यकर्ताओं को सूचित करें।

अन्य सावधानियां :

- जितना हो सके घर के अंदर ही रहें।
- नमक और जीरा के साथ प्याज का सलाद और कच्चे आम जैसे पारंपरिक उपचार हीट स्ट्रोक को रोक सकते हैं।
- पंखे, नम कपड़े का प्रयोग करें और ठंडे पानी से बार-बार नहाएं।
- आपके घर या कार्यालय में आने वाले विक्रेताओं और डिलीवरी करने वाले लोगों को पानी की पेशकश करें।
- सार्वजनिक परिवहन और कार-पूलिंग का उपयोग करें। इससे ग्लोबल वार्मिंग और गर्मी को कम करने में मदद मिलेगी।
- सूखे पत्ते, कृषि अवशेष और कचरा न जलाएं।
- जल निकायों का संरक्षण करें। वर्षा जल संचयन का अभ्यास करें।
- ऊर्जा दक्ष उपकरणों, स्वच्छ ईंधन और ऊर्जा के वैकल्पिक स्रोतों का उपयोग करें।
- अगर आपको चक्कर या बीमार महसूस होता है, तो तुरंत डॉक्टर से मिलें या किसी को तुरंत डॉक्टर के पास ले जाने के लिए कहें।

घर को ठंडा रखने के लिए :

- कम लागत वाली कूलिंग के लिए सोलर रिफ्लेक्टिव व्हाइट पेंट, कूल रूफ टेक्नोलॉजी, एयर-लाइट और क्रॉस वेंटिलेशन और थर्मो कूल इंसुलेशन का इस्तेमाल करें। आप घास के ढेर भी रख सकते हैं या छतों पर पौधें उगा सकते हैं।
- बाहर की गर्मी को प्रतिबिंबित करने के लिए अस्थायी खिड़की परावर्तक जैसे एल्यूमीनियम पन्नी से ढके कार्डबोर्ड को स्थापित करें।
- अपने घर को ठंडा रखें, गहरे रंग के पर्दे, टिंटेड ग्लास/शटर या सनशेड का इस्तेमाल करें और रात में खिड़कियां खोलें। निचली मंजिलों पर रहने की कोशिश करें।
- हरे रंग की छतें, हरी दीवारें और इनडोर पौधे इमारत को प्राकृतिक रूप से ठंडा करके, एयर-कंडीशनिंग आवश्यकताओं को कम करके और अपशिष्ट गर्मी को छोड़ कर गर्मी को कम करते हैं।
- एसी का तापमान **24** डिग्री या इससे अधिक रखें। इससे आपका बिजली का बिल कम होगा और आपका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा।

नया घर बनाते समय :

- नियमित दीवारों के बजाय कैविटी वॉल तकनीक का प्रयोग करें।
- मोटी दीवारों का निर्माण करें। ये इंटीरियर को ठंडा रखते हैं।
- जालीदार दीवारों और झरोखेदार उद्घाटनों का निर्माण करें। वे गर्मी को अवरुद्ध करते हुए अधिकतम वायु प्रवाह की अनुमति देते हैं।
- दीवारों को कोट करने के लिए प्राकृतिक सामग्री जैसे चूना या मिट्टी का प्रयोग करें।
- हो सके तो कांच के उपयोग से बचें।
- निर्माण से पहले किसी भवन प्रौद्योगिकी विशेषज्ञ से सलाह लें।

सनस्ट्रोक से प्रभावित व्यक्ति का उपचार :

- गीले कपड़े का प्रयोग करें / पीड़ित के सिर पर पानी डालें।
- व्यक्ति को पीने के लिए ओआरएस या नींबू शरबत/तोरानी या शरीर को फिर से हाइड्रेट करने के लिए जो भी उपयोगी हो, दें।
- व्यक्ति को तुरंत नजदीकी स्वास्थ्य केंद्र ले जाएं।
- यदि गर्मी में लगातार शरीर का उच्च तापमान, तीव्र सिरदर्द, चक्कर, कमजोरी, मतली या भटकाव का अनुभव हो रहा है, तो एम्बुलेंस को कॉल करें।

करने अयोग्य :

- धूप में बाहर जाने से बचें, खासकर दोपहर 12.00 बजे से दोपहर 3.00 बजे के बीच।
- दोपहर में बाहर जाने पर ज़ोरदार गतिविधियों से बचें।
- नंगे पांव बाहर न निकलें।
- पीक आवर्स में खाना बनाने से बचें। खाना पकाने के क्षेत्र को पर्याप्त रूप से हवादार करने के लिए दरवाजे और खिड़कियां खोलें।
- शराब, चाय, कॉफी और कार्बोनेटेड शीतल पेय से बचें, जो शरीर को निर्जलित करते हैं।
- उच्च प्रोटीन, नमकीन, मसालेदार और तैलीय भोजन से बचें। बासी भोजन न करें।
- पार्क किए गए वाहनों में बच्चों या पालतू जानवरों को अकेला न छोड़ें।
- गरमागरम प्रकाश बल्बों का उपयोग करने से बचें जो अनावश्यक गर्मी उत्पन्न कर सकते हैं, जैसे कि कंप्यूटर या उपकरण।

<u>कृषि में उष्ण लहर के लिए:</u>

करने योग्य:

- खड़ी फसलों में हल्की और बार-बार सिंचाई करें।
- महत्वपूर्ण विकास चरणों में सिंचाई की आवृत्ति बढ़ाएं।

- फसल अवशेष, भूसा/पॉलीथीन के साथ मल्चिंग करें या मिट्टी की नमी को संरक्षित करने के लिए मिट्टी की मल्चिंग करें।
- केवल शाम या सुबह के समय ही सिंचाई करें।
- स्प्रिंकलर सिंचाई का प्रयोग करें।
- यदि आपका क्षेत्र गर्मी की लहर से ग्रस्त है - हवा/आश्रय विराम अपनाएं।

<u>उष्ण लहर में पशुपालन के लिए:</u>

करने योग्य:

- जानवरों को छाया में रखें और उन्हें पीने के लिए साफ और ठंडा पानी खूब दें।
- उन्हें सुबह **11** बजे से शाम **4** बजे के बीच काम न करने दें।
- तापमान को कम करने के लिए शेड की छत को भूसे से ढक दें, इसे सफेद रंग से पेंट करें या गोबर-मिट्टी से प्लास्टर करें।
- शेड में पंखे, पानी के स्प्रे और फॉगर्स का प्रयोग करें।
- अत्यधिक गर्मी के दौरान, पानी का छिड़काव करें और मवेशियों को ठंडा करने के लिए किसी जलाशय में ले जाएं।
- उन्हें हरी घास, प्रोटीन-वसा बाइपास सप्लीमेंट, खनिज मिश्रण और नमक दें। ठंडे घंटों के दौरान उन्हें चरने दें।
- पोल्ट्री हाउस में पर्दे और उचित वेंटिलेशन प्रदान करें।

करने अयोग्य :

- दोपहर के समय मवेशियों को चराने / खिलाने से बचें।

**

हिंदी की पहचान

श्रीमती नीलिमा निनावे, मौ.वि.बी,
प्रा. मौ. कें. नागपुर

हिंदी मेरा ईमान है, हिंदी मेरी पहचान है
हिंदी दिवस के अवसर पर, मेरा आप सभी को प्रणाम है।
हिंदी की बिंदी यह भारत माँ का गहना है
हिंदी को आगे लाना है तो कुछ तो त्याग करना है।

अंग्रेजी छोड़ हमें चलना है, हिंदी की डगर पर
रास्ते के कांटे भी रह जायेंगे फूल बनकर।
हिंदी को आगे बढ़ाना है प्रगति की राह पर
केवल एक दिन ही नहीं, पखवाड़ा मनाना है हमे सालभर।

हिंदी से ही अपना अस्तित्व कायम है, तभी तो अपना देश महान है।
देश की पहचान है वो, सभी भाषाओ में महान है
जो सरल सहज समझी जाए, उसी का हमें सम्मान है।
अंग्रेजी का प्रसार कर हम अपनी भाषा को भूल चले
तिरस्कार मत करो हिन्द माँ का जिसकी गोद में हम पले।

अंग्रेजी के नाम पर हमने अपनी मर्यादा खोई है
हिंदी को दफनाकर हमने अंग्रेजी अपनाई है।
अरे नादानों पराई फिर भी पराई है
हर देश ने अपनी अपनी भाषा अपनाई है।

अच्छा होता है रखना सभी भाषाओ का ज्ञान
पर अपनी राष्ट्रभाषा को भूल जाना है अपनी भारत माँ का अपमान।
हिंदी भाषा का ज्ञान ही उन्नति का आधार है

फिर हम क्यों दूसरों के मोहताज हैं?
हिंदी है राष्ट्रभाषा इसे जरूर अपनायें।
अपनी बच्चों को हिंदी पढ़ना जरूर सिखायें।
हिंदी ही हिंद का नारा है

एक ही है भाषा हमारी, एक ही इरादा है।
हम हिंदी को अपनाएंगे ऊँचा उसे ले जाएंगे।
हिन्द भारत की हिंदी भाषा हम दुनिया को दिखलायेंगे।

**

मौसम सेवाओं की उपयोगिताएं

श्रीमती लता श्रीधर, मौ. वि. ए

प्रा. मौ. कें. नागपुर

भारत मौसम विज्ञान विभाग द्वारा आमतौर पर निम्न सेवाएं प्रदान की जाती हैं :

- विमानन मौसम सेवाएँ
- जहाजरानी एवं मत्स्यपालन हेतु सेवाएँ
- समुद्री प्रदूषण में आपातकालीन सेवाएँ
- बंदरगाहों के लिए सेवाएँ
- थलाभिमुख चेतावनी सेवाएँ
- जनहित में सेवाएँ
- कृषि एवं किसानों के लिए सेवाएँ
- चक्रवात चेतावनी एवं बाढ़ पूर्वानुमान सेवाएँ
- हिमनद विज्ञान सेवाएँ
- जल संतुलन एकक द्वारा सेवाएँ
- आपदा प्रशमन सेवाएँ
- जलवायवी सेवाएँ
- वातावरणीय मौसम विज्ञान एवं वायु गुणता व्यवस्थापन सेवाएँ
- मौसम पूर्वानुमान सेवाएँ
- भारतीय सेना के लिए सेवाएँ

विमानन मौसम सेवाएँ:

- वायुयान उड्डयन हेतु मौसम सेवाओं का मुख्य उद्देश्य वायुयान संचालन में सुरक्षा, नियमितता,दक्षता एवं अर्थ प्रबंधन की दिशा में योगदान देना है।

- विमान चालन हेतु विमानन संबंधी मौसम सूचनाएँ हवाई कंपनी, विमान के कर्मीदल, ए.टी.सी., खोज तथा बचाव एकक, विमान पत्तन व्यवस्थापन इत्यादि को दिए जाते हैं।

जहाजरानी एवं मत्स्यपालन हेतु सेवाएँ:

- समुद्री जहाज़ों एवं मछुआरों के लिए दिन में चार बार मौसम बुलेटिन प्रसारित करने हेतु जारी किया जाते हैं। (समुद्री तूफ़ान एवं अवदाब के दौरान अधिक बार)
- बंदरगाह मौसम विज्ञान संपर्क कार्यालयों द्वारा सेवाएँ :-

  १. बंदरगाह में खड़े जहाजों का मौसम उपकरणों के अंशांकन हेतु निरिक्षण

  २. जलयात्रा में निकलने वाले जहाज़ों को मौसम संबंधी जानकारी देना

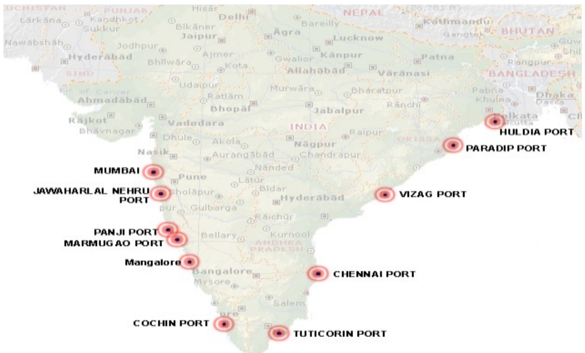

बंदरगाहों के लिए सेवाएँ:

- जैसे ही मौसम संचित्रों में कुछ उपद्रव नज़र आने लगे, संबंधीत बंदरगाहों को चेतावनी सन्देश जारी किये जाते हैं।
- हमारे देश में चेन्नई, मुंबई और कोलकाता में स्थित पूर्वी और पश्चिमी तटों को कवर करने वाले 7 चक्रवात चेतावनी केंद्र और तिरुवनंतपुरम, विशाखापत्तनम, अहमदाबाद और भुवनेश्वर में चार चक्रवात चेतावनी केंद्र (सीडब्ल्यूसी) और नई दिल्ली में आईएमडी मुख्यालय में स्थित चक्रवात चेतावनी प्रभाग हैं।

थलाभिमुख चेतावनी सेवाएँ :

- सन 1885 से जिला अधिकारियों एवं सिंचाई, रेलवे, पुलिस, तार, कृषि, लोकसेवा आदि कार्यालयों को भारी वर्षा की चेतावनी दी जा रही है।

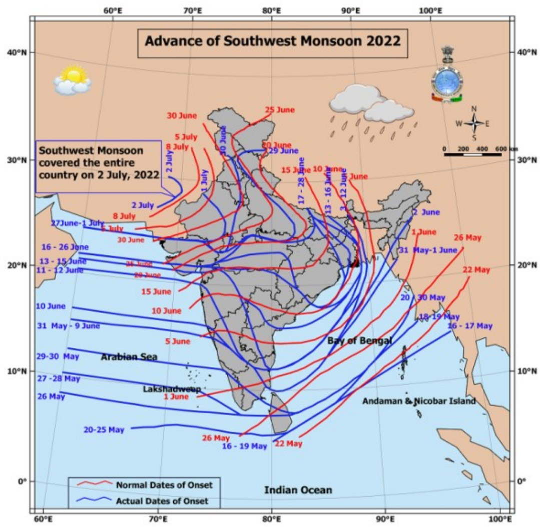

- इसके अलावा आंधी, कोहरा, पाला एवं मानसून के आगमन के संदेश भी दिए जाते हैं।
- वार्षिक तौर पर 19000 से भी अधिक चेतावनी सन्देश जारी किए जाते हैं।

जनहित में सेवाएँ:

- प्रतिकूल मौसम के दौरान जनहित में पूर्वानुमान एवं चेतावनियाँ जारी किए जाते हैं। वर्तमान में विनाशकारी मौसम की घटनाएं यदि अपेक्षित हों तो प्रभाव आधारित पूर्वानुमान (**Impact based Forecast**) भी जारी किए जाते हैं।
- मौसम रिपोर्ट के अलावा रडार प्रेक्षणों के आधार पर गरज के साथ तूफ़ान एवं आंधी की चेतावनी आकाशवाणी एवं निजी रेडियो चैनलों द्वारा प्रसारित किए जाते हैं।
- टेलीविजन चैनलों पर वर्षा, तापमान, वायुदाब इत्यादि मौसम घटनाओं का प्रसारण किया जाता है। इन्सट उपग्रह से प्राप्त बिम्बावली भी इसी दौरान प्रसारित किए जाते हैं। ये विविध भाषाओं में प्रसारित होते हैं।

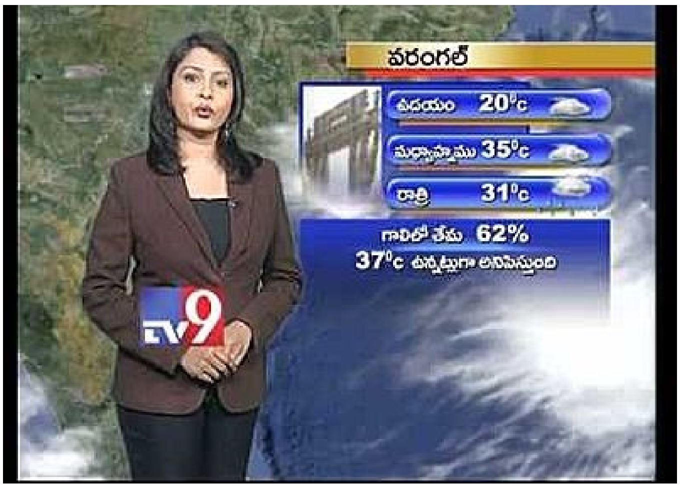

- इसके अलावा देश के लगभग सभी समाचार पत्रों में भी मौसम पूर्वानुमान एवं स्थानीय पूर्वानुमान छापे जाते हैं।
- दूरभाष केंद्र की विशेष सूचना सेवाओं के द्वारा भी मौसम संबंधी जानकारी जनता तक पहुंचाई जाती है।

कृषि एवं किसानों के लिए सेवाएँ:

- कृषि मौसम विज्ञान विभाग द्वारा फसल मौसम कैलेंडर तैयार किये जाते हैं, जिनके माध्यम से फसलों के विकास के दौरान प्रभावित करने वाले विभिन्न मौसम तत्वों की जानकारी मिलती है।
- साप्ताहिक तौर पर प्रत्येक मंगलवार तथा शुक्रवार को जिलावार कृषि मौसम परामर्श बुलेटिन जारी किये जाते हैं, जिनका हमारे किसान लाभ उठाते हैं।
- इसके अलावा रोजाना किसानों के लिए कृषक मौसम बुलेटिन भी देश के विभिन्न भागों से जारी किये जाते हैं। वर्तमान में प्रतिदिन ब्लाक स्तर पर भी 8 मौसम प्राचलों (**weather parameters**) के लिए अगले 5 दिनों का पूर्वानुमान जारी किया जाता है।

कृषि मौसम परामर्शों की मुख्य मानावली :

- मानसून के आगमन सूचना के आधार पर खरीफ फसलों की बुवाई / रोपाई।
- अवशेष मृदा जल के आधार पर रबी फसल की बुवाई।
- हवा की गति एवं दिशा के आधार पर कीटनाशकों का छिडकाव।
- वर्षा की तीव्रता के आधार पर उर्वरकों का छिडकाव / उपरिवेशन में विलम्ब।
- मौसम पूर्वानुमान के आधार पर नुकसानदेह कीटों एवं पौध रोग के प्रकोप का पूर्वानुमान।

- फसल की क्रांतिक अवस्था पर सिंचाई।
- मौसम आधारित फसल की आवश्यकता के अनुसार सिंचाई की मात्रा एवं अवधि की सुनिश्चितता।
- फसलों की उचित समय पर कटाई हेतु परामर्श।

कृषि परामर्श सेवा का प्रसारण निम्नलिखित साधनों द्वारा किया जाता है :

- आकाशवाणी और दूरदर्शन
- निजी दूरदर्शन और रेडियो चैनेल्स
- समाचार पत्र एवं इन्टरनेट
- भारतीय कृषि अनुसन्धान परिषद् और अन्य सम्बंधित संस्थाएं / कृषि विश्वविद्यालय / राज्यस्तरीय कृषि प्रसार विभाग / केंद्रीय कृषि विभाग
- कृषि विज्ञान केंद्र
- किसानों एवं व्यवस्थापक के साथ समय-समय पर विचार विमर्श द्वारा कृषि परामर्श को अधिक उपयोगी बनाना
- किसानों को अविलम्ब कृषि परामर्श बुलेटिन का वितरण
- कृषि परामर्श का स्थानीय / बोली भाषाओँ के साथ-साथ
- अंग्रेजी में प्रसारण
- मौसम की अनिश्चितता में वृद्धि के कारण पिछले कुछ समय से फसल के उपज की पूर्वानुमान की ज़रूरत महसूस हो रही है। इसे वास्तविकता में लाने के लिए मौसम विज्ञान प्राचलों, मुख्यतया वर्षा और तापमान, विकिरण इत्यादि का अध्ययन संगणक आधारित डीसेट क्रॉप मॉडल के द्वारा गेहूं एवं धान के साथ साथ अन्य फसलों के लिए फसल उपज पूर्वानुमान आरंभ किया गया है।
- मात्रात्मक फसल उपज पूर्वानुमान सूत्र द्वारा खरीफ धान के लिए देश में २२ उपमंडलों के लिए और गेहूं के लिए ९ उपमंडलों के लिए विकसित किया गया।

- इस कार्य पद्धति के उपयोग से खरीफ एवं रबी के दौरान प्रत्येक माह में फसल उपज के लिए पूर्वानुमान जारी होता है।
- फसल कीटाणु, फसलों की बीमारी एवं वर्त्तमान मौसम पैरामीटर के आपसी संबंधों का अध्ययन किया जा रहा है।
- राजस्थान में टिड्डीदल की गतिविधियों के दौरान सात पवन सूचक गुब्बारा वेधशालाओं द्वारा प्राप्त प्रेक्षणों की सहायता से चेतावनी जारी की जाती है।

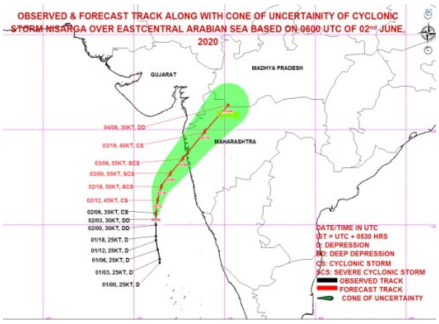

चक्रवात चेतावनी एवं बाढ़ पूर्वानुमान सेवाएँ:

- आपदा संबंधी चक्रवातीय तूफ़ान प्रति वर्ष भारतीय तटों को भरी नुकसान पहुंचाते हैं।
- इन तूफानों की पूर्व चेतावनी जान और माल को नुकसान से बचाती है।
- दिल्ली और क्षेत्रीय चेतावनी केन्द्रों पर लगे उपग्रह की सुविधाओं से युक्त संसूचन रडार तरह-तरह के तूफानों के आने की खबर रखते हैं।
- बाढ़ प्रबंधन में बांधों से पानी छोड़ने की समय-सारणी तैयार करना एक महत्त्वपूर्ण कार्य है।
- सरकार को बाढ़ आने की पूर्व सूचना देने के लिया विशिष्ट नदी बेसिनों में भारत मौसम विज्ञान विभाग के बाढ़ मौसम कार्यालय हैं।

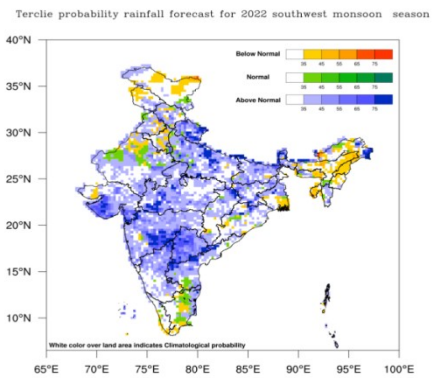

दीर्घावधि मौसम पूर्वानुमान :

- मानसून एक नियमित किन्तु विविधतापूर्ण परिघटना है। देश की अर्थव्यस्था मानसून वर्षा की मात्रा पर काफी निर्भर है। दक्षिण-पश्चिम मानसून समूचे भारत के लिए एवं देश के 4

समप्राकृतिक उपखंडों के लिए जारी किया जाता है। इसके अलावा उत्तर-पूर्व मानसून एवं शीतकालीन पर्जन्यमान से प्रभावित होने वाले उपखंडों के लिए भी दीर्घावधि पूर्वानुमान जारी किए जाते हैं। केरल में दक्षिण-पश्चिम मानसून के आगमन का भी दीर्घावधि पूर्वानुमान द्वारा सूचित किया जाता है ।

- गत वर्ष से परियोजनात्मक तौर पर ग्रिडेड पैमाने(0.25 0.25 डिग्री रेसोलुशन) पर भी वर्षा का दीर्घावधि पूर्वानुमान जारी किया जा रहा है।

भारतीय सेना के लिए सेवाएँ:

- भारत मौसम विज्ञान विभाग देश के तीनों रक्षा सेवाओं को मौसम सेवाएँ प्रदान करता है।
- भारतीय रक्षा सेवाओं के अफसरों को प्रशिक्षण भी भारत मौसम विज्ञान विभाग के एम.टी.आई. पुणे द्वारा दिया जाता है।
- मौसम प्रेक्षण, पूर्वानुमान, नियमित प्रकाशन, बुलेटिन, प्रशिक्षण आदि सेवाएँ हमारी सेनाओं को दी जाती है।
- भारतीय वायु सेना एवं भारतीय नौ सेना उनके क्रियाशील स्टेशनों में कई वेधशालाओं का रखरखाव करते हैं। इन वेधशालाओं का निरीक्षण भारत मौसम विज्ञान विभाग द्वारा किया जाता है।

अतिरिक्त सेवाएँ:

- भारत के एक विस्तृत भूभाग पर अक्सर सूखा पड़ता है।
- सूखा प्रबंधन के लिए वर्षा होने के स्थान और समय की सही जानकारी होनी अपेक्षित है।
- इस कार्य के अंतर्गत मौसम विज्ञान और जलवायु विज्ञान की सेवाएँ उपलब्ध करायी जाती है।
- बृहत् हिमालय में हिमपात और हिमस्खलन जोखिम भरी

आपदाएं हैं। इन आपदाओं के समय बचाव के कार्यों को ठीक ढंग से करने के लिए भारत मौसम विज्ञान विभाग दुर्गम क्षेत्रों में पूर्वानुमान उपलब्ध कराता है। स्वचालित मौसम स्टेशन का भी विशेष लाभ होता है।

- राष्ट्रीय पंचांगों का प्रकाशन, भारतीय राष्ट्रीय कैलेंडर का प्रकाशन, भारतीय पंचांगों की अभिगणना।
- ओज़ोन छिद्र अध्ययन, अंटार्क्टिक मौसम विज्ञान अध्ययन।

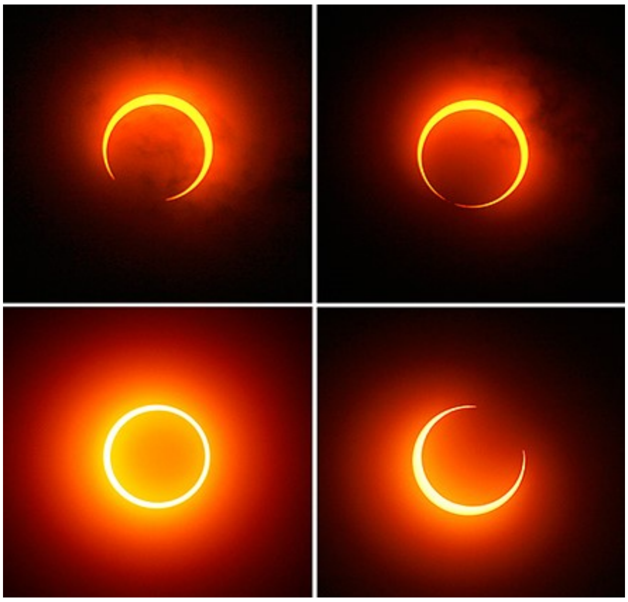

**

वर्षा ऋतु - तथ्य

- रीना सुरपाम, मौ. वि. ए, प्रा. मौ. कें.
नागपुर

1. अखिल भारतीय मासिक मौसमी वर्षा क्या है?

अखिल भारतीय मासिक वर्षा एक विशेष महीने के लिए भारत में प्राप्त संचित वर्षा की मात्रा है। उदाहरण के लिए, जून 2018 की अखिल भारतीय मासिक वर्षा 115.7 मिमी है। इसी प्रकार अखिल भारतीय मौसमी वर्षा एक विशेष मौसम के लिए भारत में प्राप्त संचित वर्षा की मात्रा है। उदा. 2018 के दक्षिण-पश्चिम मानसून (JJAS) की अखिल भारतीय मौसमी वर्षा 804.1 मिमी है। ये मात्राएँ स्थिर नहीं हैं; वे साल-दर-साल भिन्न होती हैं।

2. वर्षा के दीर्घकालीन औसत (Long Period Average/एलपीए) से आप क्या समझते हैं?

किसी विशेष क्षेत्र में एक निश्चित अंतराल के लिए दर्ज की गई वर्षा की मात्रा को वहाँ की वर्षा का दीर्घकालीन औसत कहते हैं। जैसे 30 वर्ष, 50 वर्ष आदि की अवधि में मासिक या मौसमी औसत। यह एक विशिष्ट महीने या मौसम के लिए उस क्षेत्र की मात्रात्मक वर्षा के पूर्वानुमान में एक बेंचमार्क के रूप में कार्य करता है। उदाहरण के लिए केरल में जून, जुलाई, अगस्त और सितंबर महीने के लिए दक्षिण-पश्चिम मानसून वर्षा का दीर्घकालीन औसत क्रमशः 556 मिमी, 659 मिमी, 427 मिमी और 252 मिमी है। । अखिल भारतीय दक्षिण-पश्चिम मानसून वर्षा की वर्तमान दीर्घकालीन औसत 880.6 मिमी है जो कि 1961 से 2010 की अवधि में औसत वर्षा के आधार पर है।

3. अत्यधिक, अधिक, सामान्य, अल्प, अधिक अल्प वर्षा क्या है?

ये वर्षा की श्रेणियां हैं जिनका उपयोग विभिन्न अस्थायी स्तरों जैसे दैनिक, साप्ताहिक, मासिक आदि पर जिला, राज्य जैसी स्थानिक स्तर पर औसत वर्षा का वर्णन करने के लिए किया जाता है। इनका वर्गीकरण निम्न प्रकार है-

अत्यधिक=> वास्तविक वर्षा ≥ दीर्घकालीन औसत का 60%,

अधिक=> वास्तविक वर्षा= दीर्घकालीन औसत का 20% से 59% तक,

सामान्य=> वास्तविक वर्षा= दीर्घकालीन औसत का -19% से 19% तक,

अल्प=> वास्तविक वर्षा= दीर्घकालीन औसत का -59% से 20% तक और

अधिक अल्प=> वास्तविक वर्षा= दीर्घकालीन औसत का -99% से 60% तक

4. मॉनसून ट्रफ की क्या भूमिका है**?**

मॉनसून ट्रफ एक लम्बा निम्न दाब वाला क्षेत्र है जो पाकिस्तान के ऊपर उष्ण निम्न से लेकर बंगाल की खाड़ी तक फैला हुआ है। यह मानसून परिसंचरण की अर्ध स्थायी विशेषता में से एक है। मानसून ट्रफ हिमालय पर्वतमाला के पूर्व पश्चिम अभिविन्यास और खासी-जयंतिया पहाड़ियों के उत्तर दक्षिण अभिविन्यास की विशेषता हो सकती है। आम तौर पर मॉनसून ट्रफ के पूर्वी हिस्से में दोलन होते हैं, कभी दक्षिण की ओर तो कभी उत्तर की ओर। मॉनसून ट्रफ का

दक्षिण की ओर प्रवास भारत के प्रमुख भाग में सक्रिय/जोरदार मॉनसून लाता है। इसके विपरीत, इस ट्रफ के उत्तर की ओर प्रवास से भारत के बड़े हिस्से में मानसून की स्थिति भंग होती है और हिमालय की तलहटी में भारी बारिश होती है और कभी-कभी ब्रह्मपुत्र नदी में बाढ़ आ जाती है।

5. उष्ण निम्न **(heat low)** क्या है**?** मानसूनी वर्षा पर इसका क्या प्रभाव पड़ता है**?**

उत्तरी गोलार्ध में सूर्य के उत्तर की ओर बढ़ने के दौरान, अरब सागर के आसपास के महाद्वीप को बड़ी मात्रा में ऊष्मा प्राप्त होने लगती है जिसका कारण न केवल सूर्य से विकिरण हैं, बल्कि पृथ्वी की सतह से वायुमंडल में ऊष्मा का प्रवाह भी है। जून महीने में उत्तर पश्चिम भारत, पाकिस्तान और मध्य पूर्वी देशों के शुष्क क्षेत्रों में यह प्रवाह 160 वाट/मी^{2} होता है। उर्जा के इस बड़े इनपुट के परिणामस्वरूप, इस क्षेत्र में निम्न दाब की एक ट्रफ रेखा बनती है। यह भारत में मानसून की अर्ध-स्थायी विशेषता है। उष्ण निम्न बहुत उथला (850 hpa स्तर (1.5 कि.मी.) तक) होता है और इसके ऊपर एक सुचिन्हित रिज (well marked ridge) मौजूद होता है, बादल छाए रहने के बावजूद वर्षा बहुत कम होती है। तीव्र उष्ण निम्न (Intense heat low)में दबाव विचलन सामान्य से कम होने के कारण यह मॉनसून ट्रफ की दिशा में नम हवा के लिए सक्शन डिवाइस के रूप में कार्य करता है और कुछ हद तक भारत में अच्छे मानसून की स्थिति बनाता है। कमजोर उष्ण निम्न के दौरान दबाव विचलन होता है। इसके परिणामस्वरूप भारत में मानसून की वर्षा प्रभावित होती है और देश के विशाल क्षेत्र की वर्षा में कमी आती है। (उदाहरण के लिए 1987 में, उष्ण निम्न क्षेत्र पर केंद्रीय दबाव ज्यादातर सामान्य से ऊपर था, जो एक सूखा वर्ष साबित हुआ)। उपग्रह द्वारा मापे गए दीर्घ तरंग विकिरण के अनुमान इंगित करते हैं कि उष्णकटिबंधीय / उपोष्णकटिबंधीय रेगिस्तान हीट सिंक हैं।

6. <u>मानसून निम्न क्या है, यह मानसून को कैसे प्रभावित करता है?</u>

निम्न दबाव क्षेत्र (एलपीए) वह बंद आकार क्षेत्र है जिसमे केंद्र में सबसे कम दबाव तथा उत्तरी गोलार्ध में वामावर्त (anti-clockwise) चलने वाली हवाओं के घिरा होता है। अभिसरण (convergence), घुमावदार तथा ऊपर की ओर गति वाली हवा एलपीए से संबंधित है। निम्न में आमतौर पर बादल और वर्षा मौजूद होते हैं। मानसून के दौरान देखा गया एलपीए मानसून निम्न है।

मानसून निम्न बढ़कर मानसूनी अवसाद (depressions) में परिवर्तित हो सकते हैं। दक्षिण पश्चिम मानसून के दौरान मानसून निम्न और अवसाद भारत में प्रमुख वर्षाधारक तंत्र हैं। बंगाल की खाड़ी में बनने वाले मानसून अवसादों के पश्चिम की ओर बढ़ने से पर्याप्त मात्रा में वर्षा होती है। ये कम दबाव वाले क्षेत्र हैं, जिनके संचलन में हवा की गति 17 से 33 नॉट्स के बीच होती है।

मानसून के प्रत्येक महीने (जून-सितंबर) में औसतन 2 अवसाद बनते हैं। हालांकि, साल-दर-साल उनकी संख्या में बड़ी भिन्नता होती है। जून की शुरुआत में बनने वाले अवसाद दक्षिण-पश्चिम मानसून के आगे बढ़ने के लिए जिम्मेदार होते हैं और ये पूर्णतः मानसून अवसाद नहीं हैं। जुलाई और अगस्त में ये आम तौर पर उत्तर-पश्चिम खाड़ी में 18 डिग्री उत्तर के उत्तर में बनते हैं, और सितंबर में इनकी उत्पत्ति की साइट खिसक कर दक्षिण की ओर केंद्रीय खाड़ी में पहुँच जाती है।

7. <u>तिब्बती उच्च क्या है? यह मानसूनी वर्षा से किस प्रकार संबंधित है?</u>

तिब्बती उच्च एक गर्म प्रतिचक्रवात (anticyclone) है (उत्तरी गोलार्ध में इसमें हवा दक्षिणावर्त दिशा में घुमती है और इसमें हवाओं का सदा बहिर्वाह होता है) जो तिब्बती पठार (केंद्र अक्षांश 28° उत्तर में, 98° पूर्व देशांतर) पर मानसून अवधि के दौरान मध्य/ऊपरी क्षोभमंडल में स्थित है। । यह 30° उत्तर, 90° पूर्व पर केन्द्रित 300 hpa स्तर चिह्नित है और 70° पूर्व से 110° पूर्व तक फैला हुआ है। पूर्वी प्रवाह के रूप में तिब्बती उच्च से हवाओं का बहिर्वाह केंद्रित होकर जुलाई में 150 hpa पर चेन्नई के अक्षांश के पास जेट स्ट्रीम बनाती है। यह जेट वियतनाम के पूर्वी तट से अफ्रीका के पश्चिमी तट तक चलता है। इस प्रकार ईस्टरली जेटस्ट्रीम का स्थान मानसूनी वर्षा के पैटर्न को प्रभावित करता है। इसकी स्थिति के पूर्व या

पश्चिम में स्थानांतरित होने से भारत में मानसून गतिविधि में बदलाव होता है। तिब्बती उच्च कभी-कभी अपनी सामान्य स्थिति के पश्चिम में बहुत अधिक स्थानांतरित हो सकता है। ऐसी स्थिति में, मानसून आगे पश्चिम की ओर पाकिस्तान में और चरम मामलों में उत्तरी ईरान तक फैल सकता है, हालांकि तिब्बती उच्च की ऐसी पश्चिम की स्थिति तिब्बती पठार के ताप प्रभाव में इसकी उत्पत्ति के खिलाफ होगी।

8. मैस्करीन उच्च क्या है**?** यह मानसूनी वर्षा को कैसे प्रभावित करता है**?**

मैस्करीन उच्च एक उच्च दबाव वाला क्षेत्र है जो मानसून अवधि के दौरान मस्करीन द्वीपों (दक्षिण हिंद महासागर में) के आसपास पाया जाता है। यह दक्षिण अरब सागर के माध्यम से क्रॉस इक्वेटोरियल प्रवाह के लिए जिम्मेदार है और यह दक्षिणी गोलार्ध लिंकेज के रूप में कार्य करता है। उच्च दबाव की तीव्रता में भिन्नता के कारण भूमध्यरेखीय प्रवाह में मानसून की वृद्धि होती है। ये लहरें पश्चिमी तट पर भारी बारिश के लिए जिम्मेदार हैं।

09. सोमाली जेट क्या है**?**

सोमाली जेट निम्न स्तर (1 से 1.5 किमी asl) अंतर गोलार्द्ध हवा का क्रॉस इक्वेटोरियल प्रवाह है, जो मानसून काल के पश्चिमी भाग में अफ्रीका के पूर्वी तट के समानांतर जेट गति प्राप्त करता है। यह जेट मॉरीशस और दक्षिणी गोलार्ध में मेडागास्कर के उत्तरी भाग से निकलती है। यह केन्या तट (लगभग 3° दक्षिण) तक पहुंचता है और केन्या, इथियोपिया के मैदानी इलाकों और लगभग 9° उत्तर में सोमाली तट तक पहुंचता है।

मई के दौरान, यह आगे बढ़कर पूर्वी अफ्रीका में, फिर अरब सागर में चला जाता है और जून में भारत के पश्चिमी तट पर पहुँच जाता है। जुलाई में यह अधिकतम मजबूती प्राप्त कर लेता है। निम्न स्तरीय जेट स्ट्रीम में छोटी अवधि (8-10 दिन) के उतार-चढ़ाव देखे जाते हैं। इसके मजबूत होने से प्रायद्वीपीय भारत में मानसून की स्थिति मजबूत होती है।

10. उष्णकटिबंधीय पूर्वी जेट (Tropical Easterly Jet/TEJ) क्या है**?** यह वर्षा को कैसे प्रभावित करता है**?**

एशिया पर उपोष्णकटिबंधीय रिज के दक्षिण में, पूर्वी प्रवाह केंद्रित होकर चेन्नई के अक्षांश के पास जुलाई में 150 hpa पर जेट स्ट्रीम का निर्माण करती है। यह ट्रॉपिकल ईस्टरली जेट है। यह जेट स्ट्रीम 10° उत्तर में वियतनाम के पूर्वी तट से अफ्रीका के पश्चिमी तट तक चलती

है । आम तौर पर, जेट दक्षिण चीन सागर से दक्षिण भारत तक एक त्वरित चरण में होता है और उसके बाद धीमा हो जाता है। पूर्वी जेट स्ट्रीम की स्थिति मानसून वर्षा के पैटर्न को प्रभावित करती है। सितंबर में TEJ कमजोर होकर भारत में 50 नॉट से भी कम रह जाता है। ब्रेक मानसून की स्थिति के दौरान TEJ उत्तर की ओर 20° उत्तर अक्षांश तक पहुँच जाता है।

12. <u>मानसून पूर्व और मानसून के बाद के मौसम में बनने वाले मानसून अवसाद और अवसाद के बीच क्या अंतर है?</u>

मानसून के मौसम में बनने वाले अवसादों को मानसून अवसाद कहा जाता है। ये निम्न दबाव वाले क्षेत्र हैं जिसमे दो या तीन बंद आइसोबार (2 hPa अंतराल पर) होते हैं, जो अधिकांश मानसूनी वर्षा का कारण बनते हैं। ये खाड़ी पर उत्पन्न, भूमि पर उत्पन्न या अरब सागर की उत्पत्ति के हो सकते हैं। इनका आकार साधारणतया अण्डाकार होता है और इसका क्षैतिज विस्तार सतह का लगभग 1000 किलोमीटर होता है। इसका लंबवत विस्तार लगभग 6-9 किलोमीटर है। मानसून अवसाद निचले स्तरों में सतह पर शीत कोर सिस्टम (पर्यावरण की तुलना में केंद्रीय तापमान ठंडा) और ऊपरी स्तरों में गर्म कोर (पर्यावरण की तुलना में केंद्रीय तापमान गर्म) है। हवा की अधिकतम प्रचंडता और तीव्रता 0.9 किमी या 1.5 किमी के स्तर पर देखा जा सकता है। मानसून अवसाद ऊंचाई के साथ दक्षिण की ओर झुकता है और यदि मानसून अवसाद पश्चिम की ओर बढ़ रहा है, तो भारी वर्षा मुख्य रूप से दक्षिणपंथी चतुर्थांश (SW quadrant) में केंद्रित होती है। दक्षिण पश्चिम मानसून के मौसम के दौरान मौजूद उच्च ऊर्ध्वाधर पवन कतरनी (high vertical wind shear) के कारण, मानसून अवसाद आमतौर पर चक्रवाती तूफान में परिवर्तित नहीं होते हैं।

उपलब्धियां

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग
Government of India, Ministry of Home Affairs, Deptt. of Official Language
नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास), नागपुर (कार्यालय-2)
Town Official Language Implementation Committee (TOLIC), Nagpur (Office-2)

प्रशस्ति-पत्र

प्रादेशिक मौसम केन्द, नागपुर को वर्ष 2021 के दौरान नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, नागपुर (कार्यालय-2) के सदस्य कार्यालय के रूप में उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन के लिये प्रथम स्थान प्राप्त करने पर यह प्रशस्ति-पत्र प्रदान किया जाता है।

(डॉ. मनोज कुमार)
सदस्य सचिव, नराकास (का.2)

(पी. नरेन्द्र कुमार)
महाप्रबंधक (का./राजभाषा प्रमुख)

(मनोज कुमार)
अध्यक्ष, नराकास (का.

अध्यक्ष कार्यालय : वेस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड, कोल इस्टेट, सिविल लाईन्स, नागपुर (महाराष्ट्र)-440001
Chairman Office : Western Coalfields Limited, Coal Estate, Civil Lines, Nagpur (MS)-440001

उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन के लिए प्रादेशिक मौसम केन्द्र नागपुर को नराकास नागपुर द्वारा प्रथम पुरस्कार

सत्यमेव जयते

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग

Government of India, Ministry of Home Affairs, Deptt. of Official Language

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास), नागपुर (कार्यालय-2)

Town Official Language Implementation Committee (TOLIC), Nagpur (Office-2)

प्रशस्ति-पत्र

प्रादेशिक मौसम केन्द्र, नागपुर की ऋतुरंग-पत्रिका को वर्ष 2021 के लिये नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, नागपुर (कार्यालय-2) द्वारा द्वितीय स्थान प्राप्त करने पर यह प्रशस्ति-पत्र प्रदान किया जाता है।

(डॉ. मनोज कुमार)	(पी. नरेन्द्र कुमार)	(मनोज कुमार)
सदस्य सचिव, नराकास (का.2)	महाप्रबंधक (का./राजभाषा प्रमुख)	अध्यक्ष, नराकास (का.:

अध्यक्ष कार्यालय : वेस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड, कोल इस्टेट, सिविल लाईन्स, नागपुर (महाराष्ट्र)-440001

Chairman Office : Western Coalfields Limited, Coal Estate, Civil Lines, Nagpur (MS)-440001

कार्यालय गृह पत्रिका "ऋतुरंग" के 7वें अंक के लिए द्वितीय पुरस्कार

शुद्ध एवं सुलेख प्रतियोगिता -द्वितीय पुरस्कार-

सोनम

हिंदी अनुवाद प्रतियोगिता -द्वितीय पुरस्कार-

सुलेखा सोनाल

तात्कालिक भाषण प्रतियोगिता- प्रोत्साहन पुरस्कार-

रूबी वर्मा

सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता- प्रोत्साहन पुरस्कार-

देविदास गीते

नरकास द्वारा आयोजित अंतर्कार्यालीन विविध प्रतियोगिताओं में प्राप्त पुरस्कार

श्री वेदप्रकाश सिंह, वैज्ञानिक सी

श्री पी.एस.चिंचोले, मौ. वि. ए

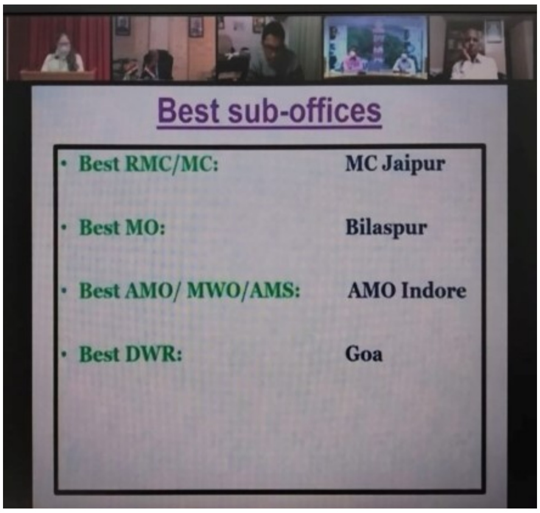

मौ.का.बिलासपुर, ए एम एस इंदौर

उत्कृष्ट कार्यान्वयन के लिए मुख्यालय द्वारा अधिकारियों एवं कार्यालय को पुरस्कार

प्रा.मौ.के.नागपुर में हिंदी पखवाड़ा

प्रादेशिक मौसम केन्द्र नागपुर में दिनांक 01.09.21 से 14.09.21 तक पूरे हर्षोल्लास से हिंदी पखवाड़ा मनाया गया। इस अवसर पर कार्यक्रम का उद्घाटन श्री एम.एल.साहू, उपमहानिदेशक, प्रा.मौ.के.नागपुर द्वारा दीप प्रज्वलित कर किया गया तत् पश्चात् कार्यालय के कार्मिकों द्वारा सरस्वती वंदना प्रस्तुत की गई। श्री एम.एल साहू, उपमहानिदेशक ने अपने उद्‌बोध में सभी को हिन्दी में अधिक से अधिक कार्य करने का आवाहन किया एवं हिन्दी को अत्यंत सशक्त तथा वैज्ञानिक भाषा बताया।

कार्यालय में वर्ष भर में हुए गतिविधियों की रिपोर्ट श्रीमती शांता उन्नीकृष्णन, वरिष्ठ अनुवाद द्वारा प्रस्तुत की गई। पखवाड़े के दौरान कार्यालय में विविध प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। जैसे की हिंदी टंकण, हिंदी टिप्पणी एवं पत्राचार, निबंध, हिंदी काव्य-पाठ, वाद-विवाद प्रतियोगिता आदि। इस अवसर पर एक दिन के हिंदी कार्यशाला का भी आयोजन किया गया जिसमें श्री तेजवीर सिंह, राजभाषा अधिकारी, लेखा एवं डाक का कार्यालय, नागपुर, श्री एस.एन.बिद्यान्ता, मौ.वि.ए एवं श्रीमती भारती पारवे, प्रशासनिक अधिकारी ग्रेड-।।। द्वारा प्रशासनिक विषयों पर व्याख्यान दिया गया।

श्री पी.एस.चिंचोले, मौसम विज्ञानी-ए / राजभाषा संपर्क अधिकारी द्वारा राजभाषा में अधिक से अधिक कार्य करने के लिए अपील जारी की गई। पखवाड़े के अवसर पर पुरस्कृत कविताओं के प्रस्तुतिकरण के साथ छोटे से सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन भी किया जिसमें कार्यालय के गानवृन्ध ने सुंदर गीतों का प्रस्तुतीकरण किया। इस वर्ष 2021 में हिंदी में सर्वाधिक कार्य के लिए मौसम कार्यालय, ग्वालियर को राजभाषा शील्ड प्रदान किया इस अवसर पर श्री सी.के.उपाध्याय, प्रभारी अधिकारी, ग्वालियर ने मुख्य अतिथि के हाथों राजभाषा शील्ड प्राप्त किया। हिन्दी पखवाड़े के पुरस्कार वितरण समारोह के अवसर पर कार्यालय में सरकारी कामकाज मूल रूप से हिन्दी में करने के लिए लागू प्रोत्साहन योजना में श्रीमती पुष्पा सावरकर, कनिष्ठ श्रेणी लिपिक, श्री एस.ए.पवार, सहायक को प्रथम पुरस्कार तथा सुश्री सुलेखा सोनाल, वै.स.को द्वितीय पुरस्कार की उद्घोषणा की गयी। हिन्दी समापन समारोह के अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में डॉ.श्रीमती वीणा दाढे आमंत्रित थीं उन्होंने हिंदी दिवस के अवसर पर सभा को संबोधित किया एवं हिंदी में कार्य करने हेतु मार्गदर्शन भी किया। साथ ही उनके हाथों विभिन्न प्रतियोगिताओं में विजयी प्रतिभागियों को पुरस्कार भी दिया गया।

हिंदी पखवाड़े के समापन समारोह पर विजेताओं को मुख्य अतिथि के हाथों पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया जिसका विवरण निम्नानुसार है :-

प्रतियोगिता का नाम	प्रथम	द्वितीय	तृतीय	प्रोत्साहन
हिंदी टंकण	राहुल सोलकर	विशाल चौधरी	जतिन कुमार	विकाश मीणा
हिंदी टिप्पणी/पत्राचार	सोनिका नेगी	भारती पारवे	चैन सिंह	सुलेखा सोनाल
हिंदी निबंध	सोनिका नेगी	विशाल चौधरी	रूबी वर्मा	अमित मेहरा
हिंदी वाद-विवाद	जतिन कुमार	रूबी वर्मा	मीनू मीणा	विशाल चौधरी
हिंदी स्वरचित काव्य	जतिन कुमार	मीनू मीणा	रूबी वर्मा	अमित मेहरा

<u>हिन्दी पखवाड़ा 2021, उद्घाटन समारोह, प्रा. मौ. केंद्र नागपुर</u>

हिन्दी टंकण प्रतियोगिता 2021

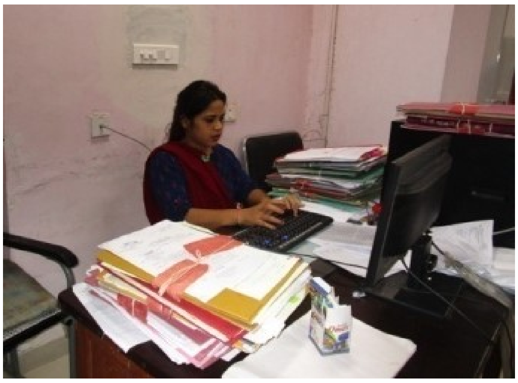

हिन्दी टिप्पणी/पत्राचार प्रतियोगिता 2021

<u>हिन्दी निबंध प्रतियोगिता 2021</u>

<u>हिन्दी वाद विवाद प्रतियोगिता 2021</u>

हिन्दी स्वरचित काव्य प्रतियोगिता 2021

पुरस्कार वितरण और हिन्दी पखवाड़ा समापन समारोह

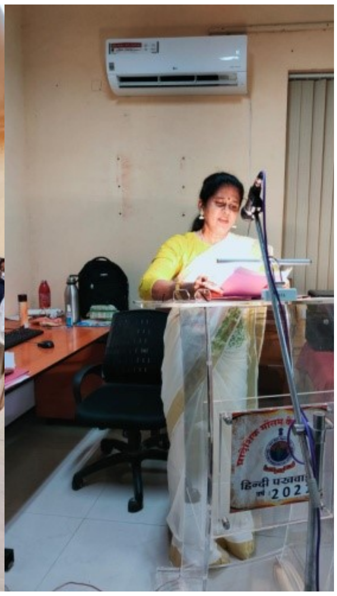

**

<u>मौसम केंद्र भोपाल में हिंदी पखवाड़ा</u>

मौ.के.भोपाल में हिन्दी पखवाड़ा दिनांक 01 से 14 सितम्बर 2021 तक मनाया गया, जिसके अंतर्गत विभिन्न प्रतियोगिताऐं आयोजित की गयी तथा प्रतियोगियों को पुरस्कार बांटे गये। हिन्दी दिवस का आयोजन दिनाँक 14/09/2021 को तथा हिन्दी पखवाड़े का समापन दिनांक 14/09/2021 को किया गया। इसका संयोजन डॉ. जी.डी.मिश्रा, हिन्दी अधिकारी द्वारा किया गया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथी डॉ. डी.पी.दुबे, सेवानिवृत्त वैज्ञानिक 'ई' थे एवं कार्यक्रम की अध्यक्ष के रूप में सुश्री ममता यादव, वैज्ञानिक सी भी उपस्थित थी। कार्यक्रम में सर्वप्रथम दीप

प्रज्जवलन कर कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ तथा सरस्वती वंदना, कु. अपूर्वा सिंहरौल, कु. मधु विश्वकर्मा, कु. शिवांगी शुक्ल, श्रीमती एकता सिंह एवं श्रीमती सुरभि पुरोहित के द्वारा की गयी। कार्यक्रम का संचालन श्री आर.के.अग्रवाल ने किया। कार्यक्रम में सभी सेवानिवृत्त अधिकारी श्री डी.के.दास, श्री योगेश श्रीवास्तव, श्री ए.के. शुक्ला, श्री एस.के.डे एवं श्री एस.के.नायक को सम्मानित किया गया। स्वागत भाषण एवं पूरे पखवाड़े की रुप रेखा की परिकल्पना डॉ. जी.डी.मिश्रा, सम्पर्क हिन्दी अधिकारी एवं मौ.वि. 'अ' ने की। अध्यक्षीय उद्बोधन में सुश्री ममता यादव, वैज्ञानिक सी ने कार्यालय के कार्य तथा अन्य कार्यों में राजभाषा का प्रचार प्रसार तथा उपयोग पर हिन्दी प्रयोग के लिए बल दिया। उन्होंने हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में माननीय गृहमंत्री, भारत सरकार के द्वारा दिये गए सन्देश का वाचन किया। सुश्री ममता यादव, वैज्ञानिक सी एवं उपस्थित सेवानिवृत्त अधिकारियों द्वारा प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार बांटे गये।

हिन्दी पखवाड़ा 2021, मौसम केंद्र भोपाल

मौसम केंद्र रायपुर में हिंदी पखवाड़ा

मौसम केंद्र रायपुर में दिनांक 01 सितम्बर से 14 सितम्बर 2021 तक हिन्दी पखवाड़ा मनाया गया जिसमें पूरे पखवाड़ा के दौरान मौसम केंद्र रायपुर के प्रांगण में राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इसका शुभारंभ 01 सितम्बर 2021 को कार्यालय प्रमुख श्री एच ए के सिंह, वैज्ञानिक 'डी' द्वारा दीप प्रज्जवलन के साथ किया गया। इस अवसर पर राजभाषा अधिकारी श्री एन एस मेहता द्वारा मौसम केंद्र के अधिकारियों और कर्मचारियों को राजभाषा हिन्दी में कार्य करने का अनुदेश देते हुए पखवाड़ा में आयोजित होने

वाले विभिन्न कार्यक्रमों में बढ़-चढ कर हिस्सा लेने का आवाहन किया। पखवाड़ा के दौरान ही 08 सितम्बर और 09 सितम्बर को हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें निम्नलिखित व्याख्याताओं द्वारा राजभाषा हिन्दी में कार्य करने के लिए विशेष जानकारी दी गयी।

व्याख्याताओं के नाम

1. श्री एच.पी.चन्द्रा, मौ वि 'अ' द्वारा दिनांक 08.09.2021 को दोपहर 3:00 से 5:00 बजे तक।

2. श्री अमित अग्रवाल,वै.स.द्वारा दिनांक 09.09.2021 को दोपहर 3:00 से 5:00 बजे तक।

हिन्दी पखवाड़ा के दौरान कार्यालय में हिन्दी अधिकारी व मौसम विज्ञानी श्री एन. एस. मेहता के संचालन में हिन्दी टंकण प्रतियोगिता, हिन्दी में टिप्पणी और मसौदा लेखन, हिन्दी निबंध लेखन, श्रुतिलेख व हिन्दी वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

हिन्दी पखवाड़ा का समापन 14 सितम्बर 2021 को हिन्दी दिवस के आयोजन के साथ राजभाषा अधिकारी श्री एन एस मेहता की अध्यक्षता में किया गया। श्री एन एस मेहता ने पखवाड़ा को सफल बनाने के लिए सभी अधिकारियों और कर्मचारियों का आभार व्यक्त किया तथा राजभाषा हिन्दी में कार्य की अनिवार्यता को समझाया। उन्होंने कहा कि देश की एकता, अखंडता और विकास सिर्फ हिन्दी के द्वारा हो सकती है।

इस अवसर पर अपने समापन भाषण में श्री एन एस मेहता ने हिंदी भाषा के महत्व पर रोशनी डाली। भाषा के महत्व को मनुष्य ने लाखों साल पहले पहचान कर उसका निरंतर विकास किया है। भाषा में ही हमारे भाव, राज्य, वर्ग, जातीयता और प्रांतीयता झलकती है। हिंदी एक भावात्मक भाषा है, जो लोगों के दिलों को आसानी छू लेती है। हिंदी भाषा देश की एकता का सूत्र है। पूरे विश्व में भारतीय संस्कृति का प्रचार करने का श्रेय एक मात्र हिंदी भाषा को जाता है। भाषा की जननी और साहित्य की गरिमा हिंदी आंदोलनों की भी भाषा रही है। एक भाषा के रूप में हिंदी न सिर्फ भारत की पहचान है बल्कि यह हमारे जीवन मूल्यों, संस्कृति एवं संस्कारों की सच्ची संवाहक, संप्रेषक और परिचायक भी है। बहुत सरल, सहज और सुगम भाषा होने के साथ हिंदी विश्व की संभवतः सबसे वैज्ञानिक भाषा है जिसे दुनिया भर में समझने, बोलने और चाहने वाले लोग बहुत बड़ी संख्या में मौजूद हैं। यह विश्व में तीसरी सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा है जो हमारे पारम्परिक ज्ञान, प्राचीन सभ्यता और आधुनिक प्रगति के बीच एक सेतु भी है।

कार्यक्रम का संचालन कार्यालय के मौसम विज्ञानी श्री एच पी चंद्रा, द्वारा किया गया तथा धन्यवाद ज्ञापन श्री एन.एस.मेहता द्वारा दिया गया। हिन्दी पखवाड़ा कार्यक्रम का सम्पादन कु.देहुती ठाकुर,वै.स.द्वारा किया गया।

पखवाड़े में आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओ में प्रथम, द्वितीय, तृतीय और सांत्वना पुरस्कार पाने वाले प्रतिभागियों के नाम इस प्रकार है-

प्रतियोगिता का नाम	**प्रथम**	**द्वितीय**	**तृतीय**	**प्रोत्साहन**
हिंदी टंकण	अमित कुमार गुप्ता	नितेश सोनबेर	संजू देवांगन	एस.टी.लाडे
हिंदी टिप्पणी/पत्राचार	एस.के.अवस्थी	नितीश कुमार	एन.के.सिन्हा	अमित कुमार गुप्ता
हिंदी निबंध	मुकेश साहू	एस.के.अवस्थी	नितीश कुमार	नितेश सोनबेर
हिंदी वाद-विवाद	प्रकाश कुमार चंद्राकर	एच पी चंद्रा	विकाश शर्मा	एन.के.सिन्हा
हिन्दी श्रुतिलेख	अमित कुमार गुप्ता	मुकेश साहू	आदित्य बिसेन	नितेश सोनबेर

मौसम विज्ञान केन्द्र, रायपुर (छ.ग.)
हिन्दी पखवाडा समारोह
01 सितम्बर से 14 सितम्बर, 2021 तक

भारत मौसम विज्ञान विभाग
मौसम विज्ञान केन्द्र, रायपुर (छ.ग.)
Shot on OnePlus
By Aditya

हिन्दी पखवाड़ा 2021, मौसम विज्ञान केंद्र रायपुर

मौसम कार्यालय सागर में हिंदी पखवाड़ा

मौसम विज्ञान कार्यालय, सागर में दिनांक 01 से 14 सितम्बर 2021 तक हिन्दी पखवाड़ा का आयोजन किया गया। कार्यालय प्रभारी (अध्यक्ष) एवं सभी कर्मचारी गण (सदस्य) उपस्थित रहे।

1. श्री संजय बांगडे (मौ. वि. ए)- **अध्यक्ष**

2. श्री आशिष कुमार श्रीवास्तव (वै. सहा.)- **सदस्य**

3. श्री दिलीप सिंह (वै. सहा.)- **सदस्य**

4. श्री वेंकटेश प्रसाद (वै. सहा.)- **सदस्य**

5. श्री अजय कुमार राय (वै. सहा.)- **सदस्य**

6. श्री भगवान लाल (एम.टी.एस.)- **सदस्य**

दिनांक 01/09/2021 को हिन्दी पखवाड़ा के आयोजन के संबंध में सभी कर्मचारी सदस्यों के साथ बैठक की गई। कार्यालय के सभी सदस्यों से दिनांक 01 से 14 सितम्बर 2021 तक हिन्दी पखवाड़ा के अवसर पर राजभाषा हिन्दी से संबंधित विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताओं के आयोजन एवं क्रियान्वयन के संबंध में चर्चा की गई।

प्रतियोगिता का नाम	प्रथम	द्वितीय	तृतीय
हिन्दी निबंध	वेंकटेश प्रसाद	दिलीप सिंह	आशिष कुमार श्रीवास्तव
हिन्दी टायपिंग	संजय बांगड़े	आशिष कुमार श्रीवास्तव	भगवान लाल
हिन्दी काव्य पाठ	अजय कुमार राय	दिलीप सिंह	वेंकटेश प्रसाद

हिन्दी दिवस दिनांक 14/09/2021 के अवसर पर हिन्दी पखवाड़ा के समापन समारोह के उपलक्ष्य में राजभाषा हिन्दी के प्रचार एवं प्रसार के विषय में कार्यालय प्रभारी (अध्यक्ष) ने सभी सदस्यों से चर्चा की तथा कार्यालय के सभी सदस्यों को राजभाषा हिन्दी का प्रयोग करने की आवश्यक सलाह दी गई।

हिंदी पखवाड़ा 2021, मौसम कार्यालय सागर

मौसम कार्यालय जबलपुर में हिंदी पखवाड़ा

मौसम कार्यालय जबलपुर में दिनांक 1/9/2021 से 14/9/2021 तक हिन्दी पखवाड़ा मनाया गया। दिनांक 14/9/2021 को हिन्दी दिवस मनाया गया। इस दौरान कार्यालय में विभिन्न प्रतियोगिताओ का आयोजन किया गया। शुद्धलेखन, हिन्दी से अंग्रेजी अनुवाद, अंग्रेजी से हिन्दी अनुवाद, भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। भाषण प्रतियोगिता में सभी ने विशेष रुचि दिखाई और अपने विचार व्यक्त किए।

इस अवसर पर प्रभारी अधिकारी श्री बीजू जॉन जेकब ने कर्मचारियों को हिन्दी में किए गए कार्य पर बधाई दी साथ ही आग्रह किया की अब शत प्रतिशत कार्य हिन्दी में करने का संकल्प लेना है। सभी कर्मचारियों ने बहुत उमंग उत्साह से भाग लिया और हिन्दी में कार्य करने का संकल्प लिया। अंत में प्रभारी अधिकारी ने विजयी प्रतिभागियों को पुरस्कार दिया और हिन्दी सचिव श्री मुकुल त्रिपाठी ने सभी का आभार व्यक्त किया।

हिन्दी पखवाड़ा एवं हिन्दी दिवस पर श्री बीजू जॉन जेकब, श्री मुकुल त्रिपाठी, श्री आलोक गुप्ता, श्री चैतन्य धोपटे, श्री रोहन पाहवा, श्री मयंक पांडे, श्री राहुल जैन, श्री बी एम बड़ेवा एवं रामचरण की उपस्थिति रही।

हिंदी पखवाड़ा 2021, मौसम कार्यालय जबलपुर

मौसम कार्यालय अम्बिकापुर में हिंदी पखवाड़ा

इस वर्ष भी अपनी राष्ट्र भाषा 'हिंदी' को संवर्धित एवं कार्यालयीन व्यवहार में अंगीकृत करने के प्रयोजन से, पूर्व वर्षों की भांति ही स्थानीय कार्यालय में दिनांक 01.09.2021 से 15.09.2021 तक विविध कार्यक्रमों एवं प्रतियोगिताओं के माध्यम से 'हिंदी पखवाड़ा' का समारोह पूर्वक आयोजन किया गया। दिनांक 01.09.2021 को कार्यालय के सभी कर्मचारी / अधिकारियों की उपस्थिति में प्रभारी अधिकारी श्री एस.के.मंडल जी ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया। कार्यक्रम के उद्घाटन पश्चात मौसम विज्ञानी ए.एम.भट्ट ने एक पखवाड़े तक चलने वाली इस आयोजन की विस्तृत रूपरेखा से सभी को अवगत कराया। इस आयोजन अवधि में हिंदी भाषा आधारित विभिन्न प्रतियोगिताओं के साथ नियमित रूप से अपने शासकीय कार्यों में आने वाली कठिनाइयों एवं उसके समाधान पर भी चर्चाएँ की गयीं। हिंदी भाषागत प्रतियोगिताओं में प्रस्तावित विषय पर निबन्ध-लेखन, श्रुति-लेखन, स्वरचित कविता/कहानी पाठ एवं वाद विवाद आदि विधाओं को समाहित किया गया तथा प्रतिभागियों को पुरस्कृत भी किया गया। इस आयोजन की प्रतियोगिताएं एवं पुरस्कृत प्रतिभागियों के विवरण निम्नानुसार है-

1. हिंदी लेखन प्रतियोगिता : विषय - भारत में उद्योग का महत्व
   निर्णायक का दायित्व- श्री मनीष कुमार
   प्रथम- श्री ए.एम.भट्ट,
   द्वितीय- श्री एस.के.मंडल,
   तृतीय- श्री एन.आर.पात्रे,
   सांत्वना- श्री बी.लकड़ा
2. श्रुतिलेख प्रतियोगिता- निर्णायक का दायित्व- श्री ए.एम.भट्ट
   प्रथम- श्री मनीष कुमार,
   द्वितीय- श्री एस.के.मंडल,
   तृतीय- श्री एन.आर.पात्रे,
   सांत्वना- श्री बी.लकड़ा
3. स्वरचित कविता पाठ - निर्णायक का दायित्व- श्री एस.के.मंडल
   प्रथम- श्री ए.एम.भट्ट

4. स्वरचित कहानी पाठ - निर्णायक का दायित्व- श्री एस.के.मंडल
   प्रथम- श्री ए.एम.भट्ट
5. वाद-विवाद प्रतियोगिता
   विषय- “हिंदी भाषा में विदेशी भाषा के शब्दों का प्रयोग होना चाहिए/ नहीं होना चाहिए”
   निर्णायक का दायित्व - श्री बी.लकड़ा
   पक्ष प्रतिभागी- श्री ए.एम.भट्ट, श्री मनीष कुमार- प्रथम
   विपक्ष प्रतिभागी- श्री एस.के.मंडल, श्री एन.आर.पात्रे- द्वितीय

इन विविध प्रतियोगिताओं के बाद दिनांक 14.09.2021 को ‘विश्व हिंदी दिवस’ के अवसर पर श्री एस.के.मंडल तथा श्री ए.एम.भट्ट ने हिंदी भाषा की विभिन्न आयामों पर अपना अपना वक्तव्य देते हुए मौसम कार्यालय अम्बिकापुर के सभी प्रकार के शासकीय पत्र-व्यवहार, आवेदन, टिप्पण आदि को शत-प्रतिशत हिंदी में करने का आग्रह किया। दिनांक 15.09.2021 को प्रभारी अधिकारी श्री एस.के.मंडल जी द्वारा प्रतियोगिताओं के परिणामों की घोषणा एवं पारितोषिक वितरण पश्चात इस वर्ष के हिंदी पखवाड़े के आयोजन के समापन की घोषणा की गयी।

मौसम कार्यालय अम्बिकापुर में हिंदी पखवाड़ा

मौसम कार्यालय ग्वालियर में हिंदी पखवाड़ा

हिंदी पखवाड़े के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिसमे सभी स्टाफ सदस्यों ने पूर्ण सहयोग से भाग लिया जिसका परिणाम इस प्रकार रहा :

प्रतियोगिता का नाम	प्रथम	द्वितीय	तृतीय	चतुर्थ
निबंध प्रतियोगिता	श्री प्रसून पुरवार	श्री रितेश शर्मा	श्री जयदीप शर्मा	श्री हरिचरण लाल
शुद्ध लेखन	श्री आकाश कुमार	श्री जयदीप शर्मा	श्री रितेश शर्मा	श्री अंशुमन श्रीवास्तव
वाद विवाद प्रतियोगिता	श्री रितेश शर्मा	श्री जयदीप शर्मा	श्री प्रसून पुरवार	श्री आकाश कुमार
मसौदा लेखन	श्री रितेश शर्मा	श्री प्रसून पुरवार	श्री अंशुमन श्रीवास्तव	श्री जयदीप शर्मा
कविता पाठ	श्री रितेश शर्मा	श्री सी एस रघुवंशी	श्री जयदीप शर्मा	श्री अंशुमन श्रीवास्तव

हिंदी पखवाड़ा 2021, मौसम कार्यालय ग्वालियर

मौसम कार्यालय इंदौर में हिंदी पखवाड़ा

मौसम कार्यालय इंदौर मै दिनांक 01.09.2021 से 14.09.2021 तक हिंदी पखवाड़ा समारोह पूर्वक मनाया गया, जिसमे कार्यालय के सभी अधिकारी एवं कर्मचारियों ने कार्यक्रम के उद्घाटन, समापन एवं प्रतियोगिता में सकारात्मक भाग लेकर आयोजन की सफलता मै योगदान दिया। हिंदी पखवाड़ा का समापन एवं पुरस्कार वितरण 14.09.2021 को किया गया, कार्यक्रम के प्रश्चात स्वल्पाहार की व्यवस्था की गई।

हिंदी पखवाड़े के दौरान हिंदी टंकण, वाद-विवाद, श्रुतिलेखन, हिंदी में तत्कालिक भाषण प्रतियोगिताएं आयोजित की गई, एवं विजेताओं को नगद पुरस्कार दिए गए।

इस प्रतियोगिता का परिणाम इस प्रकार रहा:-

क्र.	प्रतियोगिताएं	दिनांक	प्रथम रु. 400/-	द्वितीय रु. 300/-	तृतीय रु. 200/-
1	**हिंदी टंकण**	06.09.21	विवेक छलोत्रे	अमितेश यादव	पी.के.गुप्ता
2	**वाद-विवाद**	09.09.21	पी.के.गुप्ता	मुकेश यादव	विवेक छलोत्रे
3	**श्रुतलेखन**	11.09.21	अमितेश यादव	विवेक छलोत्रे	पी.के.गुप्ता
4	**तत्कालिक भाषण**	13.09.21	मुकेश यादव	पी.के.गुप्ता	अमितेश यादव

पखवाड़ा 2021, मौसम कार्यालय इंदौर

विशेष ख़बर - राजभाषायी ई-निरीक्षण

- दिनांक 12.10.2021 को प्रादेशिक मौसम केंद्र नागपुर एवं मुख्यालय द्वारा मौ.के.भोपाल और रायपुर का ई–निरीक्षण किया गया जिसमें सहायक निदेशक (रा.भा.) सरिता जोशी और कार्यालय प्रमुख श्री एम.एल.साहू, राजभाषा संपर्क अधिकारी श्री पी.एस.चिंचोले और वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी श्रीमती शांता उन्नीकृष्णन उपस्थित रहे एवं आवश्यक दिशा निर्देश दिए।
- दिनांक 21.12.2021 को मौसम कार्यालय ग्वालियर, मौ.का.जबलपुर और मौ.का.जगदलपुर का राजभाषायी ई- निरीक्षण श्रीमती शांता उन्नीकृष्णन,वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी (रा.भा.) द्वारा किया गया जिसमें कार्यभारी उप महानिदेशक श्री जी.एस.नगराले और राजभाषा संपर्क अधिकारी श्री पी. एस. चिंचोले शामिल रहे।

-

ऑनलाइन कॉन्फ्रेंसिंग

- दिनांक 11.01.2021 को मौसम कार्यालय इंदौर, मौ.का.सागर और मौ.का.अकोला का राजभाषायी ई- निरीक्षण श्रीमती शांता उन्नीकृष्णन, वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी (रा.भा.) द्वारा किया गया जिसमें कार्यालय प्रमुख श्री एम.एल.साहू और राजभाषा संपर्क अधिकारी श्री पी.एस.चिंचोले उपस्थित रहे और आवश्यक दिशा निर्देश दिए।
- दिनांक 21.02.2022 को मौसम कार्यालय बिलासपुर और मौ.का.अंबिकापुर का राजभाषायी ई- निरीक्षण श्रीमती शांता उन्नीकृष्णन, वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी (रा.भा.) द्वारा किया गया जिसमें कार्यालय प्रमुख श्री एम.एल.साहू और राजभाषा संपर्क अधिकारी श्री पी.एस.चिंचोले उपस्थित रहे और आवश्यक दिशा निर्देश दिए।

आज़ादी का अमृत महोत्सव

आज़ादी के अमृत महोत्सव पर आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम

गणतंत्र दिवस - २०२१

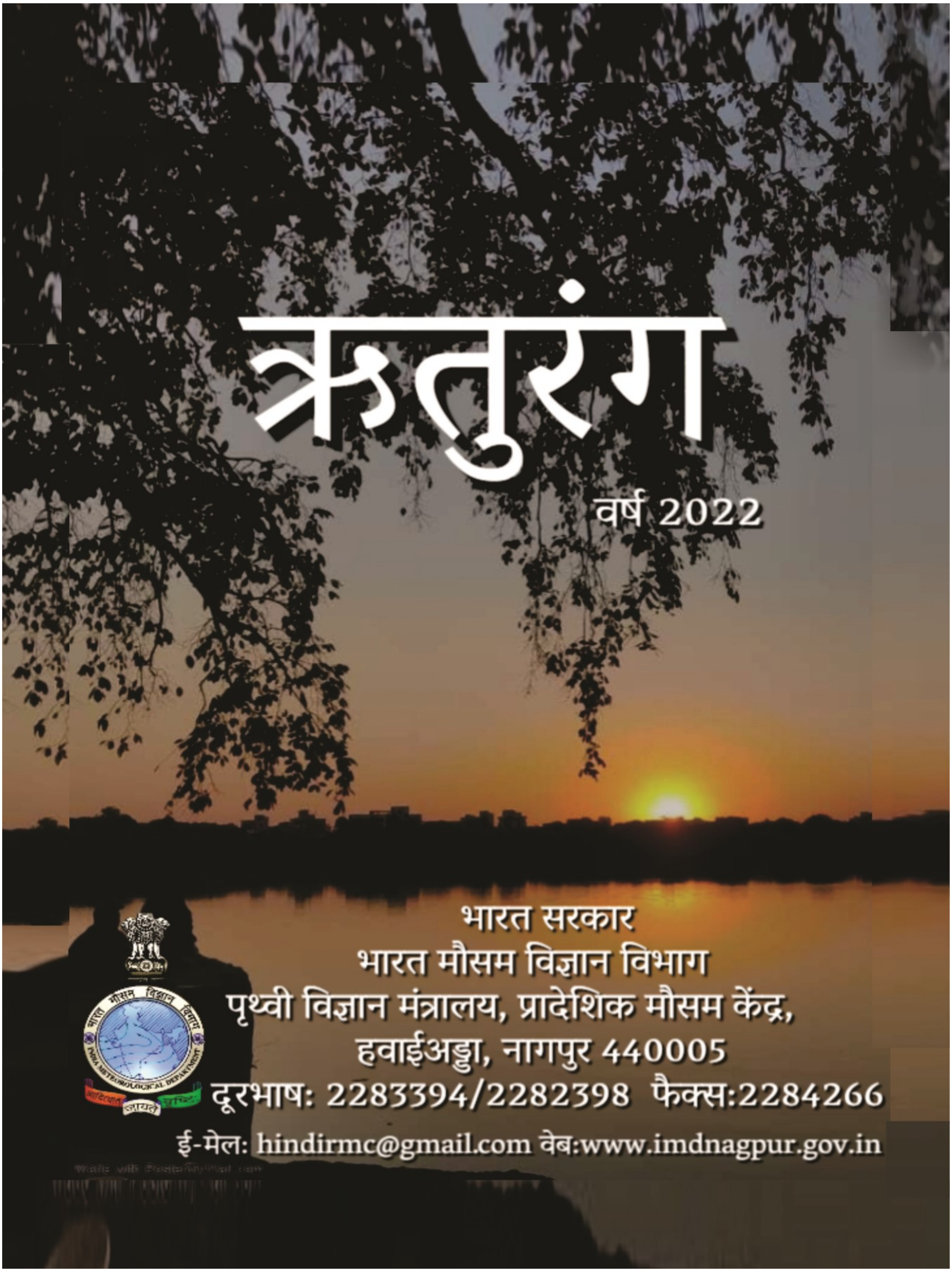
ऋतुरंग
वर्ष 2022
भारत सरकार
भारत मौसम विज्ञान विभाग
पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय, प्रादेशिक मौसम केंद्र,
हवाईअड्डा, नागपुर 440005
दूरभाष: 2283394/2282398 फैक्स:2284266
ई-मेल: hindirmc@gmail.com वेब:www.imdnagpur.gov.in